

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_186591

UNIVERSAL
LIBRARY

Osmania University Library

Accession No.

book should be returned on or before the date last
ow.

‘गीता और .कुरान

—

सुन्दरलाल

मोल ढाई रुपया

सुन्दरलाल, सेक्रेटरी हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी, ने
३३ बाई का बाग, इलाहाबाद, से निकाली.

यह किताब उर्दू और नागरी दोनों लिखावटों में
मिल सकती है.

बिशंभरनाथ ने विश्ववाणी प्रेस, इलाहाबाद में छापी.

हिन्दू कहैं राम मोहि प्यारा ,
तुरुक कहैं रहिमाना,
आपस में दोउ लरि लरि मूए ,
सरस न काहू जाना.

—कबीर

गीता और कुरान

क्या कहाँ		सफ़ा
१—दुनिया के सब मजहब एक हैं	...	१
गीता		
२—गीता	...	६७
३—गीता धर्म	...	१११
४—गीता का सार	...	१५८
कुरान		
५—कुरान	...	१६६
६—कुरान और उसकी तालीम	...	१८३
७—कुछ और—औरतों के बारे में, जिहाद, आक्केबत, आखेरत, जन्नत और जहन्नम	...	२५३

दुनिया के सब मजहब एक हैं

१

जब से दुनिया बनी है, या कम से कम जब से इस धरती पर आदमी का रहना शुरू हुआ है, तब से हर आदमी का दिल दो अलग अलग तरफ को खिंचता रहा है, कभी खुद गरजी की तरफ कभी दूसरों की भलाई की तरफ, कभी स्वार्थ की तरफ कभी परोपकार की तरफ। बुराई और भलाई, बदी और नेकी, पाप और पुण्य, गुनाह और सवाब इन दोनों रास्तों के ही अलग अलग नाम हैं। कोई आदमी ऐसा नहीं है जिसके दिल पर ये दोनों कभी कभी अपना असर न डालते हों। ये दोनों अपनी अपनी तरफ आदमी के दिल को बराबर खींचते रहते हैं, और यही खींचातानी, यही अन्दर की कशमकश दुनिया की सबसे बड़ी जंग या दुनिया का सबसे बड़ा संग्राम है। इस संग्राम में खुद गरजी या स्वार्थ, बदी या बुराई, को अपने अन्दर से न मिटा सकना आदमी की सबसे बड़ी हार, और उनसे अपने आपको پاک साफ कर सकना सबसे बड़ी जीत होती है। इसी तरह दूसरों की भलाई यानी परोपकार या

नेकी को अपनी ज़िन्दगी में जगह देना जीत है और जगह न दे सकना सबसे बड़ी हार। यह जीत इस लिये सबसे बड़ी जीत समझी जाती है कि इसमें हर आदमी की और तमाम इंसानी दुनिया की भलाई है। इसमें सारी दुनिया की तरक्की और सुख चैन के रास्ते खुलते हैं। और यह हार इस लिये सब से बड़ी हार मानी जाती है क्योंकि इस में आदमी को ज्यादा से ज्यादा मुसीबतें मेलनी पड़ती हैं, और यही इंसानी दुनिया के बड़े से बड़े दुखों का और बरबादी का असली सबब है।

इस जीत में दुनिया की भलाई और इस हार में दुनिया के दुखों और बरबादी की जड़ इसलिये है कि अगर हम आदमी की ज़िन्दगी पर गहरी नज़र डालें तो साफ़ दिखाई दे जाता है कि दुनिया के आदमी सब एक दूसरे से ऐसे ही बंधे और जकड़े हुए हैं, जैसे हमारे बदन के अलग अलग हिस्से, हाथ, पैर, आँख, नाक और कान एक दूसरे से।

इसी तरह दुनिया की सब चीज़ें, और खास कर आदमियों के सब गिरोह, आपस में एक दूसरे से ऐसे अटूट और गहरे रिश्तों में बंधे हुए हैं कि इनका असली फ़ायदा और नुक़सान अलग अलग नहीं किया जा सकता। हम सब मिलकर एक कुनबे या एक कुटुम्ब की तरह हैं जिसकी बुनियादें मेल मुहब्बत, एक दूसरे के साथ हमदर्दी, और एक दूसरे की सेवा पर क़ायम हैं, और जिसको सबसे बड़ा नुक़सान एक दूसरे से नफ़रत करने और लड़ने से पहुँचता है।

आदमी के अन्दर की जिस लड़ाई का हमने ऊपर खिकर किया है, उसमें जीत उसी दरजे तक होती है जिस दरजे तक आदमी इस सच्चाई को समझ लेता है। आदमी जितना जितना इस बात को समझता जाता है, उतना उतना ही उसे दिखाई देने लगता है कि दूसरों के भले में ही उसका अपना असली भला है, और दूसरों की बरबादी में उसकी अपनी बरबादी है।

इस तरह धीरे धीरे आदमी के अन्दर से अपने और पराये का भेद कम होता जाता है। या यूँ कहिये कि उसके अपनेपन का दायरा बढ़ता और फैलता जाता है, और परायेपन का खयाल घटता और सुकड़ता जाता है। उसके दिल में एक एक करके अपने गाँव, अपने शहर, अपने देश, और बढ़ते बढ़ते सारी धरती के आदमियों के साथ अपनापन बैठने और जमने लगता है। उसे दूसरों के भले में अपनी भलाई, दूसरों की बरबादी में अपनी बरबादी, दूसरों के सुख में अपना सुख और दूसरों के दुख में अपना दुख दिखाई देने लगता है। दुनिया के सब देशों में सब आदमियों के इस बात को समझ लेने पर ही दुनिया भर की सच्ची शान्ति सच्चे अमन और सच्चे सुख का दावे मदार है।

आदमी के अन्दर इस समझ के पैदा होने में बहुत देर लगती है, खासकर कौमों और मुल्कों में इस खयाल का पैदा होना और बढ़ना बहुत ही मुशकिल होता है। इसलिये यह खींचातानी मिटने नहीं पाती और इसके जारी रहने से

दुनिया को बड़े बड़े नुकसान पहुँचते रहते हैं। जब जब यह खींचातानी बढ़ जाती है, और दुनिया के लोगों में नासमझी खुद गरजी और आपा धापी का जोर होता है, तब तब बे-अमनी, बेचैनी और वरबादी बढ़ती है, और जब जब एक दूसरे से प्रेम मेल मिलाप और सबके भले की इच्छा जोर पकड़ती है तब तब अमन, चैन और खुशहाली चारों तरफ नजर आने लगती हैं। जितना जितना दुनिया के अन्दर अपने, और पराये का फरक बढ़ता जाता है, गिरोहबन्दी या गुटबन्दी बढ़ती है, उतना उतना ही समाज की आत्मा टुकड़े टुकड़े होने लगती है, भगड़े बढ़ते हैं, और दुख, गरीबी और वरबादी फैलती है। दूसरे लफ्जों में यह कहा जा सकता है कि बाहर के सब लड़ाई भगड़े आदमी की इस नासमझी का ही नतीजा और अन्दर की इस खींचातानी की ही परछाई होते हैं।

इस नासमझी की तरफ लोगों का ध्यान दिलाने और उन्हें इस खींचा तानी के दूर करने के रास्ते बताने का काम सब से ज्यादा धर्म या मजहबों ने किया है। 'धर्म' शब्द संस्कृत 'धृ' से बना है जिसके मानी संभाले रखना या मिलाए रखना है। जो चीज़ सब आदमियों को संभाले या मिलाये रखे और उन्हें टुकड़े टुकड़े होने से रोके, उसी का नाम धर्म है। संस्कृत की किताबों में जगह जगह धर्म शब्द का यही अर्थ बताया गया है। महाभारत में लिखा है—

“धर्म शब्द धारण करने से सम्बन्ध रखता, है जिसका अर्थ संभाले रखना या मिलाये रखना है। धर्म से सब लोग संभले और मिले

रहते हैं। इसलिये जिस काम से सब लोग मिले रहें वही सचमुच धर्म है। सब के भले के लिये धर्म का बयान किया गया है। जिस काम से सबका भला हो असल में वही धर्म है। किसी जानदार को दुख या नुक़सान न पहुँचे इसलिये धर्म का बयान किया गया है। जिस काम से किसीको नुक़सान न पहुँचे वही सचमुच धर्म है। जो आदमी हमेशा सब का भला चाहता है और जो सबके भले के कामों में तन, मन और वचन से पूरी तरह लगा रहता है, ऐ जाजले ! वही धर्म का जानने वाला है।”

‘मज़हब’ लफ़्ज़ के मानी ‘रास्ता’ है। जो रास्ता सबकी भलाई का रास्ता है वही असली मज़हब है। कुरान में लिखा है—

“सचमुच तुम सब इनसानों की एक ही क़ौम है, और एक ही अल्लाह तुम सबका रब है। इसलिए उसी एक की पूजा करो। लोगों ने काट काट कर अपने टुकड़े (अलग अलग गिरोह) बना रखे हैं, पर सबको एक ही अल्लाह के पास जाना है।” (अम्बिया: ६२, ६३)

एक बार मुहम्मद साहब से किसी ने पूछा कि—“ईमान क्या है ?” उन्होंने जवाब दिया—“सब्र करना और दूसरों की भलाई करना।” (अहमद)

एक और जगह इसलाम के पैग़म्बर ने कहा है—

“अगर मोमिन (ईमान वाला) होना चाहता है तो अपने पड़ोसी का भला कर और अगर मुसलिम होना चाहता है तो जो कुछ अपने लिये अच्छा समझता है वही सबके लिये अच्छा समझ।” (तिरमिज़ी)

मुहम्मद साहब की एक और कहावत है कि—

“सब मखलूक (सृष्टि) अल्लाह का कुनवा हैं । और उन सब में अल्लाह को सब से प्यारा वह है जो अल्लाह के इस कुनवे का भला करता है।” (बेहक्री)

पंथ, पथ, मार्ग और जापानी और चीनी ज़बानों में तो या दो के भी वही माइने हैं जो मज़हब के । अगरेज़ी लफ़्ज़ रिलीजन जिस लफ़्ज़ से निकला है उसके माइने बांधना हैं । जो चीज़ सब लोगों को एक दूसरे से बांधे या मिलाए रखे वही रिलीजन है ।

इस तरह धर्म, मज़हब या रिलीजन की सबसे बड़ी गरज़ और इसका सबसे बड़ा काम यही है कि दुनिया के लोगों को आपस की फूट, लड़ाई भगड़े और फ़साद से बचाए, उन्हें एक कुनवेवालों की तरह मुहब्बत की डोर में बांधे और मिलाये रखे, और उन्हें एक दूसरे से बर्ताव करने, रहने सहने और जीने का वह ढंग, वह रास्ता, वह असूल और वह नियम बताये जिससे सबका भला हो । ये नियम या असूल नेकी, सदा चार या इखलाक़ के वह जाने बूझे असूल हैं जिन पर दुनिया के सब मज़हबों और उनके क़ायम करने या चलाने वालों ने शुरू से आज तक एक सा जोर दिया है ।

लोगों को ज़िन्दगी के इन सीधे सादे बुनियादी असूलों पर चलाये रखने के लिए एक सबसे बड़ा तरीका, जिससे दुनिया के मज़हबों ने काम लिया है, यह है कि एक ईश्वर, खुदा या गाड में यक़ीन किया जाय जो सबका ईश्वर है । इस इतने बड़े

संसार, इस दुनिया का कोई न कोई चलाने वाला जरूर है। कोई न कोई सब से बड़ी ताकत है जिस से हम सब का नाता है और जिसकी तरफ हम सब बड़े चले जा रहे हैं। जिस तरह हमारी धरती की और इसके बाहर भी दूर दूर तक की सारी गरमी और रोशनी इस सूरज से आती है, उसी तरह हमारी जान, हमारी सब चेतन शक्तियों, हमारी रूह या आत्मा के अन्दर की सब अचरज भरी ताकतों का भी कहीं न कहीं कोई खजाना है जहाँ से इन सबका निकास है। हमारी अपनी आत्मा (रूह) का छोटापन, उसकी कमजोरी और उसकी बेबसी ही हमें उस परम-आत्मा, उस रूहे-कुल की भरपूर ताकतों की खबर देती है। सब मज़हबों ने माना है कि ईश्वर अल्लाह आदमी की छोटी सी अकल और उसकी समझ से कहीं ऊपर और बाहर है। साथ ही हर मज़हब के योगियों, सूफियों, संतों, वलियों, ऋषियों और नवियों ने इस मिट्टी के जिस्म और इस छोटी सी अकल की हदों को पार करके उस बेहद और बेअन्त की थोड़ी बहुत झलक पाने का दावा किया है। बौद्ध मज़हब, या ऐसे ही और मज़हब, जिनकी बावत यह समझा जाता है कि वह इस दुनिया का कोई बनाने वाला नहीं मानते, वह भी सिद्ध (कामिल), अरहंत (काबिल), या बुद्ध (रोशन या अकले कुल) किसी न किसी रूप में सब हदों और कमजोरियों से ऊपर पूर्ण आत्मा, परमआत्मा, सर्व आत्मा, या रूहे कुल को मानते हैं, उस पूरेपन या कमाल तक पहुँचने की कोशिश करना आदमी का धर्म और उसका फ़र्ज़ बताते हैं, और वहाँ तक

पहुँचने के लिये नेकी, सदाचार और सब आदमियों के साथ भाई चारा रखने को सबसे ज्यादा जरूरी बताते हैं।

नतीजा यह है कि हम चाहे उसे किसी नाम से पुकारें, भगवान, ईश्वर, परमात्मा, खुदा, अल्लाह, या गाड उसी एक परमेश्वर को मानना, उसे सबका एक बराबर ईश्वर या रब्ब मानना, उसके बन्दों की हैसियत से सब आदमियों को अपना भाई मानना, और सबके साथ मेल मिलाप, मुहब्बत और नेकी का बरताव करना, यही दुनिया के सब धर्म और मजहबों का निचोड़ है।

इसमें भी शक नहीं कि दुनिया के सब बड़े बड़े मजहबों ने इस धरती के करोड़ों आदमियों को सैकड़ों और हजारों बरस तक ठीक रास्ते पर रक्खा है। आज तक करोड़ों आदमियों के दिलों और दिमागों को, उनकी रूहों, उनकी आत्माओं को, धर्म और मजहब से बढ़कर सुख, शान्ति, और सकून देने वाली कोई दूसरी चीज़ नहीं हुई। आदमी आदमी में प्रेम पैदा करने वाली भी आज तक धर्म या मजहब से बढ़कर कोई ताकत दिखाई नहीं देती।

इस वक्त सारी दुनिया में सैकड़ों छोटे बड़े फ़िरक़े, धर्म, मजहब, पन्थ और मत मौजूद हैं। इन सब में छै खास माने जाते हैं—हिन्दू धर्म, यहूदी धर्म, ज़रतुश्ती यानी पारसी धर्म, बौद्ध धर्म, ईसाई धर्म, और इस्लाम। इनमें जहाँ तक पता चलता है हिन्दू धर्म सबसे पुराना और इस्लाम सबसे हाल का है। हिन्दू धर्म के मानने वाले हिन्दुस्तान को छोड़कर बाक़ी दुनिया में

नहीं के बराबर है। दुनिया भर में सब से ज्यादा तादाद ईसाइयों और बौद्धों की है, और सबसे कम यहूदियों और पारसियों की। इसलाम को जन्म लिये हुए साढ़े तेरह सौ साल के करीब हुए। इसके मानने वालों की तादाद आज सारी दुनिया में करीब तीस करोड़ है। इन छै बड़े बड़े मज़हबों की छै खास किताबें हैं। हिन्दुओं की ऋग्वेद, यहूदियों की तौरात, पारसियों की जिन्द अवस्ता, बौद्धों की त्रिपिटक, ईसाइयों की इंजील और मुसलमानों की कुरान।

इन छै पाक किताबों को अगर बराबर बराबर रखकर प्रेम से पढ़ा जावे तो इन सबकी बताई बुनियादी बातें एक ही नज़र आती हैं। कहीं कहीं तो इनकी कथाएँ, कहानियाँ, रिवायतें और फ़िकरे के फ़िकरे मिलते चले जाते हैं। इन्हें इस तरह मिलाकर पढ़नेवाले को इस बात में ज़रा सा भी शक नहीं रह सकता कि यह सब मज़हब एक ही जड़ से निकले हैं, या यूँ कहिये कि एक ही बड़े पेड़ की दूर दूर तक फैली हुई टहनियाँ हैं, जिनमें से हर टहनी अपनी अपनी जगह और अपने अपने ज़माने में सचाई की खोज करनेवाली करोड़ों दुखी आत्माओं को शान्ति, साया और ठंडक देती रही है, और अब भी दे रही है। ऊपर की छै किताबों में ऋग्वेद सबसे पुरानी किताब है। और कुरान सबसे हाल की। फिर भी कुरान की सूरत 'अन्नूर' में खुदा की कुदरत और उसकी हम्द (स्तुति) को पढ़कर फ़ौरन ऋग्वेद की कुछ ऋचाएँ याद आने लगती हैं जिनमें ईश्वर की स्तुति की गई है। कुरान में ईश्वर का सबसे बड़ा

नाम 'अल्लाह' है। ऋग्वेद में ईश्वर के नामों में से एक नाम 'इला' है जो संस्कृत में 'इल्' धातु से निकला है, जिसके माइने स्तुति करना या पूजा करना है। ऋग्वेद का एक पूरा सूक्त इला के नाम पर है। आज से कम से कम छै हजार बरस पहले की सुमेरी तहजीब, और वहाँ की बाली में भी खुदा को 'ईल' कहते थे। उसी से पुराने शहर 'बाबिल' (बाब + ईल = अल्लाह का दरवाजा) का नाम पड़ा। यहूदियों की तौरात और पारसियों की जिन्द अवस्ता में भी यह नाम जगह जगह मिलता है। हजारत ईसा जब सूली पर चढ़ाये गये तो कहा जाता है कि उनके मुँह से "इलोही ! इलोही !" (ऐ मेरे ईश्वर ! ऐ मेरे ईश्वर !) के शब्द निकले थे। मौलाना अबुल कलाम आजाद ने अपनी किताब 'तरजुमानुल कुरान' में दिखलाया है कि कलदानी, सुरियानी, इबरानी और सब पुरानों जवानों में ईश्वर का नाम इससे मिलता जुलता ही लिया जाता था, जैसे कलदानी में 'इलाहिया', इबरानी में 'इलोह', वगैरह। जाहिर है कि अल्लाह नाम किसी न किसी शकल में ऋग्वेद के जमाने से लेकर आज तक बहुत से मुलकों और जवानों में चला आ रहा है। ऐसे ही कुरान का 'रब्ब' ऋग्वेद का 'सारी दुनिया को पालने वाला' 'रै' है। कुरान की सबसे शुरू की दुआ 'एह देनस्सेरातल मुस्तक्रीम' (हमें सीधे रास्ते पर ले चल) और ऋग्वेद की ऋचा 'अग्नेनय सुपथा' दोनों एक दूसरे का लफ्जी तरजुमा हैं। वेदों का 'एकमेवाद्वितीयम्' और इसलाम का 'वहदहू लाशरीकलहू' दोनों के ठीक एक ही माइने हैं—वह एक है उसका कोई और

साभी नहीं है।

यही हाल दूसरे सब मज़हबों की किताबों का है। कुरान का 'ला इलाह इल्लाहू' या कलम-ए-तौहीद के लफ्ज़ 'ला इलाह इल्लल्लाह' और जिन्द अवस्ता का, 'नेस्त एज़द मगर यज़दान' दोनों एक दूसरे के लफ्ज़ी तरजुमे हैं। कुरान में 'बिसमिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम' ठीक एक सौ चौदह दफ़ा आया है, जिसका मतलब है—उस अल्लाह के नाम के साथ जो रहम करने वाला और दयावान है। ईरान के ज़रतुस्ती विद्वान अपनी किताबों को 'बनाम यज़दान बख़्शिश गिरदादार' से शुरू करते थे। दोनों का ठीक एक ही मतलब है।

अब हम यह दिखाना चाहते हैं कि इन बड़े बड़े मज़हबों के क़ायम करनेवाले अपने से पहले वाले और अपने से बाद आनेवाले मज़हबों के बारे में क्या ख़याल रखते थे। इन ख़यालों पर नज़र डालने से हमें यह अचरज होता है कि गो इन सब महापुरुषों और नबियों ने इतने साफ़ साफ़ लफ्ज़ों में और इतने जोर के साथ हर मज़हब की सच्चाई और ऊँचाई का ऐलान किया है फिर भी उनके पीछे चलनेवालों के कान तक उनकी आवाज़ें नहीं पहुँच पातीं। नीचे लिखी हुई मिसालें हमारे मतलब को पूरी तरह साफ़ कर देंगी।

श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है—

“जो जिस रास्ते से चल कर ईश्वर तक पहुँचने की कोशिश करते हैं ईश्वर उन्हें उसी रास्ते से मिलते हैं। लोग अलग अलग तरफ़ से चल कर भी उसी तरह एक ईश्वर तक पहुँचते हैं जिस तरह एक

गोल चक्कर के चारों तरफ़ खड़े आदमी अलग अलग तरफ़ को चलकर एक केन्द्र (मरकज़) तक पहुँचते हैं ।” (४-११)

पारसी मज़हब के क़ायम करने वाले महात्मा ज़रतुश्त ने कहा है कि—

“हम दुनिया के अब से पहले के मज़हबों को मानते हैं । वह सब नेकी की तरफ़ ले जाने वाले थे ।” (यसना, १६-३)

चीन के ज्यादातर लोग शुरु से हिन्दुस्तान के महात्मा बुद्ध, और चीन के महात्मा लाओत्ज़े और महात्मा किंग फूत्ज़े तीनों को एक बराबर अपना गुरु पीर और रहबर मानते हैं । किंग फूत्ज़े और ला ओत्ज़े दोनों चीन के दो बड़े बड़े मज़हबों के क़ायम करने वाले थे । किंग फूत्ज़े ने कहा है कि—

“मैं सिर्फ़ पिल्लूली बातों को आगे चला रहा हूँ, मैं कोई नई चीज़ नहीं गढ़ सकता ।”

बुद्ध ने कहा है कि—

“बहुत से बुद्ध मुझसे पहले आए हैं, और बहुत से मेरे बाद आवेंगे । मैं पुरानी रोशनी को ही फिर से पैला रहा हूँ ।”

बौद्ध मज़हब और जैन मज़हब दोनों के माननेवाले मानते हैं कि शुरु से अब तक बराबर बुद्ध और तीर्थंकर (हादी, रास्ता बताने वाले) होते रहे हैं जाँ दुनिया के लोगों को उसी एक सच्चाई, एक धर्म का रास्ता बताते रहे हैं, और ऐसे ही आगे भी होते रहेंगे ।

इंजील में लिखा है—

“क्या कोई ऐसी बात है जिसके बारे में कहा जा सके कि देखो

यह नई बात है। यह सब हमसे पहले के पुराने ज़माने से चला आ रहा है... दुनिया में कोई चीज़ नई नहीं है।” (तौरात, किताबवाएज़)

हज़रत ईसा मसीह ने कहा है कि—

“मैं पुराने धर्म और पुराने नबियों के उपदेशों को नष्ट या बरबाद करने के लिये नहीं आया, बल्कि मैं उन्हें पूरा करने के लिये आया हूँ।”

कुरान में लिखा है कि—

“सच मुच हमने (अल्लाह ने) हर क्रौम में रसूल पैदा किये हैं, जिन्होंने लोगों को यही नसीहत की है कि अल्लाह की इबादत करो और बुराई से बचे रहो।” (नहल-३६) “सचमुच तुम्हारे यह सब अलग अलग मज़हब या फ़िरके, एक ही मज़हब और एक ही फ़िरका है, और तुम सबका एक ही रब है उसीका ध्यान रखो। लेकिन लोगों ने अपने दीन के आपस में टुकड़े टुकड़े कर डाले और हर ग़िरोह जो कुछ उसके अपने पास है उसी में फूला है। यह बड़ी नासमझी है।” (मोमेनून ३-५१-५४) “सचमुच जो लोग अल्लाह और उसके सब रसूलों को नहीं मानते और जो अल्लाह और उसके रसूलों में फ़रक करना चाहते हैं और कहते हैं कि हम कुछ रसूलों को मानते हैं और कुछ को नहीं मानते, और उनके बीच से अपना ही एक अलग रास्ता बना लेना चाहते हैं, सचमुच ये ही लोग सच्चे काफ़िर (नाशुकरे) हैं। और अल्लाह ने उनके लिये ज़िल्लत की सज़ा तय कर रखी है।” (नेसाय १५०-१५१) “सचमुच जिन लोगों ने दीन यानी धर्म के टुकड़े टुकड़े कर डाले और जो अलग अलग

गिराकर बनाकर बैठ गये हैं उनसे तुम्हारा कोई सरोकार नहीं ।” (ईनाम—१६०) “यह (कुरान) वह हक (सच्चाई) है जो अपने से पहले की मज़हबी किताबों की तसदीक करता है (यानी उन सबको सच बताता है ।)” (बक्ररह-६१) “और तुम्हें (मुहम्मद साहब को) कोई ऐसी बात नहीं कही गई जो सचमुच तुमसे पहले के रसूलों को न कही गई हो ।” (हा मीम-४३) “...अल्लाह ने सब के लिये अलग अलग शरअ और तरीक़े बना दिये हैं । अल्लाह चाहता तो तुम सबको एक ही फ़िरका (एक ही रीत रिवाज के माननेवाले) बना देता । लेकिन अल्लाह चाहता है कि जिसे जो तरीक़ा बता दिया है उसीमें उसे परखे । इसलिये इन फ़रक़ों में न पड़ो, और दूसरों की भलाई के कामों में एक दूसरे से बढ़ने की कोशिश करो । सबको अल्लाह ही के पास लौट कर जाना है । तब जिन बातों में तुम में फ़रक़ है वह अल्लाह तुम्हें समझा देगा ।” (मायदा, ४८)

इन मज़हबों की किताबों में इसी तरह की अनगिनत चीज़ें भरी पड़ी हैं । हकीक़त यह है कि—

फ़क़त तफ़ावत है नाम ही का, दर अस्ल सब एक ही है यारो !

जो आबे साफ़ी कि मौज में है, उसी का जलवा डुबाब में है ।

ऐ दोस्तो ! सिर्फ़ नाम का फ़रक़ है । असल में सब एक ही हैं । जो साफ़ पानी लहर में दिखाई देता है उसी की चमक बुलबुले में भी नज़र आती है ।

२

ऊपर के हिस्से में हम दुनिया के बड़े बड़े मज़हबों की एकता का ज़िक्र कर चुके हैं। इस हिस्से में हम हिन्दू धर्म और इसलाम की दो मशहूर और जानी बूझी किताबों गीता और कुरान, को ही लेना चाहते हैं। हमारे देस में इन ही दो मज़हबों के मानने वालों की तादाद सब से ज्यादा है। गीता कब और कैसे लिखी गई, और हिन्दू धर्म की किताबों में गीता की क्या जगह है, यह हम गीता के बयान में बतावेंगे। ऐसे ही कुरान कहाँ, कब, कैसे और किन हालतों में उतरा और उसका लोगों पर क्या असर पड़ा, यह कुरान के बयान में बतावेंगे। ये सब जानते हैं कि गीता हिन्दू धर्म की खास किताब और उस धर्म का निचोड़ मानी जाती है। ऐसे ही कुरान इसलाम की सबसे बड़ी किताब और उसकी जड़ है। दुनिया की इन दोनों पाक किताबों को मिलाकर प्रेम के साथ पढ़ा जाय, तो साफ़ पता चलता है कि इन दोनों की नसीहतें और उनके बुनियादी असूल बिल्कुल एक हैं। कुछ मिसालें हम आगे देते हैं।

हिन्दुस्तान में गीता और अरब में कुरान की तालीम जिन हालतों में दी गई वह एक दूसरे से बहुत कुछ मिलती जुलती हैं। हिन्दुस्तान में महाभारत की लड़ाई कौरवों और पाण्डवों के बीच हुई थी, जो एक ही खानदान के और एक ही दादा की औलाद थे। उस लड़ाई में दोनों तरफ़ की फौजों में एक दूसरे के भाई, मामा, चाचा, साले बहनोई, ससुर, वगैरह मौजूद थे। इसी तरह कुरान में मुसलमानों और ग़ैर मुसलमानों की जिस

लड़ाई का जिक्र आता है वह अरब के एक ही बड़े और मशहूर कबीले के लोगों में, जिसे कुरैश का कबीला कहते थे, शुरू हुई थी। 'कुरैश' और 'कुरु' नामों में सिर्फ लफ्ज़ी एकपन ही नहीं है, बल्कि तारीखी या इतिहासी एकपन भी मालूम होता है। कौरुश और कुरु दोनों नाम ईरानी किताबों में भी पाए जाते हैं। ईरान के एक बहुत बड़े बादशाह का नाम कौरुश था जिसे अंगरेजी में बिगाड़कर साइरस लिखा जाता है। ईरानी अपनी किताबों में उसे 'कौरुश' और 'कुरु' दोनों तरह से लिखते हैं। इरानी ज़बान में उसका नाम कोरेश लिखा जाता है। कौरवों और पाण्डवों दोनों के एक पुरखे का नाम भी कुरु था। कौरव लफ्ज़ कुरु ही से बना है। यह एक सच्ची तारीखी बात है कि महाभारत के कुरु और कौरव, ईरान के कौरुश या कुरु और अरब के कुरेश तीनों नामों की जड़ एक ही है।

जिस तरह कौरवों ने पाण्डवों पर तरह तरह के जुल्म किये और उन्हें दुख पहुँचाए, उनकी जायदाद छीन ली, उन्हें उनके घरों और मुलक से निकाल दिया, उनके रहने के मकान में आग लगा देने और उन्हें ज़हर देने तक की कोशिशें कीं, उसी तरह मक्के के कुरेश ने करीब करीब यही सब बातें मुहम्मद साहब और उनके उन रिश्तेदारों और साथियों के साथ की थीं जिन्होंने मुहम्मद साहब के कहने पर अपने पुराने मज़हब को छोड़ कर इसलाम धर्म को अपना लिया था, यानी एक अल्लाह के सिवा और सब देवी देवताओं या काबे के पुराने बुतों की पूजा करना बन्द कर दिया था। मक्के में काबा हज़ारों बरस का

एक पुराना मन्दिर था। कुरैश उसके मुजाविर या पण्डे थे। तेरह साल तक मक्के के कुरैश ने मुहम्मद साहब के रिश्तेदारों और साथियों पर इतने जुल्म ढाए कि उनका मक्के में रहना दूभर हो गया। आखीर में मुहम्मद साहब को खुद भी मक्का छोड़कर मदीने चला जाना पड़ा। जो मुसलमान पहले से मक्का छोड़कर बाहर चले गये थे वह सब अब मदीने में आ गए, और मदीने के बहुत से लोगों ने भी इसलाम को अपना लिया। मक्के के कुरैश ने इनका पीछा यहां भी न छोड़ा। उन्होंने एक तरफ तो मुहम्मद साहब के उन थोड़े से साथियों और प्रेमियों को जो मक्के में बाक़ी रह गए थे और ज्यादा सताना शुरू किया, और दूसरी तरफ एक बहुत बड़ी कौज लेकर मुहम्मद साहब और उनके साथियों को मिटा देने के लिये मदीने पर चढ़ाई कर दी। उस वक्त तक इसलाम में दुश्मन के खिलाफ भी हथियार उठाने की इजाज़त नहीं थी। उन तेरह बरस के अन्दर की जितनी आयतें कुरान में इस बारे में हैं सबमें “दूसरों के जुल्मों को सब्र के साथ बरदाश्त कर लेने” और “बुराई का बदला भलाई से देने” का ही हुकुम दिया गया है (हा मीम— ३४, ३६ ; अलमोमेनून— ८६ वगैरह)। अब जब कुरैश की तरफ से मदीने पर चढ़ाई हुई तो कुरान में पहली बार इन लफ्ज़ों में मुसलमानों को तलवार उठाने की इजाज़त दी गई—

“जिन लोगों पर जंग के लिये चढ़ाई की जा रही है उन्हें जंग की इजाज़त दी जाती है, क्योंकि उन पर यह जुल्म है, और इसमें कोई शक नहीं कि अल्लाह उनकी मदद के लिए काफ़ी है। यह

इजाज़त उन लोगों को है जिन्हें इनसाफ़ के खिलाफ़ उनके घरों से निकाल दिया गया है, सिर्फ़ इसलिए कि वह कहते हैं--एक अल्लाह ही हमारा रब है...।” (हज्ज ३६, ४०)

गीता में कौरवों को धर्म से गिरे हुए और ‘आततायी’ कहा गया है (१—३६)। मनुस्मृति और दूसरी किताबों में आततायी उन लोगों को कहा गया है जो आग लगा देना, ज़हर दे देना, मार डालना, लूट लेना या इसी तरह के और जुल्म दूसरों पर करते हैं और ऐसे लोगों के लिए मौत की सज़ा बताई गई है। मनुस्मृति में लिखा है—

“आततायी अगर सामने से आ रहा हो तो बिना सोचे उसे मार डालना चाहिये।”

कुरान में मक्के के उन कुरैश के लिए, जो मुसलमानों पर तरह तरह के जुल्म करते थे, खास तौर पर ‘काफ़िर’ का लफ़्ज़ बार बार आया है। इसके लफ़्ज़ी मानी ‘ना शुकरा’ हैं। मक्के के इन ‘काफ़िरों’ के खिलाफ़ लड़ाई की इजाज़त देते हुए कुरान ने इस इजाज़त के तीन सबब बताए हैं—

(१) मक्के के उन लोगों को जो इसलाम से प्रेम रखते थे वह तरह तरह से सताते थे (नेसाय ७४)।

(२) उन्होंने मुसलमानों को इनसाफ़ के खिलाफ़ उनके घरों से निकाल दिया था, सिर्फ़ इसलिए कि वह एक ईश्वर के सिवा और किसी देवी देवता की पूजा करने से इनकार करते थे (हज्ज ४०)।

(३) उन्होंने मदीने पर बिला वजह चढ़ाई करके वहाँ से भी मुसलमानों को मिटा देना चाहा था (हज्ज ४६) ।

इस सिलसिले में एक और बात देखने के क़ाबिल है । जिस वक्त् मक्के की फ़ौज और मदीने की फ़ौज दोनों एक दूसरे के आमने सामने हुईं, तो कौरवों और पाण्डवों की फ़ौजों की तरह उनमें भी दोनों तरफ़ एक दूसरे के भाई, चाचा, ताया, मामा, ससुर, और पास के और दूर के रिश्तेदार एक दूसरे से लड़ने के लिए तैयार दिखाई दिये ।

जिस तरह गीता में अर्जुन का दिल अपने रिश्तेदारों को लड़ने के लिए तैयार सामने खड़ा देख कर काँपने लगा था और उसने एक बार लड़ने से इनकार कर दिया था, उसी तरह कुरान में लड़ाई की इजाज़त आ जाने के बाद भी बहुत से मुसलमान लड़ाई से बचना चाहते थे । जिस तरह गीता में श्री कृष्ण ने अर्जुन को तरह तरह से समझाया कि —

“अपने दिल की इस कमज़ोरी को छोड़ कर खड़ा हो जा और लड़ । यह कमज़ोरी तुझे शोभा नहीं देती ।” (२--३) -

उसी तरह कुरान में मुसलमानों की इस कमज़ोरी और हिचकिचाहट को देखकर हुक्म दिया गया—

“तुम्हें जंग की इजाज़त दे दी गई है और तुम्हें यह अच्छा नहीं लगता । मुमकिन है जो चीज़ तुम्हें अच्छी नहीं लगती वह तुम्हारे भले की हो, और जो चीज़ तुम्हें अच्छी लगती है वह तुम्हारे लिए बुरी हो ...और क्या बात है कि तुम अल्लाह की राह में उन कमज़ोर लोगों, औरतों और बच्चों की हिफ़ाज़त के लिए नहीं लड़ते जो यह कह रहे

हैं—ऐ हमारे रब्ब ! हमें इस शहर मक्के से निकाल जिसके लोग हम पर जुल्म करते हैं, हमें कोई बचानेवाला और मदद करनेवाला भेज ।” (बक्रह २१६, नेसाय ७५, ७६)

जिस तरह श्रीकृष्ण ने अर्जुन को यह कहकर समझाया था कि—

“अगर तू लड़ाई में मारा जायगा तो स्वर्ग (बहिश्त) जायगा और अगर जीतेगा तो धरती पर राज करेगा ।” (२—३७)

उसी तरह कुरान में मुसलमानों से कहा गया कि—

“जो कोई अल्लाह की राह में लड़ता है वह चाहे मारा जाय और चाहे जीते, अल्लाह से उसे बहुत बड़ा फल मिलेगा ।” (नेसाय ७४)

गीता में धर्म और न्याय के लिए लड़ाई को ‘धर्म युद्ध’ बताया गया है। कुरान में मजहब के बचाव और इनसाफ के लिए जंग करने को ‘क़ेताल फ़ी सबीलल्लाह’ यानी ‘ईश्वर की राह में लड़ना’ कहा गया है।

दोनों जगह आखीर में उसी की जीत रही जिसकी तरफ धर्म और इनसाफ था, और दोनों जगह इस तरह सच्चे धर्म और सच्चे दीन को क़ायम करने में इससे मदद मिली।

अब तक हमने यह दिखाया है कि गीता और कुरान दोनों की तालीम कितनी मिलती जुलती हालतों में दी गई। अब हम इन दोनों किताबों के असूलों की एकता पर नज़र डालना चाहते हैं। इसके लिए हम गीता और कुरान में से कुछ मिसालें नीचे देते हैं। साथ साथ हम हिन्दू धर्म और इस्लाम की दूसरी

किताबों और इन मज़हबों के भक्तों और सूफियों की चीजों में से भी इस तरह की बातें पेश करेंगे जिनसे दोनों मज़हबों का बुनियादी एकपन और अच्छी तरह समझ में आ सके।

सब से पहले हम ईश्वर या अल्लाह ही के खयाल को लें। गीता और कुरान दोनों में ईश्वर को करीब करीब एक से लफ्ज़ों में बयान किया गया है।

गीता में ईश्वर को कई जगह “ज्योतिषामपितञ्ज्योतिः” (१३-१७) यानी ‘रोशनियों की रोशनी’ और “प्रभास्मि शशि सूर्ययोः” (७-८) यानी ‘चांद और सूरज की रोशनी’ कहा गया है। कुरान में अल्लाह को “नुरुनअलानूर” (नूर ३५) यानी ‘रोशनी पर रोशनी’ और नूरुससमावाते बल अर्दे (नूर ३५) यानी आसमानों और ज़मीन की रोशनी’ कहा गया है।

गीता में कई जगह ईश्वर की तारीफ में कहा गया है कि वह “लोगों को अँधेरे से रोशनी की तरफ ले जाता है।” (१०-११) कुरान में भी अल्लाह के बारे में लिखा है कि “वह लोगों को अँधेरे से रोशनी में ले जाता है।” (बक़रह २५७)

उपनिषदों में जगह जगह ईश्वर से प्रार्थना की गई है— “हमें अँधेरे से रोशनी में ले चल” (तमसोमा ज्योतिर्गमय)। मुहम्मद साहब की एक मशहूर दुआ है—“या अल्लाह! मुझे रोशनी दे।”

गीता में ईश्वर को “विश्वतोमुखम्” (१०-३३ और ११-६१) ‘सब तरफ मुँहवाला’ कहा गया है। कुरान में लिखा है— “जिधर की भी तुम मुड़ो उधर ही अल्लाह का मुँह है।” (बक़रह ११५)

गीता में ईश्वर को “सर्वलोकमहेश्वरम्” (५-२६) ‘सब दुनियाओं का मालिक’ बताया गया है। कुरान में भी उसे ‘रब्बुल आलमीन’ (फातेहा-१) ‘सब दुनियाओं का मालिक’ कहा गया है।

गीता में ईश्वर को ‘सत्य’ कहा गया है (१७-२३)। कुरान में लिखा है - “अल्लाहोवल हक़” (हज, ६२) यानी ‘अल्लाह हक़ (सत्य) है’।

गीता में ईश्वर की बाबत कहा गया है—“उस जैसा कोई दूसरा नहीं है।” (११-४३) कुरान में लिखा है—“और उस जैसा कोई दूसरा नहीं है।” (इख़लास, ४) यजुर्वेद के श्वेताश्वतर उपनिषद् में लिखा है—“न उसके बराबर कोई दूसरा है और न उससे बढ़ कर कोई है।”

गीता में लिखा है—“यह सारा जगत ईश्वर से घिरा हुआ है।” (६-४, ११-३८) ठीक यही चीज़ ईशोपनिषद् में कही गई है—“इस दुनिया के अन्दर जो कुछ है सब ईश्वर से घिरा हुआ है।” यानी वह सब में रमा हुआ है। कुरान में लिखा है ‘इन्नाहूबेकुल्ले शै इम्मुहीत’ (हा मीम—५४) ‘अल्लाह सब चीज़ों को घेरे हुए है।’

गीता में लिखा है “ईश्वर ही सब जानदारों का शुरू, सब का बीच और सब का आखीर है।” (१०-२०)

ईशोपनिषद् में लिखा है—

“वह चलता है और वह नहीं चलता, वह दूर है और वह पास है। वह सब के अन्दर है और वही सबके बाहर है।”

कुरान में है कि “वह (अल्लाह) ही सब का शुरू है, वही सब का आखीर है, वही सबका ज़ाहिर है वही सबका बातिन (अंतर) है। वह सब चीज़ों का जानने वाला है।” (हुदैद ३)

गीता में एक ईश्वर को ‘अक्षर’ यानी न मिटनेवाला और बाक़ी सब चीज़ों को ‘क्षर’ यानी मिट जानेवाला कहा गया है (१५-१६) । कुरान में लिखा है—

‘ सब चीज़ें फ़ानी यानी मिट जाने वाली हैं, बाक़ी रहने वाली, यानी न मिटनेवाली, ज़ात सिर्फ़ उस बड़ाई और बुजुर्गी वाले अल्लाह की है।’ (रहमान २६ और २७)

गीता में ईश्वर को “अचिन्त्य” (२-२५) ‘बुद्धि से परे’ (३-४३) और ‘अनिर्वचनीय’ यानी जिस लफ़्ज़ों में बयान नहीं किया जा सकता, कहा गया है। कुरान में लिखा है कि “(आदमी की) निगाह उसे नहीं समझ सकती।” (अनआम--१०४)

ईश्वर के और बहुत से गुण जिन लफ़्ज़ों में गीता में बयान किये गए हैं करीब करीब उन्हीं लफ़्ज़ों में कुरान में कहे गए हैं।

ईश्वर के उन्हीं गुणों, यानी अल्लाह की उन्हीं सिफ़तों के बारे में अगर हम दूसरे हिन्दू और मुसलमान बुजुर्गों के बयानों को देखें तो यह एकता और भी ज़्यादा चमकने लगती है। गीता में लिखा है—

“अगर आसमान में एक हज़ार सूरजों की रोशनी एक साथ चमक उठे तब भी वह उस ईश्वर की ज्योति के शायद ही बराबर हो सके।” (११-१२)

सामवेद के केनोपनिषद में लिखा है—

“जिसने यह समझा कि ईश्वर नहीं जाना जा सकता वही जानता है। उसे जानने का दावा करने वाले असल में उसे नहीं जानते, उसे वे ही जानते हैं जो उसे जानने का दावा नहीं करते।”

‘अल्लाह सब चीज़ों को घेरे हुए है’ इस ख़याल को और साफ़ करते हुए एक मुसलमान सूफ़ी ने कहा है—

काबे में कलीसा मैं हमने तो जहाँ देखा,

ऐ क्रस्रे वफ़ा ! तेरी तामीर नज़र आई ।

गीता में यह ख़याल बार बार आता है कि—

“ईश्वर सब प्राणियों के दिल के अन्दर रहता है।” (१८—६१)

कहीं कहीं लिखा है कि—

“ईश्वर भक्तों के दिल के अन्दर बसता है।” (१०—११) “जो भक्ति के साथ मेरी पूजा करते हैं वह मुझमें रहते और मैं उनमें रहता हूँ।” (६—२६)

मुहम्मद साहब ने कहा है कि—

“आदमी का दिल रहमान (ईश्वर) के रहने की जगह है।”

यजुर्वेद के शतपथ ब्राह्मण में लिखा है—

‘ईश्वर दिल में रहता है इसी लिए दिल को ‘हृदय’ कहते हैं।’

मौलाना रूमी की मसनवी फ़ारसी ज़बान में क़ुरान कही जाती है।* मौलाना रूमी मसनवी में लिखते हैं—

“मुहम्मद साहब ने कहा है कि—अल्लाह कहता है कि मैं ऊपर या नीचे, ज़मीन में या आसमान में या अर्श पर कहीं नहीं समा

❁मसनवीए मौलवीए मानवी, हस्त क़ुरान दरज़बाने पहलवी

सकता । पर मैं मोमिन (विश्वासी भक्त) के दिल में रहता हूँ । जो मुझे ढूँढना चाहे वहीं ढूँढ ले ।”

शिवस्तोत्र में लिखा है—

“न मैं कैलास में रहता हूँ न बैकुण्ठ में, मेरा बास भक्तों के दिल में है ।”

एक मुसलमान सूफी ने इसी खयाल को इन सुन्दर शब्दों में जाहिर किया है—

ऊँ दर दिले मनस्तो दिले मन बदस्तेऊँ,

चूँ आइना बदस्ते मनो मन दर आइना ।

वह मेरे दिल में है और मेरा दिल उसके हाथ में है, जिस तरह आइना मेरे हाथ में है और मैं आइने में हूँ ।

एक दूसरा सूफी निखता है—

शाफ़िल तू किधर भटके है कुछ दिल की खबर ले,

शीशा जो बग़ल में है उसी में तो परी है ।

गीता में ईश्वर की ‘दिव्य विभूतियों’ और उसके ‘विराट रूप’ को तरह तरह से वयान किया गया है । सातवें अध्याय में श्रीकृष्ण ने कहा है—

“ऐ कुन्ती के बेटे ! मैं पानी जैसी चीज़ों में रस हूँ, सूरज और चाँद की रोशनी हूँ, वेदों में ओम हूँ, आकाश में आवाज़ हूँ, लोगों में उनकी हिम्मत हूँ, ज़मीन में खुशबू हूँ, आग में उसकी दमक हूँ, तपस्वियों (रियाज़त करने वालों) का तप यानी रियाज़त हूँ, और सब जानदारों की जान हूँ ।” (७—८ और ९)

जिसे गीता में विभूतियाँ कहा गया है उसे सूफी किताबों में अल्लाह के मज़ाहिर कहा जाता है। फारसी की सूफी किताब गुनशने राज में लिखा है।

“दुनिया की तमाम चीज़ें उसी एक अल्लाह के अलग अलग मज़ाहिर हैं।”

गीता में जिसे विश्व रूप या विराट रूप (अध्याय ११) कहा गया है इसलामी किताबों में उसे शकले मुहीत कहते हैं। अल्लाह के इस तरह के दीदार या दर्शन को सूफी किताबों में ‘मराक़बए अहातए कुल्ली’ कहा जाता है—

मौलाना रूमी की मसनवी में लिखा है—

मन क्रन्द हा रा लज़ज़तम्, बादामहा रा रोगनम्

. . .

“मैं ही मिठाइयों का मिठास हूँ। मैं ही बादाम के अन्दर रोगन हूँ... कभी मैं बादशाहों का ताज होता हूँ... कभी होशियारों की होश-यारी और कभी मुफ़लिसों की मुफ़लिसी...” वग़ैरह।

गीता कहता है—

“हवन की सामग्री भी ब्रह्म (.खुदा) है। घी भी ब्रह्म है। आग भी ब्रह्म है। हवन करनेवाला भी ब्रह्म है। और जो आदमी इस ब्रह्म कर्म में लगा हुआ है वह ब्रह्म ही को पहुँचता है।” (४—२४)

एक मुसलमान सूफी ने इसी खयाल को इन लफ्ज़ों में ज़ाहिर किया है—

.खुद कूज़ा ओ .खुद कूज़ा गरौ .खुद गिले कूज़ा .खुद रिन्द सुबूकश,
.खुद बरसरे आकूज़ा ख़रीदार बरआमद बेशिकस्तो रवाँ शुद।

वह आप ही प्याला है, आपही कुम्हार है, आपही प्याले की मिट्टी है, और आप ही उस प्याले से पीनेवाला है। वह खुद आकर प्याला खरीदता है और खुद ही प्याले को तोड़कर चल देता है।

ईश्वर और दुनिया का एक दूसरे से क्या नाता है, इसके बारे में गीता कहती है—

“जो मुझे (ईश्वर को) सब जगह और सब चीज़ों को मेरे अन्दर देखता है वह न कभी मुझसे अलग होता है न मैं उससे अलग होता हूँ। जो आदमी एक दिल होकर सब जानदारों के अन्दर सबके घट में रहनेवाले ईश्वर की पूजा करता है वह योगी चाहे कहीं भी रहे ईश्वर के अन्दर है।” (६ - ३० और ३१)

बारहवीं सदी ईसवी के मशहूर मुसलिम सूफ़ी मुहीउद्दीन इब्न अरबी ने लिखा है—

फ़ला तनज़ुर इख़लहज़के फ़त अरीहे अनिख़ ख़ल्के,

वलातनज़ुर इख़ल ख़ल्के, वतक्सूहो सेवल हज़के।

तू अल्लाह को मख़लूक़ यानी दुनिया से अलग मत देख और न मख़लूक़ (आदमियों, जानवरों और सब चीज़ों) को अल्लाह के सिवा किसी दूसरे का रूप समझ।

यहां तक हमने यह दिखाने की कोशिश की है कि गीता और कुरान दोनों में ईश्वर और अल्लाह का ख़याल कितना मिलता जुलता है। इस तरह की और भी बहुत सी मिसालें दी जा सकती हैं। इन्हें बढ़ाने की जरूरत नहीं है।

ईश्वर के इसी ख़याल में से, द्वैत और अद्वैत यानी बहद-तुश्शुद् और बहदतुलबजूद् की बहसें पैदा होती हैं। हिन्दू

दर्शन में जिन अद्वैत कहते हैं मुसलिम फलसफे में उसी को वहदतुलवजूद कहते हैं। ऐसे ही, द्वैत के असूल को इसलामी किताबों में, वहदतुशुहूद कहा जाता है ॥ अद्वैत या वहदतुल-वजूद का मतलब यह है कि दुनियाँ में जो कुछ दिखाई देता है या जो कुछ है सब असल में अल्लाह ही अल्लाह है, सिवाय अल्लाह के और कोई चीज़ है ही नहीं। इसके खिलाफ जो कुछ हम देखते हैं वह धोका, माया यानी फरेब है। इसी खयाल को हिन्दू विद्वान 'अहं ब्रह्म' यानी मैं ब्रह्म हूँ, और 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' यानी यह सब ब्रह्म ही ब्रह्म है और मुसलिम सूफी 'अनल हक़' यानी मैं खुदा हूँ और हमा ओस्त' यानी सब अल्लाह ही अल्लाह है—कह कर जाहिर करते हैं। इसके खिलाफ द्वैत या वहद-तुशुहूद का मतलब यह है कि ईश्वर या अल्लाह का वजूद एक अलग चीज़ है और मादा या मखलूक यानी जानदार और वह जो हम देखते हैं अलग वजूद रखते हैं। यह सब अल्लाह के बनाए हुए हैं, पर हैं उससे अलग। इस खयाल को मुसलमान आलिम 'हमा अज़ ओस्त' सब चीज़े अल्लाह ही से हैं, यानी अल्लाह ही ने बनाई हैं कह कर जाहिर करते हैं। हिंदुओं और मुसलमानों दोनों के बड़े से बड़े आलिमों और विद्वानों में इन दोनों खयाल के लोग मिलते हैं। और एक खास बात यह है कि जिस तरह द्वैत खयाल के माननेवाले हिन्दू गीता से अपने खयाल को ठीक साबित करने की कोशिश करते हैं और अद्वैत खयाल के मानने

॥ कुछ आलिम वहदतुशुहूद को द्वैत से नहीं, बल्कि विशिष्टा द्वैत से मिलाते हैं।

वाले भी उसी गीता से अद्वैत को ठीक साबित करने की कोशिश करते हैं, ठीक उसी तरह वहदतुलवजूद के मानने वाले मुसलिम आलिम कुरान से अपने खयाल को ठीक साबित करते हैं और उनके खिलाफ वहदतुशुहूद के माननेवाले भी, उसी कुरान मजीद से अपने खयाल को सच्चा साबित करने की कोशिश करते हैं।

हम इस फलसफी बहस में पड़ना नहीं चाहते। हमारे लिये यह दिखा देना काफी है कि इस बारीक मामले में भी गीता और कुरान दोनों का बिल्कुल एक हाल है। यानी दोनों के पढ़ने और माननेवाले अपनी समझ और भूझ की बात दोनों ही से निकाल लेते हैं।

गीता में लिखा है कि —

“जो आदमी सच्ची लगन के साथ ईश्वर की भक्ति करता है वह सब गुणों यानी हदों से पार होकर ईश्वर ही में लीन यानी फना हो जाता है।” (१४-२६)

सूफियों की ज़बान में इस ईश्वर में लीन हो जाने को फनाफिल्लाह* कहते हैं।

*मुफ्ती सय्यद अब्दुल क़यूम जालंधरी ने अपनी किताब ‘गीता और कुरान’ में श्री कृष्ण के अपने को ईश्वर कहने के बारे में लिखा है—“कृष्ण जी हकीकते इनसानी (आदमी की असलीयत) से जुदा हो कर फनाफिल्लाह (ब्रह्मलीन) के मुक़ाम से बोल रहे हैं, जैसा कि उम्मत मुहम्मदिया (इसलाम) के बाज़ बुज़ुर्ग सुकर (तल्लीनता) की हालत में इस क्रिस्म के कलमात शतहीया (ज़ाहिरा शरअ के ख़िलाफ़) ज़बान पर आ चुके हैं।”

अल्लाह के खयाल के बाद इस तरह के खयाल सामने आते हैं जैसे—दुनिया कैसे बनी, रूह क्या है, आवागमन यानी तना-सुखा होता है या नहीं, अवतार या रसूल किसे कहते हैं, वह दुनिया में क्यों आते हैं, मज़हब क्या है और अलग अलग मज़हब क्यों हैं, वगैरह। इस तरह के अनगिनत सवाल हो सकते हैं, जिनके जवाबों में गीता और कुरान की बुनियादी एकता दिखाई जा सकती है। हम यहां इनमें से सिर्फ़ ऊपर के चार या पांच सवालों को ही लेंगे।

दुनिया की पैदायश की बाबत गीता कहती है—

“जितने जानदार या प्राणी हैं वह सब शुरु में अव्यक्त थे यानी उनमें से कोई पैदा नहीं था, यानी उस वक्त कोई रंग रूप नहीं था। बीच के ज़माने में ये सब चीज़ें व्यक्त यानी ज़ाहिर हुईं। आखिर में जाकर फिर ये सब अव्यक्त होजायंगी यानी न रहेंगी। इसलिये फ़िकर करने की कोई बात नहीं।” (२-२८)

कुरान की मशहूर आयत है कि —

“हम सा अल्लाह ही के हैं और उसी की तरफ़ लौटनेवाले हैं।” (बक्रह-१५६)

सूफ़ियों ने इस खयाल को और साफ़ तौर से ज़ाहिर किया है। इसलाम की ज़बान में अव्यक्त को बेनिशान या अदम कहते हैं। एक सूफी का कहना है —

दर अदम बूदेमो आख़िर दर अदम खाहेम रफ़्त,

ईं तमाशाए जहाँ रा मुफ़्त भी बीनेम सा।

हम अदम (अव्यक्त) की हालत में थे और आख़िर में फिर

उसी हालत में होंगे। यह बीच का तमाशा हम मुफ्त में देख रहे हैं।

मौलाना रूम ने कुरान की ऊपर वाली आयत के हवाले से लिखा है—

सूरत अज़ बे सूरती आमद बिरु'

बाज़ शुद इन्ना इलै हे राजेऊन ।

सब सूरतें बे सूरती (निराकार या अव्यक्त) से निकली हैं और फिर सब उसी अल्लाह (निराकार) में जाकर मिल जाती हैं।

छान्दोग्य उपनिषद् में लिखा है —

“यह सब जो कुछ है उसी अव्यक्त ईश्वर से पैदा होता है। उसी में रहता हुआ अपने सब रूपों को चलाता है और आखिर उसी में लै (फ़ना) हो जाता है।”

आत्मा या रूह के बारे में गीता कहती है—

“न हथियार उसे काट सकते हैं, न आग उसे जला सकती हैं, न पानी उसे भिगो सकता है, न हवा उसे सुखा सकती है.....”
(९-२३ और २४)

मौलाना रूम ने अपनी मसनवी में कहा है—

काबिले तग़ाईर औसाफ़े, तन अस्त,

रूह बाक़ी आफ़ताबे रोशन अस्त ।

. . .

अज़ मर्ग़ाचे अन्देशी चू जाने बक्रादारी ।

जिस्म की हालतों में अदल बदल होता रहता है लेकिन रूह एक सी क़ायम रहती है...जब रूह यौनी जान हमेशा रहनेवाली है तो आदमी को मौत से क्या डरना !

आवागमन पुनर्जन्म या तनासुख के लिये गीता में भीकृष्ण ने अर्जुन से कहा है—

“ऐ अर्जुन ! मेरे और तेरे दोनों के बहुत से जन्म हो चुके हैं । मैं उन सब को जानता हूँ पर तू नहीं जानता ।” (४-५)

कुरान में कहीं पर भी आवागमन के असूल के खिलाफ कोई साफ़ बात नहीं मिलती । दूसरी तरफ़ कुरान में कुछ ऐसी आयतें हैं जो आवागमन या तनासुख को साबित करती मालूम होती हैं । उन्हीं आयतों की बिना पर तनासुख के मामले में मुसलमान विद्वानों में दो खयाल पैदा हो गए हैं, एक तनासुख के हक़ में दूसरा इसके खिलाफ़ । इन आयतों में से कुछ यह हैं—

“अल्लाह ही ने तुम्हें ज़िन्दगी दी है । वही तुम्हें मौत देगा । फिर वही तुम्हें फिर ज़िन्दा करेगा । सचमुच आदमी ना शुकरा है ।” (हज़-६६)

“अल्लाह दाने में से और गुटली में से अँखुआ फोड़ निकालता है । वह मुर्दा से ज़िन्दा और ज़िन्दा से मुर्दा करता है । यह अल्लाह ही के काम हैं । फिर तुम उससे क्यों फिरे हुए हो ?” (अन-आम-६६)

“तुम अल्लाह से कैसे इनकार कर सकते हो ? तुम मर चुके थे और उसने तुम्हें ज़िन्दा किया, वह फिर तुम्हें मुर्दा कर देगा और फिर ज़िन्दा कर देगा । और आखिर में फिर तुम उसी के पास जाओगे ।” (बक्रह-२८)

“हमने (अल्लाह ने) तुम में मौत ठहराई और हमारे लिए यह

नामुमाकेन नहीं कि तुम्हारी तरह औरों को पैदा करें और तुमको फिर से ऐसी हालत में पैदा करें जिसका तुम्हें पता नहीं।”
(वाक़े-६०)८

इन ही आयतों को लेकर शिया मुसलमानों के कुल चौबीस फ़िर्कों में से तेरह* आवागमन को ठीक मानते हैं। शियों के इन फ़िर्कों के अलावा और भी बहुत से मुसलमान आत्मियों और सूफ़ियों जैसे मौलाना रुम, इब्नुलतुकैल, इब्नख़ालदून, इमाम गिज़ाली ने आवागमन के असूल को ठीक बताया है। हम इस मज़मून पर सिर्फ़ मौलाना रुम के कुछ शेर नीचे देते हैं। मौलाना रुम ने एक जगह लिखा है—

हम चाँ सबज़ा बारहा रोईदा अम

हफ़्त सँदहफ़ताद क़ालिब दीदाअम ।

मैं सबज़ों यानी घास की तरह बार बार पैदा हुआ हूँ । मैंने सात सौ सत्तर जिस्म देखे हैं ।

मौलाना रुम आजकल के असूल एवोल्यूशन (इतेक़ा यानी विकास) के भी एक बड़े दर्जे तक माननेवाले थे। उनके कुछ मशहूर शेर नीचे दिये जाते हैं। वह अपने लिये लिखते हैं—

अज़ जमादी मुर्दमो नामी शुदम

वज़ नुमा मुर्दम बहेवाँ सर ज़दम ।

* रज़ामिया, कामबिया, मन्सूरिया, हमीरिया, बातिनिया, क़रामतिया, जनाहिया, ख़िताबिया, मामरिया, मैसूनिया, मक्रबिया, झलफ़ीया, और जनाबिया, (उर्दू गीता और कुरान—मुफ़्ती सय्यद अब्दुल क़यूम जालंधरी)

मुर्दमज़ हैवानिओ आदम शुदम

पस चे तरसम कै ज़मुर्दम कम शवम ।

हग्लए दीगर बमीरम ऐ बशर

ता बरारम अज़ मलायक बालोपर ।

बारे दीगर अज़ मलक कुरबां शवम

उंचे अन्दर वह्न नायद आं शवम ।

मैं पहले जमादात यानी मिट्टी पत्थर वगैरह की हालत में था । वहाँ से मंरा तो नबातात (बनस्पति) बना । नबातात से जब मैं निकला तो जानवर बना । जानवर की हालत से मरकर मैं आदमी बना । इसलिए मुझे मरने से क्या डर । मरने से मैं कभी कम नहीं होता । अबकी बार जब मैं आदमी से मरूँगा तो मुझमें फ़रिश्तों (देवताओं) के पर पंख निकल आवेंगे और फिर जब मैं फ़रिश्ते की हालत से मरकर आगे बढ़ूँगा तो उस ऊँची हालत को पहुँचूँगा जो इस वक्त गुमान से भी बाहर है ।

जहाँ तक अवतारों या रसूलों का सवाल है सब मुल्कों सब ज़बानों और सब ज़मानों में लोगों को धर्म का रास्ती बतानेवाले पैदा होते रहे हैं । इस ख़याल को भी गीता और क़ुरान दोनों ने अपने अपने ढंग से जाहिर किया है । श्री कृष्ण ने गीता में कहा है—

“जब जब धर्म गिरने लगता है और अधर्म बढ़ने लगता है तब तब मैं बराबर भले लोगों की हिफ़ाज़त करने, बुरे लोगों को मिटाने और धर्म को फिर से क़ायम करने के लिए पैदा होता रहता हूँ ।”

कुरान में कहा गया है कि—

“हर क्रौम में रसूल और धर्म का रास्ता बताने वाले होते रहे हैं।” (यूनस-४७ और राद-७) “और जो रसूल जिस क्रौम में भेजा गया है वह उसी क्रौम की ज़बान में पैगाम (संदेश) देकर भेजा गया है, ताकि उन्हें साफ़ साफ़ समझा सके।” (इब्राहीम-४) “और इसमें शक नहीं कि तुम (मुहम्मद) से पहले भी हम (अल्लाह) ने दुनिया में रसूल भेजे हैं...हर ज़माने के लिए अलग अलग किताबें हैं। अल्लाह जिसे चाहता मंसूख कर देता है और जिसे चाहता है कायम कर देता है। और इन सब मज़हबी किताबों की असली माँ (उम्मु-लकिताब) अल्लाह ही से पास है।” (राद-३८-३९) “ऐ मुहम्मद ! सचमुच अल्लाह ने तुम्हें हक़ (सच्चाई) के साथ भेजा है ताकि तुम लोगों को अच्छे कामों के बदले में खुशख़बरी दो और बुरे कामों के नतीजे से आगाह करो, और कोई क्रौम ऐसी नहीं है जिसमें इसी तरह बुरे कामों के नतीजों से आगाह करनेवाला कोई रसूल नहीं भेजा गया।” (मलायका-२४) “और अल्लाह ने जो भी रसूल भेजे हैं वह इसी लिए भेजे हैं कि लोगों को अच्छे कामों के बदले में अच्छे फल की खुशख़बरी दे और बुरे कामों के बुरे नतीजों से आगाह करें। फिर जो कोई बात मान ले और नेक काम करे उसे न किसी बात का डर है और न कोई ग़म।” (अनआम — ४८)

अब रहा अलग अलग मज़हबों का सवाल। इसके बारे में गीता में कहा गया है कि—

“जो लोग जिस तरह भी मुझे ढूँढ़ते हैं मैं उसी तरह उन्हें मिलता हूँ। लोग सब तरफ़ से चल कर मुझ तक ही पहुँचते हैं।” (४-११)

कुरान में कहा गया है कि—

“अल्लाह ने सबके लिए अलग अलग शरअ और मिनहाज (यानी रस्म रिवाज और पूजा के तरीक़े) बना दिये हैं । अल्लाह चाहता तो तुम सबको एक ही फ़िक़ा (एक ही रस्म रिवाज के मानने वाले) बना देता । लेकिन अल्लाह चाहता था कि जिसको जो तरीक़ा बता दिया है उसीमें उसको परखे । इसलिए इन फ़क़ों में न पड़ो और दूसरों की भलाई के कामों में एक दूसरे से बढ़ने की कोशिश करो । सब को अल्लाह ही के पास लौट कर जाना है ।” (मायदा-४८)

“हर एक की अपनी दिशा (सिम्त) है जिस तरफ़ वह इबादत के वक्त अपना मुँह कर लेता है । इसलिए इस बहस में न पड़ो और भलाई के कामों में एक दूसरे से बढ़ने की कोशिश करो । तुम कहीं भी होंगे अल्लाह तुम सबको मिला देगा । सचमुच अल्लाह सब चीज़ों पर क़ादिर (समर्थ) है ।” (बक़रह—१४८)

एक सूफ़ी कहता है कि —

हमा कस ताख़िबे यारन्द चे हुशियार चे मस्त

हमा जा ख़ानए इश्क़ अस्त चे मसजिद चे कुनिशत ।

सब लोग उसी प्रीतम को खोज रहे हैं, क्या होशियार और क्या मस्त । सब घर उसी के प्रेम के घर हैं, क्या मसजिद और क्या मन्दिर ।

पुश्प दन्ताचार्य ने महिम्न स्तोत्र में लिखा है—

“लोगों की अलग अलग तबीयतों के मुताबिक़ ईश्वर की खोज और सेवा करनेवाले सीधे टेढ़े अलग अलग रास्तों से चलते हैं । पर

सब एक ही ईश्वर की तरफ जा रहे हैं। जैसे अलग अलग रास्तों से चल कर भी सब नदियाँ एक ही समुद्र में जाकर मिल जाती हैं।”

एक और सूफी कहता है—

कुफ़्रो इसलाम दर रहत पोयां

बहदूर लाशरीक खह गोयां ।

कुफ़्र और इसलाम दोनों उसी एक अल्लाह की राह में दौड़े चले जा रहे हैं। दोनों यही कहते हैं कि वह अल्लाह एक है, उसका कोई साझी नहीं है।

अब तक हमने जो कुछ लिखा है उससे गीता और कुरान की एकता पर रोशनी पड़ती है। पर यह कहा जा सकता है कि ढूँढा जाय तो इन दोनों किताबों में कुछ बातें एक दूसरे से अलग भी मिल सकती हैं। आगे हम वह बातें बताना चाहते हैं जिनमें दुनिया के मजाहबों में, या कम से कम गीता और कुरान में, बिल्कुल कोई फरक नहीं दिखाया जा सकता। बात यह है कि फलसफ़े की बातों और मजाहब की बारीकियों के बारे में जितना कोई चाहे बहस हो सकती है और इनमें खूब बहस हुई भी है। लेकिन जहाँ तक यह सवाल है कि इस दुनिया में हमारा सबसे बड़ा फर्ज क्या है, वह फर्ज किस तरह पूरा किया जावे, उसके पूरा करने में हमारी सब से बड़ी कठिनाइयाँ क्या हैं, ये कठिनाइयाँ कैसे दूर हो सकती हैं और इनका दूर होना हमें दुनिया में फलने फूलने और नक बनने में, अपनी दूसरी दुनिया को सुधारने में, ईश्वर के ज्यादा पास जाने में, मोक्ष (निजात) पाने में कैसे मदद दे सकता है, इस पर

दुनिया के सब मज़हब आमतौर से, और गीता और कुरान खास तौर से, एक ही से खयाल और एक ही से तरीके बताते हैं। हम अब इन दोनों किताबों में से मिसाल दे दे कर दिखाएँगे कि इन सवालों का ये दोनों क्या जवाब देते हैं।

गीता के कुछ हिस्से जो हमें दुनियाँ में हमारा सबसे बड़ा फ़र्ज़ बताते हैं ये हैं—

“वही आदमी ईश्वर तक पहुँच सकता है जो किसी भी जानदार या प्राणी से बैर या दुश्मनी न रखता हो।” (११-५५)

“मोक्ष यानी निजात सिर्फ़ उन्हीं को मिल सकती है और उन्हीं के पाप धुल सकते हैं जिनकी दुविधा मिट गई है, जिन्होंने अपनी खुदी को जीत लिया है और जो हमेशा सब की भलाई के कामों में लगे रहते हैं।” (५-२५)

“समझदार आदमी को चाहिये कि बिना अपने किसी तरह के लगाव के सब का भला चाहते हुए ही सब काम करे।” (३-२५)

“जो आदमी अपनी ही तरह सब को एक बराबर देखता है और सब के सुख और दुख को अपना ही सुख और दुख समझता है वही सब से बड़ा योगी है।” (६-३२)

“दुनिया के शुरू में ईश्वर ने यज्ञ यानी कुरबानी के साथ सब जानदारों को बना कर उनसे यह कह दिया कि तुम सब इस यज्ञ (यानी एक दूसरे के भलाई के कामों) से ही फलों फूलों और ये एक दूसरे की भलाई के काम ही तुम्हें सब अच्छी अच्छी चीज़ों के देने वाले साबित हों।” (३-१०)

“वह भले आदमी जो दूसरों को दे कर बचा हुआ खाना खाते

हैं सब पापों से छूट जाते हैं। और जो पापी लोग सिर्फ अपने लिए ही खाना पकाते हैं वह पाप ही खाते हैं।” (३-१३)

दूसरों की सेवा और भलाई के कामों में लगा रहना ही आदमी का इस दुनिया में सब से बड़ा धर्म है। इस बात पर सिर्फ गीता ही नहीं बल्कि हिन्दू धर्म की दूसरी किताबों ने भी बार बार जोर दिया है। पुराण में लिखा है—

“रुद्राक्ष या तुलसी की माला पहनना, माथे पर खास तरह का तिलक लगाना, बदन पर राख मलना, तीर्थ यात्रा करना, तीर्थों में नहाना, हवन करना, जप करना, या मन्दिरों में ठाकुर जी के दर्शन करना, इनमें से कोई काम आदमी को उस तरह पाक नहीं करता जिस तरह दूसरों की भलाई में लगे रहना।”

एक और जगह लिखा है—

“अठारह पुराणों के अन्दर व्यास जी ने दो ही बातें कही हैं, वह ये हैं—दूसरों का भला करना पुण्य यानी सबाब है, और किसी दूसरे को तकलीफ देना पाप यानी गुनाह है।”

इसी खयाल को हिन्दी में एक संत ने इस तरह जाहिर किया है—

चार वेद छैं शास्त्र में बात लिखी है दोष
दुख देने दुख होत है सुख देने सुख होय ।

तुलसी दास जी ने कहा है—

परहित सरिस धर्म नहि भाई
पर पीड़ा सम नहि अधमाई ।

ऐ भाई ! दूसरे का भला करने के बराबर कोई धर्म नहीं है, और दूसरे को तकलीफ़ देने के बराबर कोई पाप नहीं है ।

कुरान में भी यह खयाल जगह जगह दुहराया गया है । कुरान में आयत “इल्लाहयुहिब्बुलमुहसनीन” (यानी सचमुच अल्लाह उन्हीं को प्यार करता है जो दूसरों के साथ नेकी करते हैं) बार बार आती है । इसी मज़ामून पर कुछ और आयतें ये हैं—

“लोगों से कहो कि आओ मैं तुम्हें बताऊँ कि अल्लाह ने तुम्हें किन किन बातों से रोका है । अल्लाह के साथ किसी दूसरे को साझी न बनाओ । अपने माँ बाप की सेवा करो । गरीबी के डर से अपनी औलाद को मत मारो । हम (अल्लाह) तुम्हें और उन्हें दोनों को रोज़ी देते हैं । बदचलनी के नज़दीक मत जाओ, चाहे वह खुली बदचलनी हो चाहे छिपी । सिवा इनसाफ़ की ज़रूरतों के किसी की जान मत लो । उस (अल्लाह) ने तुम्हे यह सब करने का हुकम दिया है, ताकि तुम समझो ।

“और किसी अनाथ के माल को हाथ मत लगाओ सिवाय इसके कि तुम उसकी भलाई के लिए जब तक कि वह बालिग़ न हो उसके माल की देख भाल करना चाहते हो । जो चीज़ नापो पूरी नापो और जो तोलो ठीक ठीक तोलो । हम (अल्लाह) किसी आदमी को कोई ऐसा काम सिपुर्द नहीं करते जिसे वह न कर सके । और जब बोलो ठीक ठीक बात बोलो, चाहे वह बात तुम्हारे किसी नातेदार ही के खिलाफ़ क्यों न हो, और अल्लाह को तुमने जो बचन दिया है वह पूरा करो । उसने तुम्हें यह सब करने का हुकुम दिया है ताकि तुम

खूब याद रखो ।

“यही मेरा (अल्लाह का) रास्ता है, यही सीधा रास्ता (सेराते मुस्तक़ीम) है । इसी पर चलो । दूसरे दूसरे रास्तों पर मत चलो । क्योंकि वह तुम्हें अल्लाह के रास्ते से दूर ले जायेंगे । यही अल्लाह का हुकुम है ताकि तुम बुराई से बच सको ।” (अनआम-१५२ से १५४)

“ऐ ईमानवालो ! अल्लाह के लिए सीधे सच्चे और इनसाफ़ से गवाही देने वाले बनो । अगर किसी को तुमसे दुश्मनी भी है तो उसकी वजह से किसी के साथ बेइनसाफ़ी न करो, इनसाफ़ किया करो, यही बात परहेज़गारी (तक्वा) से बहुत करीब है । और अल्लाह के हुकुम का हर वक्त ख़याल रखो । सचमुच अल्लाह जानता है कि तुम क्या करते हो ।” (मायदा-८)

“हम (अल्लाह) ने आदमी को दो साफ़ साफ़ रास्ते (भलाई और बुराई के) दिखा दिए हैं, मगर आदमी चढ़ाई के रास्ते से बचता है । तुम समझे कि यह पहाड़ की चढ़ाई का रास्ता क्या है ? (वह रास्ता यह है—) किसी गुलाम को आज़ाद करना और भूख के दिनों में किसी यतीम रिश्तेदार को या मिट्टी में लोटते हुए किसी भी ग़रीब आदमी को खाना देना, जो आदमी ऐसा करता है वही ईमान वालों में से है, जो एक दूसरे को सब्र करने और दूसरों पर दया करने की सलाह देते हैं यही लोग दाहिने हाथ के रास्ते पर चलने वाले हैं, इस के खिलाफ़ जो लोग यह बात नहीं मानते वह बाएँ हाथ वाले रास्ते पर चलते हैं । उनके ऊपर बन्द आग पड़ी है ।” (बलद-१०-२०)

“तबाहो है उनके लिए जो तोल वज़ैरह में कमी करते हैं, जो जब दूसरों से चीज़ लेते हैं तो पूरा नाप कर लेते हैं लेकिन जब दूसरों

को नाप या तोल कर देते हैं तो कम देते हैं ।” (ततक्रीक १-३)

“अल्लाह की इबादत करो, उसके साथ किसी चीज़ को मत जोड़ो । अपने मा बाप के साथ, अपने रिश्तेदारों के साथ, यतीमों के साथ, गरीबों के साथ, अपने रिश्तेदार पड़ोसी के साथ, ग़ैर या अनजान पड़ोसी के साथ, सफ़र में जिस का भी साथ हो जाय उसके साथ, राह चलतों के साथ, और जो तुम्हारे मातहत हैं उनके साथ, सब के साथ नेकी करो । सच मुच अल्लाह घमंड करने वालों और अपनी बड़ाई हाँकने वालों को पसन्द नहीं करता ।” (नसाय-३६)

“क्या तुमने उसको देखा है जो दीन को भूठा ठहराता है ? वह (दीन को भूठा ठहराने वाला आदमी) वह है जो किसी यतीम को सताता है, और जो गरीबों को खाना देने पर ज़ोर नहीं देता, तबाही ऐसे नमाज़ियों के लिए जो अपनी नमाज़ (के असली मतलब) को भुला बैठते हैं, ख़ाली दिखावा करते हैं, और ख़ैरात से हाथ रोके रहते हैं ।” (माऊन १-७)

“और अगर (तुम किसी से) बदला लेने लगे तो उतना ही बदला लो जितना तुम्हारे साथ बुरा बरताव किया गया है, लेकिन अगर तुम सब्र के साथ बरदाश्त करलो तो सचमुच सब्र करने वालों के लिए बहुत ही अच्छा होगा । और तुम सब्र ही करो, लेकिन तुम्हारा सब्र करना अल्लाह की मदद से ही हो सकता है, तुम दूसरों की फ़िक्र मत करो और इस फ़िक्र में मत पड़ो कि वह क्या तरकीबें करते हैं । सचमुच अल्लाह उन्हीं के साथ है जो बुराई से बचते हैं और (दूसरों के साथ) भलाई करते हैं ।” (नहल १२६ से १२८)

कुरान में उन लोगों की ज़िन्दगी को ही सचमुच सफल

(कामयाब) बताया गया है—

“जो खुद तंग हाल में होते हुए भी दूसरों की जरूरतों को अपने से पहले पूरा करने की कोशिश करते हैं।” (हश् ६)

जहाँ तक दुश्मन के साथ भी भलाई करने का सवाल है इसी तरह की और भी बहुत सी आयतें कुरान में मौजूद हैं, यहाँ तक कि अपने दीन क' हिकाजत के लिए जिन लोगों के खिलाफ तलवार उठाने की इजाजत कुरान में दी गई थी उन्हीं से आम बरताव करने का असूल इन लफ्जों में बयान किया गया है--

“अगर कुछ लोगों ने तुम्हें (अल्लाह की) पाक मसजिद में जाने से रोका तो भी उस दुश्मनी की वजह से तुम हद से न बढ़ो। एक दूसरे को नेकी करने और परहेज़गारी से रहने में ही मदद दो। बुराई करने में और दूसरे को दुख देने में किसी को मदद न दो। और अल्लाह से डरो।” (मायदा—२)

जिस तरह हिन्दू सन्तों और महात्माओं ने अपनी धर्म की किताबों में से, और खुद कुरान ने, आदमी के इस सब से बड़े धर्म (फर्ज) को बताया है उसी तरह मुसलमान आलिमों और सूफियों ने भी बताया है। हम यहाँ सिर्फ दो तीन मिसालें देते हैं। एक मुसलमान सूफी का कहना है—

तरीक़त बजुज़ ख़िदमते ख़ल्क नेस्त

बतस्बी हो सज्जाद ओ दल्क नेस्त ।

खुदा के पाने का रास्ता सिवाय ख़ल्क की यानी दूसरों की ख़िदमत के और कोई नहीं है। माला लेकर—‘अल्लाह-अल्लाह’ रटने से

चटाई बिछाकर नमाज़ पढ़ने से, या गुदड़ी ओढ़लेने से अल्लाह नहीं मिल सकता ।

शेख सादी ने कहा है—

चूं अज़ वद' आज़ाद कर दी कसे

बेहअज़ अल्फ़ रकअत ब हर मंज़िले ।

अगर तू किसी एक आदमी की तकलीफ़ को भी दूर कर दे तो यह ज़्यादा अच्छा काम है बजाय इसके कि तू हज़ को जाय और रास्ते के हर पड़ाव में एक एक हज़ार रकअत नमाज़ पढ़ता जाय ।

एक और सूफ़ी का कहना है—

दिल बदस्त आवर कि हज्जे अकबरस्त

अज़ हज़ारां काबा यक दिल बेहतरस्त ।

किसी का दिल उसकी सेवा करके अपने हाथ में ले । यही सब से बड़ा हज्ज है । हज़ारों काबों से एक दिल बढ़कर है ।

इसी तरह को बेशुमार मिसालें हर मुल्क और हर मज़हब के संत महात्माओं के उपदेशों से दी जा सकती हैं ।

अब सवाल यह है कि यह फ़र्ज़ किस तरह पूरा किया जाय, इसे पूरा करने में हमें किस बात का खयाल रखना चाहिये ।

गीता और क़ुरान दोनों में हुकुम है कि हर काम ईश्वर, अल्लाह, के नाम पर और उसी के लिए करना चाहिये ।

गीता में बार बार सब काम “ईश्वरार्पण” यानी ईश्वर के लिए करने को कहा गया है । (३-३०) (५-१०) (९-२७)

क़ुरान में बार बार हर काम “फ़ी सबीलिल्लाह” (बक्रद-१५४ और २६१) (बराअत-६०) यानी अल्लाह की राह में या

अल्लाह के लिए करने का हुकुम है ।

गीता में लिखा है—

“तू जो कुछ करे जो कुछ खावे जो यज्ञ (कुरबानी) करे, जो तप करे, सब ईश्वर के लिए ही कर ।” (६-२७)

कुरान में लिखा है—

“(ऐ रसूल !) कह दो कि मेरी नमाज़, मेरी पूजा, मेरी ज़िन्दगी और मेरी मौत सब उस अल्लाह के लिए हैं जो सब दुनियाओं का पालने वाला है ।” (अनआम-१६३)

मशहूर अरबी किताब ‘अल कौलुल जमील’ में लिखा है—

“अल्लाह की राह पर चलने वाला आदमी पढ़ते, बोलते, खाते, पीते, चलते, फिरते सब हालतों में दिल अल्लाह की तरफ ही लगाए रहे ।”

गीता और कुरान दोनों में हुकुम है कि आदमी खुशी गमी, सुख दुख, जीत हार, कामयाबी नाकामयाबी, और अपने कामों के नतीजे, सब की तरफ से बेलगाब होकर फ़र्ज को फ़र्ज समझ कर सब काम करे । गीता में इसे निष्काम कर्म और कुरान में इसी को इख़लास कहा गया है ।

गीता कहती है—

“तुम्हें काम करने यानी अपना फ़र्ज अदा करने का ही अख़्तियार है । नतीजे पर तुम्हारा क़ाबू नहीं है । इस लिए अपने कामों के नतीजे की तरफ़ दिल मत लगाओ । अपना फ़र्ज पूरा करो । लगाव या मोह को छोड़कर कामयाबी और ना कामयाबी में एक बराबर रह कर काम करो । इस एक बराबर रहने का नाम ही योग है ।” (२-४७ और ४८)

कुरान में लिखा है—

“अपने रब्ब का नाम याद रखो और सब (चीज़ों) से बेलगाव होकर उसीकी तरफ़ लगे रहो ।” (मुज़म्मिल-८)

इमाम राजी ने अपनी किताब ‘तफ़सीर कबीर’ (कुरान का बड़ा भाष्य) में कुरान की इस आयत का मतलब बयान करते हुए लिखा है कि—

“जो आदमी भी अपने अच्छे कामों का इनाम चाहे या बुरे कामों के नतीजे से बचना चाहे वह बेलगाव नहीं है । और जो इबादत (पूजा पाठ) में लगा रहे या मार्फ़त (ज्ञान) की चाह रखे वह भी ख़ालिस अल्लाह की तरफ़ लगा हुआ नहीं कहा जा सकता । हाँ, जिस किसी की इबादत और उसके सब काम अपने लिए नहीं बल्कि सिर्फ़ अल्लाह के लिए हैं, वही इस आयत के मुताबिक़ ईश्वर में लौ लगाए हुए कहा जा सकता है ।”

गीता में लिखा है—

“जो आदमी अपने कामों के नतीजे की परवाह न करते हुए अपना फ़र्ज़ अदा करता रहता है वही सन्यासी और वही योगी है । आग को हाथ न लगाने वाला या इसी तरह के दूसरे ऊपरी कामों से बचने वाला सन्यासी नहीं कहा सकता ।” (६-१)

मुस्लिम विद्वान सूफ़ियान सौरी ने लिखा है कि—

“दुनिया में ज़ोहद (त्याग) यह नहीं है कि मोटे और सख़्त कपड़े पहिन लिए जायँ और सूखी रोटी खाई जाय । ज़ोहद तो यह है कि अपनी आरज़ (इच्छा) और ख़्वाहिश को जीता जावे ।” (शरहुल मिन्नत)

गीता में लिखा है कि—

“जो अपने सब कामों को ईश्वर के ऊपर छोड़ कर बेलगाव हो कर काम करता है उसे पाप नहीं लगता ।” (५-१०)

कुरान में लिखा है कि—

“जो अल्लाह पर तवक्कुल करता है (सब कुछ उसी पर छोड़ देता है) उसके लिए अल्लाह काफी है ।” (तलाक-३)

गीता में लिखा है कि—

“जो आदमी अपनी ख्वाहिशों के बस में होकर नतीजे की तरफ लगा रहता है वही कर्मों के बन्धन में फँसता है ।” (५-१२)

शाह वली उल्लाह देहलवी ने कहा है—

हिजाबे वस्त्र मतलबस्त दिल बस्तन ब मतलब हा

कि मन गर तर्क मतलब हा नमी करदम चेमी करदम ।

अल्लाह के सिवा किसी दूसरी चीज़ में दिल लगाना ही उस प्रीतम (अल्लाह) के और अपने बीच में परदा डालना है । हमने अगर इन सब चीज़ों से दिल को न मोड़ा तो कुछ न किया ।

बेलगाव हो कर सिर्फे ईश्वरार्पण, यानी फी सबीलिअल्लाह, काम करने, यानी अपना फर्ज अदा करने में दिक्कत क्यों पड़ती है और वह दिक्कत किस रूप में हमारे सामने आती है, ये सवाल ज़ारा गहरे हैं । इनका जवाब मौलाना रूम ने इस शेर में दिया है—

आफ़ते ईंदर हवाओ शहवत अस्त

वरना ईजा शरबत अन्दर शरबत अस्त ।

सारी आफ़त इच्छा और काम वासना में है, नहीं तो इस दुनियाँ में शरबत ही शरबत है ।

श्री कृष्ण ने अर्जुन के इस सवाल का जवाब कि आदमी से उसकी मरज़ी के खिलाफ़ क्या चीज़ पाप कराती है (३-३६) यह दिया है—

“आदमी से उसकी इच्छा के खिलाफ़ पाप कराने वाली चीज़ काम (शहवत) और क्रोध (गुस्सा) हैं । यह दोनों रजोगुण (हर-कत) से पैदा होते हैं । यह सब को खा जाने वाले और पाप की सब से बड़ी जड़ हैं । यही इस दुनिया में आदमी के दुश्मन हैं ।” (३-३७)

शहवत और गुस्से को क़ाबू में करने का तरीक़ा क्या है ? यह तरीक़ा भी गीता और क़ुरान में एक ही बताया गया है । वह है अपनी इन्द्रियों (अपने हवास) या अपने नफ़्स पर क़ाबू पाना ।

गीता में अपनी इन्द्रियों को जीतने यानी नफ़्स को क़ाबू में करने पर जगह जगह और बार बार जोर दिया गया है । गीता कहती है कि—

“उसी की अक़ल ठीक या कायम रह सकती है जिसकी इन्द्रियाँ उसके क़ाबू में हैं ।” (२-६१)

क़ुरान में लिखा है—

“अल्लाह चाहता है कि तुमपर दया करे, लेकिन जो लोग अपनी शहवतों (वासनाओं) के पीछे पड़े रहते हैं वह चाहते हैं कि तुम (अल्लाह के) रास्ते से बुरी तरह भटक जाओ ।” (नवाय-२७)

“उस आदमी से बढ़कर रास्ते से भटका हुआ और कौन है जो अपनी ख्वाहिश (वासना) के पीछे चलता है ।” (क़ेसस-५०) ।

इसी तरह कुरान में उन लोगों को

“जो अपने गुस्से को पी जाते हैं और लोगों को माफ़ कर देते हैं”

खास तौर पर

“ख़ुदा के प्यारे”

कहा गया है । (आल अमरान-१३३)

गीता में लिखा है कि—

“नरक यानी दोज़ख़ के तीन दरवाज़े हैं—काम, क्रोध और लोभ । इन तीनों से बचना चाहिये । ये तीनों आत्मा का वरबाद कर देने वाले हैं ।” (१६-२१)

कुरान में इच्छा, या काम वासना के लिये कई जगह ‘हवा’ लफ़्ज़ आया है और उससे वचने को बार बार कहा गया है । ‘हाविया’ कुरान में दोज़ख़ या नर्क के एक हिस्से का नाम है (अलक्कारिया-६) । यह उन लोगों की जगह बताई गई है जिनकी नेकियों का वज़न कम और बुराइयों का बोझ ज्यादा हो (अलक्कारिया) ।

बू अली शाह कलन्दर ने लिखा है—

मर्द बायद ता निहद बर नफ़्स पा

बगुज़रद अज़ शहवतो हिसें हवा ।

आदमी वह है जो अपने गुस्से, अपनी शहवत (काम) और अपने लोभ को जीत ले ।

मौलाना रूम कहते हैं—

ख़रमो शहवत मर्द रा अहवख़ कुनद

ज़िस्तक़ामत मर्द रा अबदख़ कुनद ।

गुस्सा और शहवत आदमी को अन्धा कर देते हैं और उसे उस की ठीक हालत से भटका देते हैं ।

इसलाम में गुस्सा हराम है, और गुस्से की हालत में कोई भी अच्छा या बुरा काम करना मना है । इसकी मिसाल के लिए हज़रत अली की ज़िन्दगी में एक बड़ा अच्छा मौक़ा आता है । एक लड़ाई में अपने किसी दुश्मन पर उनका पल्ला भारी हो गया । वह उसकी छाती पर चढ़ बैठे और तलवार हाथ में लिए उसका काम तमाम करने को ही थे कि उस आदमी ने हज़रत अली के मुँह पर थूक दिया । हज़रत अली ने उसी दम तलवार हाथ से फेंक दी और कहा कि—“अब मैं तुम्हें नहीं मारूँगा ।” यह कह कर वह उसके ऊपर से हट गये । वह आदमी हैरान रह गया, और उसने पूछा कि—“आप ने मुझे क्यों छोड़ दिया ?” हज़रत अली ने जवाब दिया कि—“मैं अब्बाह के नाम पर लड़ रहा था, अपने लिए नहीं । जब तूने मुझ पर थूका, मुझे गुस्सा आ गया, और गुस्सा हराम है । गुस्से में आ कर कोई भी काम करना पाप है ।”

अपनी इन्द्रियों या अपने नफ़्स को क़ाबू में करने के लिए बहुत से तप यानी बहुत सी रियाज़तें बताई गई हैं । ये भी क़ुरान और गीता में लगभग एक ही हैं । मगर हम इन की तफ़सील में जाना नहीं चाहते । नफ़्स के साथ साथ अपने

खयाल और अपनी अकल पर काबू पाना और उन्हें शान्त और कायम रखना भी इस राह की एक बड़ी और ऊँची मंजिल है।

गीता कहती है कि—

“जो आदमी सब जगह बेलगाव है, जो न अच्छी चीज़ को पा कर खुशी से फूलता है और न बुरी को पाकर दुखी होता है, जो अपनी सब इन्द्रियों को उनकी चाह की चीज़ों से इस तरह खींच कर काबू में रखता है जिस तरह कछुआ अपने हाथ पैरों को सब तरफ से अपने अन्दर खींच लेता है, उसी आदमी की बुद्धि (अकल) कायम है। वही ‘स्थित प्रज्ञ’ है।” (२-५७ और ५८)

गीता में जिसे स्थितप्रज्ञ (टिकी हुई बुद्धि वाला) कहा गया है कुरान में और दूसरी मुसलिम किताबों में उसी को सलीम अकल वाला, या सलीम क़लब वाला, या क़लबे मुतमइन्ना या नफ़्से मुतमइन्ना कहा गया है। सलीम के माइने हैं सावित। मुतमइन्ना के माइने हैं टिका हुआ या स्थित, अकल के माइने हैं प्रज्ञा या बुद्धि, क़लब के माइने हैं दिल या मन, और नफ़्स के माइने हैं आपा।

कुरान में जगह जगह उस आदमी की तारीफ की गई है जिसका क़लब (मन) सलीम या टिका हुआ हो (राद-२८ और साफ़ात-८४) वगैरह।

मुहम्मद साहब ने एक जगह कहा है कि—

“उसी आदमी का असली भला होगा जिसके दिल को अल्लाह ने ईमान (विश्वास) के लिए ख़ालिस कर दिया हो और जिसके क़लब को सलीम, ज़नान को सच्चा, नफ़्स को इतमीनान वाला, और

मिज़ाज को क़ायम, कान को सुनने वाला, और आँख को देखने वाला बनाया हो ।” (शोबुल ईमान)

लफ़्ज़ सलीम के माइने बयान करते हुए एक मुसलिम विद्वान लिखता है—

“जब आदमी के दिल पर दुनिया की ख़्वाहिशों, सुखों या दुखों का असर नहीं होता तब वह सलीम बन जाता है ।”

गीता में लिखा है कि—

“वही समझदार आदमी स्थित प्रज्ञ कहलाता है जिसका दिल दुखों से बेताब न हो और सुखों के लिए जिसमें चाह न हो, जो हर तरह के लगाव, डर और गुस्से से ऊपर उठ चुका हो ।” (२-५६)

मनुस्मृति में लिखा है कि—

“जो आदमी कुछ भी सुन कर, छू कर, देख कर, खाकर, पीकर और सूँघ कर न खुश होता है और न दुखी होता है, उसी को जितेन्द्रिय (अपनी इन्द्रियों को जीतनेवाला) समझना चाहिये ।”

गीता में लिखा है कि—

“आदमी न अपने मतलब की चीज़ को पाकर बहुत खुश हो और न अपने ख़िलाफ़ चीज़ पाकर दुखी हो । अपनी बुद्धि को इस तरह क़ायम और ठीक रखते हुए ही ईश्वर को जान कर आदमी ईश्वर में मिल सकता है ।” (५-२०)

क़ुरान में लिखा है कि—

“ताकि तुम उस चीज़ पर जो तुम्हारे हाथ से निकल गई रंज न करो और जो चीज़ अल्लाह ने तुम्हें दी है उस पर फूलो नहीं... ।” (अलहदीद-२३)

इराक़ के शहर बसरा में एक मशहूर अरब सूफ़ी औरत हुई हैं जिनका नाम राबेया था। जाकर बिन मुलेमान ने राबेया बसरी से पूछा—“खुदा वन्दे से कब राज़ी होता है?” राबेया बसरी ने जवाब दिया कि “जब आदमी दुख और सुख दोनों में एक सा खुश रहता है।”

एक ईरानी सूफ़ी ने इसी मज़ामून पर कहा है कि—

न शादी दाद सामाने न ग़म आउदं नुक़साने

ब पेशे हिम्मतें मा हर चे आमद बूद मेहमाने।

न किसी खुशी से हम बड़े और न किसी ग़म से घटे। हमारी हिम्मत के सामने सुख या दुख जो भी आया मेहमान की तरह आया और चला गया।

आदमी ज्यों ज्यों अपनी इन्द्रियों पर काबू पाता जाता है, जैसे जैसे उसका मन शान्त होता जाता है और उसकी बुद्धि क़ायम यानी स्थिर होती जाती है, वैसे वैसे ही वह अपने आप को (अपनी असलीयत को) जानने और पहचानने लगता है। इसके साथ साथ उसकी रूहानी ताक़त भी बढ़ती जाती है और वह अल्लाह के करीब आता जाता है।

गीता कहती है कि—

“ब्रह्म निर्वाण उन्हीं लोगों के लिये है जिन्होंने अपनी आत्मा को जान लिया है।” (५-२६)

मुहम्मद साहब ने कहा है कि—

“जिसने अपने आपको पहचान लिया उसने अपने रब को पहचान लिया।”

शतपथ ब्राह्मण में लिखा है कि याज्ञवल्क ने जनक को उपदेश देते हुए कहा है कि—

“अपनी आत्मा को खोजो, उसी से तुम्हें सब बातों का पता लग जावेगा । इस जान की गुत्थी को सुलभाने के लिये अपनी आत्मा को जान लेना ही सब से बड़ा साधन (ज़रिया) है ।”

मौलाना रूम ने लिखा है कि—

हर के नफ़से ख़ेश रा दीदो शनाफ़्त

अन्दर इस्तकमाले खुद दो अस्पा ताफ़्त ।

जिस किसी ने अपने आपको देख और पहचान लिया वह फिर अपने कामिल (सिद्ध या पूर्ण) बनने की तरफ़ तेज़ी से दौड़ने लगता है ।

ठीक यही बात योगिराज याज्ञवल्क ने बृहदारण्यक उप-निषद् में कही है ।

हज़रत अली ने कहा है कि—

“ऐ आदमी ! तेरी दवा तुझमें है पर तुझे ख़बर नहीं और तेरी बीमारी भी तुझही में है पर तू देखता नहीं ।”

गीता कहती है कि—

“आदमी का आपा ही उसका दोस्त है और उसका आपा ही उसका दुश्मन है । उसी आदमी का आपा उसका दोस्त हो सकता है जिसने अपने आपे को जीत लिया है । और जिसने अपने आपे को नहीं जीता उसका आपा ही उसका दुश्मन है ।” (६—५ और ६)

कुरान में लिखा है कि—

“वही आदमी अपना भला करेगा जिसने अपने आपे को पाक

साफ़ किया । और वह आदमी अपना भला नहीं कर सकता जिसने अपने आपे को नीचे गिराया यानी अपने को नापाक किया ।”
(शम्स ६-१०)

मुहम्मद साहब की मशहूर हदीस है कि—

‘तुम्हारा सब से बड़ा दुश्मन तुम्हारा आपा है ।’

.जुन्नून मिस्र के एक बहुत बड़े सूफी हुए हैं । उन्होंने किसी सूफी औरत की बाबत सुना कि वह अल्लाह की बहुत बड़ी भक्त हैं । .जुन्नून ने उनके पास जाकर नसीहत मांगी । जवाब मिला कि—

“अपनी इन्द्रियों को क़ाबू में रखो और दिल को शीशे की तरह साफ़ करो ।”

.जुन्नून ने पूछा—

“बहिन ! कुछ और कहिये ।”

उन्होंने जवाब दिया कि—

“तुम अपने लिए अपने आपे ही से पूछो ।”

दुनिया की मज़हबी किताबों में अपने दिल, इन्द्रियों और अक़ल को क़ाबू में करना जितना ज़रूरी बताया गया है, और इस बात के हासिल करने के लिए जितनी छान बीन की गई है, उतना ध्यान किसी दूसरी बात की तरफ़ नहीं दिया गया । यहाँ तक कि यह चीज़ एक अलग ही इल्म अलग ही विद्या या अलग साइन्स बन गई है । हिन्दुओं में इस साइन्स को ‘योग’ कहते हैं और इसलाम में ‘सलूक’ । जो बुनियादी असूल हमने ऊपर बयान किये हैं उन्हीं को मथ मथ कर साधू, संतो, सूफ़ियों

और फकीरों ने अमृत और मोती निकाले हैं, जो इन्हीं विद्याओं की हिन्दू और मुसलिम किताबों में भरे पड़े हैं। इन किताबों पर निगाह डालने से जो एक सी बातें दोनों जगह नज़र आती हैं उन्हें देख कर अचरज होता है और यह यक़ीन होने लगता है कि यह सब एक ही या एक ही से स्रोतों से सींची गई हैं। मिसाल के लिए हम कुछ मिलती जुलती बातें दिखा कर अपने इस हिस्से को ख़तम करेंगे।

इन दोनों तरीक़ों में गुरु या पीर की ज़रूरत पर बहुत जोर दिया गया है। कुरान और गीता दोनों में इसका चर्चा मौजूद है। गीता कहती है कि—

“समझ ले कि जो असलियत को देखने समझने वाले शानी लोग हैं वह तुझे तब ज्ञान का उपदेश देंगे जब तू उनकी इज़्ज़त, उनका आदर मान करेगा, और उनसे बार बार पूछेगा और उनकी सेवा करेगा।” (४—३४)

कुरान में लिखा है कि—

“उस आदमी के बताए हुए रास्ते पर चलो जो भेरी (अल्लाह की) तरफ़ आता है।” (लुक़मान १५)

मौलाना रूम ने लिखा है—

हर के इवाहद हम नशीनी बा खुदा

ऊ नशीनद दर हुज़ूरे औखिया।

जो कोई खुदा के पास बैठना चाहे उसे चाहिये कि खुदा के बलियों, अल्लाह वालों, यानी ईश्वर भक्तों के सामने बैठे।

सूफ़ी किताबों में गुरु को मुरशिद या रहबर कहते हैं। इस

तरह की सब किताबों में गुरु की जरूरत और उसकी बात मानने पर जोर दिया गया है। अकसर किताबों में इस तरह के गुरु की एक तारीफ यह भी है कि वह सलीम अक़ल वाला यानी स्थित प्रज्ञ हो। मुहम्मद साहब ने कामिल रहबर की पहचान एक जगह यह बताई है कि—

“जब वह दिखाई दे तो खुदा याद आ जाय।”

हिन्दुस्तान के कबीर और दूसरे संतों और महात्माओं की बानी में भी सच्चे गुरु की जरूरत, उसकी इज्जत, और उसके कहने पर चलने का जगह जगह जिक्र आता है।

कुरान में एक जगह लिखा है कि हज़रत मूसा, जो खुद पैगम्बर थे, उन्हें भी एक कामिल रहबर यानी गुरु की जरूरत पड़ी। गुरु ने उन्हें तीन बार कसौटी पर कसा। तीनों बार हज़रत मूसा नाकाम रहे। आखिर उसी गुरु से उन्हें हकीकत यानी सच्चाई की तालीम मिली। (कहफ़ ६५—८२)

हिन्दू धर्म की किताबें भी इस तरह की मिसालों से भरी पड़ी हैं जिनमें बिना गुरु के योग के रास्तों पर चलना खतरनाक बताया गया है।

गीता में योग का कई जगह जिक्र आता है और योग के कुछ तरीक़े भी बयान किये गए हैं।

गीता कहती है कि—

“योगी को चाहिये कि एकान्त यानी तनहाई में बैठ कर, अकेला अपने दिल और अपने आपे को काबू में किये हुए, बिना किसी इच्छा या ख्वाहिश के, और बिना किसी चीज़ से अपना लगाव

रक्खे, हमेशा योग में लगा रहे ।” (६—१०)

इसके बाद के श्लोकों में बयान किया गया है कि किस तरह योगी साफ जगह में ख़ास तरह के आसन पर सीधा बैठ कर, अपने मन को यकसू कर के, गरदन और सर और बदन को अडोल रख कर, अपनी नाक की फुंगल पर ध्यान जमाए हुए, शान्त चित्त होकर ईश्वर में लौ लगावे । योग के लफ़्ज़ी माइने मिलने के हैं । योग ही आदमी को ईश्वर से मिलाने का सब से बड़ा ज़रिया समझा जाता है ।

इसलाम में योग को सलूक और योगी को सालिक कहते हैं । योग और सलूक दोनों के एक ही माइने हैं । मुहम्मद साहब ने भी एक हदीस में उस आदमी की तारीफ़ की है—

“जो किसी पहाड़ के दर्रे में अकेला बैठकर अपने परवरदिगार की इबादत करता है ।” (अबू सईद ख़ज़री)

सूफ़ियों में सलूक और मराक़बे (समाधि) के बहुत से तरीक़े रहे हैं । इन तरीक़ों को शग़ल (अभ्यास) कहा जाता है । इन पर अमल करने वाले सब अपने अमल को क़ुरान की किसी न किसी आयत से निकालते हैं । योग के इस तरह के पचास से ऊपर तरीक़े सूफ़ी क़ि़काबों में पाए जाते हैं जो क़रीब क़रीब सब हिन्दू योग के तरीक़ों से मिलते हैं । सूफ़ी सलूक के इन तरीक़ों में से एक का नाम ‘मुलतान मुबीन’ या ‘मुलतान महमूद’ है । इस ख़ास तरीक़े में ठीक उसी तरह बैठ कर नाक की फुंगल पर ध्यान जमाया जाता है जिस तरह गीता के श्लोक में बताया गया है । कुछ और तरीक़ों में दोनों भवों के बीच उस जगह

ध्यान जमाया जाता है जिसे हिन्दू किताबों में ब्रह्मरन्ध्र कहते हैं। एक और तरीका हृदयचक्र, यानी दिल के मरकज पर ध्यान जमाने का है। इस तरीके की बाबत अरब के एक सूफी का शेर है कि—

अल्ला बैज़ा क़स्बका कुन कनक तायर

फ़मन ज़ालि कल अहवाल फ़ीका तवस्तुद ।

अपने दिल के ऊपर इस तरह बैठ जिस तरह चिड़िया अंडे पर बैठती है। इससे तुझमें अजीब अजीब हालतें पैदा होंगी।

योग ही की एक शाख प्राणायाम है जिसका गीता में कई बार ज़िक्र आता है। (८—१२) (४—२६ और ३०) मुसलमान सूफी प्राणायाम को हब्से दम कहते हैं। इन दोनों लफ्ज़ों के एक ही माइने हैं। कहीं कहीं इसका नाम हब्से नफ़्स भी मिलता है। शाह वली उल्लाह ने अपनी अरबी किताब अल क़ौलुल जमील में हब्से दम के उन तरीकों को तफ़सील के साथ बयान किया है जिन्हें वह कुरान के मुताबिक ठीक बताते हैं। जिस तरह से हिन्दू प्राणायाम करते वक्त कभी कभी ओ३म शब्द पर चित्त को जमाते हैं उसी तरह मुसलमान सूफी हब्से दम में अकसर अल्लाह नाम पर दिल को टिकाते हैं। इस किताब में जो बहुत से तरीके शग़ल के दिये हैं उनमें से एक को 'शग़ले बिसात' कहते हैं, इस तरीके में आँखे बन्द करके ज़वान के सिरे को उसी तरह तालू में लगाया जाता है जिस तरह हठ योग की खेचरी मुद्रा में, और सांस को दिमाग की जड़ में बन्द करने की कोशिश की जाती है। इस तरीके को और उस पर अमल

करने से जो नतीजे धीरे धीरे पैदा होते हैं उन्हें अलकौलुल जमील में पूरी तरह बयान किया गया है। एक दूसरी सूफ़ी किताब ज़ियाउल कुलूब (दिलों की रोशनी) में भी हब्बे दम के बहुत से तरीक़े बताए गए हैं। इनमें से एक में सांस को रोक कर निगाह को दोनों भवों के बीच में रक्खा जाता है, और दूसरे में निगाह को हवा में जमाया जाता है, वगैरह।

योग या सलूक की एक खास चीज़ चित्त यानी मन को बाहर से रोक कर अन्दर की तरफ़ लगाना है (योग सूत्र)। गीता में कहा है कि—

“सब इन्द्रियों के दरवाज़ों को बन्द करके मनको अपने अन्दर रोक कर ही आदमी ईश्वर में लौ लगाए हुए परमगति (निजात) को हासिल कर सकता है।” (८—१२ और १३)

मौलाना रूमी की मसनवी में लिखा है—

चरम बन्दो ख़ब बे बन्दो गोश बन्द

गर नबीनी सिरै हक् बर मन बेख़न्द ।

अपनी आंखों, होठों, और कानों सबको बन्द कर ले फिर अगर तुम्हें अल्लाह का भेद दिखाई न दे तो हमपर हंसना ।

योग या सलूक के ऊपर हिन्दू और मुसलिम किताबें देखने से पता चलता है कि ये दोनों एक ही सी बातों और एक ही तरह के अभ्यासों (शगलों) से भरी पड़ी हैं। शायद ही कोई अभ्यास या शगल ऐसा हो जो एक में हो और दूसरे में किसी न किसी शक्ल में मौजूद न हो।

३

हम ऊपर दिखा चुके हैं कि सब मजहबों की, और इन्हीं के साथ साथ गीता और कुरान की, बताई हुई बुनियादी बातों और तौर तरीकों में कितनी गहरी एकता है। इसके माइने यह नहीं है कि सब मजहबों के लोगों में या हिन्दू और मुसलमानों में जो गीता और कुरान को अपने अपने मजहब की खास किताबें बताते हैं एकता और मुहब्बत है। इसके खिलाफ हम यह देख रहे हैं कि दुनिया में मजहब आदमी को एक खानदान के सांचे में ढालने के बजाय उसे छोटे छोटे टुकड़ों में तोड़ने और उन टुकड़ों के एक दूसरे से टकराने में मदद दे रहा है। यह बड़ अचरज की और दुख की बात है। पर आज तक दुनिया इस बीमारी का ठीक ठीक और पूरा पूरा इलाज नहीं कर सकी।

इसकी वजह क्या है ? इसकी वजह यह है कि मजहबों के क्रायम करने वाले अवतार, नबी या तीर्थंकर इस तरह के सवालनों का हल—जैसे यह कि आदमी के स्वभाव उसकी तबीयत में कौन कौन सी चीजें उसे उसका भले की तरफ ले जाने वाली हैं और कौन कौन सी उसे नुकसान पहुंचाने वाली हैं, उसे अपने अन्दर के किन किन रुजहानों को दबाना चाहिये और किन किन को बढ़ाना चाहिये, इनसानी समाज की हकीकत क्या है, उसकी असली ज़रूरतें क्या हैं, और किन किन बातों में हर आदमी का और सारे समाज का असली और टिकाऊ भला है ?—इन और इस तरह के और सब सवालों का हल

ऐसी गहराइयों में बैठकर निकालते हैं कि जिन गहराइयों तक मामूली आदमी नहीं पहुँच पाते। इन सच्चे और कीमती हलों को अपनी जिन्दगी में जगह देने के लिये यह बड़े लोग इतने ऊँचे और कठिन रास्ते दिखाते हैं कि जिन पर मामूली आदमी नहीं चल पाते। लेकिन इनके बताए हुए रास्ते या हल को छोड़ कर और कोई हल या कोई दूसरा रास्ता ऐसा नहीं है जिस पर चल कर आदमी अपने असली भले, सच्ची शान्ति और टिकाऊ सुख चैन तक पहुँच सके। रही रूह या आत्मा की तरक्की की बात, सो इसके लिये तो मज़हब के हलों और तरीकों को छोड़ कर और कोई दूसरे हल या तरीके अभी तक दुनिया के सामने आए ही नहीं।

यह हल क्या हैं ? सोचने समझने के लिये यह हल थोड़े से सीधे सादे साफ सुथरे असूलों में बन्द हैं। इनमें सब से बुनियादी खयाल एक ईश्वर या एक खुदा का होना है। गीता और कुरान दोनों इस धजूद की जीती और जागती तस्वीरें अपने पढ़ने वालों के सामने पेश करती हैं। जब दुनिया का पैदा करने वाला और चलाने वाला एक है और उसके सिवाय कोई दूसरी ताकत है ही नहीं, तो उस की पैदा की हुई मखलूक उसके पैदा किये हुए प्राणियों में नफरतों, गुस्सों, लड़ाई दङ्गों के ये बड़े बड़े तूफान कैसे पैदा होते हैं ? क्या इन तूफानों का पैदा होना यह साबित नहीं करता कि जो लोग अपने आप को एक खुदा का मानने वाला बताते हैं वह सचमुच पूरे दिल और पूरे ईमान के साथ उसमें यक़ीन नहीं रखते, और फिर भी वह अपने को एक

ईश्वर का मानने वाला और एक खुदा का परस्तार कहते हैं, और उसकी राह पर चलने का दावा करते हैं ! हर मुल्क और हर ज़माने में जो थोड़े से लोग सचमुच अपने अन्दर रूहानी रोशनी और रूहानी ताकत रखते हैं, जिन्हें साधू, संत, सुफी और फकीर कहा जाता है, उनका दिल लोगों की इस हालत को बरदाश्त नहीं कर सकता । उनसे देखा नहीं जाता कि एक ईश्वर के मानने वाले इस तरह अपनी जिन्दगी में ईश्वर की इच्छा और उसके हुकुम के ठाक खिलाफ़ अमल करें और दुख भोगें । इसी लिये हर समाज में और हर देस में मज़हब के अन्दर के इस राज रोग को दूर करने के लिये अवतारों, नबियों और ताँथ़्करों की तरह, और उन्हीं से मिलती जुलती, बड़ी बड़ी महान आत्माएं, बड़ी बड़ी रूहानी हस्तियाँ, पैदा होती रही हैं, जो लोगों को खुदा और सच्चे मज़हब की तरफ़ ले जाने की अनथक कोशिश करती रही हैं । यह कोशिशें इस बीमारी को पूरी तरह मिटा सकें या न मिटा सकें, पर ये आदमी के सच्चे सुधार और समाज की सच्ची तरक्की में बराबर नई जान डालती हैं ।

ये महान आत्माएं, ये शानदार रूहानी हस्तियाँ दो बड़े काम करती हैं । एक तरफ़ तो वह ईश्वर के सच्चे रूप, खुदा के सच्चे वजूद, के इलहामी नक्शे, उसके दीदार की भलक के अन्दर के तजरुबे लोगों के सामने पेश करते हैं जिससे लोग सचमुच एक ईश्वर के भक्त, एक खुदा की परसतिश करने वाले बनें, दूसरी तरफ़ वह उन झूठे रीत रिवाजों, पूजा पाठ के

तरीकों, बेइनसाफियों और खुदगारजी से पैदा हुए सैकड़ों गोरख धन्धों को अपनी आध्यात्मिक (रूहानी) आग में जला कर खाक कर देने की कोशिश करने हैं जो आपस में गैरियत और नफरत पैदा करते हैं, ता कि नफरतें, गुमंते और लड़ाई भगड़े दूर हों और इनसानो समाज एक दूसरे से मुहब्बत करने वाले भाई बहनों का एक प्यारा कुटुम्ब या खानदान बन सके और वह छोटी बड़ी आपस की टक्करें जड़ से मिट जायं जो इसे तबाह और बरबाद करती रहती हैं।

हमारे देश में भी ऐसे बड़े बड़े अल्लाह वालों और ईश्वर भक्तों का एक बहुत बड़ा सिलसिला मिलता है। कबीर, दादू, तुकाराम, नानक, चैतन्य, मुईनुद्दीन चिश्ती, बाबा फरीद, मोरा, निजामुद्दीन औलिया, रैदास, बुल्ले शाह, साथ इस सिलसिले के बड़े और अनमोल रतन हैं। इन्होंने ईश्वर के एक होने के गहरे से गहरे पहलुओं पर ज्यादाह से ज्यादाह रोशनी डाली है। इन्होंने उन सब बुराइयों और बे इन्साफियों का खुले तौर पर, और कड़े से कड़े लफ्जों में, मुकाबला किया है जो मज़हब के नाम पर की जाती हैं। इन लोगों का कलाम, इनकी वाणी पढ़कर आदमी सिर्फ ऊंचे अमूलों को ही नहीं जान जाता, बल्कि सच्ची और नेक ज़िन्दगी की तरफ, दूसरों की सेवा और खिदमत की तरफ और सच्ची रूहानियत की तरफ भी ध्यान देने लगता है। हम नोचे इन संतो में से दो चार के कलामों की कुछ मिसालें देते हैं, जिनसे आदमी और समाज के साथ मज़हब के असली नाते पर गैरानी पड़ेगी। इनसे यह

पता चलेगा कि एक खुदा में सच्चा यकीन आदमी को आदमी बनाने और समाज को सुख और शान्ति की तरफ ले जाने का कितना बड़ा जरिया है। ऊपर के रीत रिवाज किस तरह आदमी को लोहे की जंजीरों में जकड़े रखते हैं, और किस तरह यह छोटे मोटे रीत रिवाज ही समाज में बेइनसाफी पैदा करने, फिसाद खड़े करने और समाज का तरक्की के रास्तों को रोक देने का सबसे बड़ा कारण बन जाते हैं। अब हम कुछ मिसालें देते हैं।

कबीर साहब ने नीचे लिखे हुए वचनों में सिर्फ गीता और कुरान ही की नहीं, बल्कि नभाम हिन्दू और मुसलमान जिन्दगी की एकता की तसवीर बड़ा खूबसूरती से खींची है। आदमी आदमी में कोई ऐसा फरक करना जो उन्हें एक दूसरे से अलग करे, फिर वह फरक चाहे खाने पीने का हो, चाहे ऊंच नाच का हो, शादा ब्याह का हो, चाहे पूजा पाठ का हो, कबीर साहब के रूहानी दिल को हिला देता है। वह ऐसे लफ्जों में जो तार की तरह गुनने वाले के दिल के पार हो जाते हैं इन भेद भावों पर अपना दुख तरह तरह से जाहिर करते हैं। अपने जमाने के हिन्दू और मुसलमानों को सामने रख कर उन्होंने कहा है—

भाइ रे ! दुइ जगदीश कहां ते आया, कहो कौने भरमाया,
अल्लह, राम, करीमा, केशो, हरि हजरत, नाम धराया,
गाहना एक कनक ते गाहना इनि मंह भाव न दूजा,
कहन सुनन को दोउ कर थापिन, इक नमाज एक पूजा ।

वही महादेव वही मुहम्मद, ब्रह्मा आदम कहिये,
को हिन्दू को तुरुक कहावे, एक ज़मीं पर रहिये ।
वेद कतेब पढ़ै वै कुतबा, वै खुतबा वै पाण्डे,
बगर बेगर नाम धराए, एक मिटिया के भांडे ।
कहहिं कबीर वै दूनों भूलें, रामहिं किनु न पाया
वै खस्सी वै गाय कटावे, बादहिं जनम गंवाया ।

ऐ भाई ! इस दुनिया के दो मालिक, दो खुदा, कैसे हो सकते हैं ? कहो तुम्हें किसने वहका दिया ? अल्लाह और राम, करीम और केशो, हरि और हज़रत, ये सब सिर्फ़ अलग अलग नाम रख लिये गए हैं, जैसे एक सोने से तरह तरह के गहने गढ़ लिये जावें । ये दो अलग अलग चीज़ें नहीं हैं । कहने सुनने के लिए एक नमाज़ कहता है, दूसरा उसी को पूजा कहता है । जो महादेव है वही मुहम्मद है, जो ब्रह्मा है वही आदम है । कौन हिन्दू है और कौन मुसलमान ? दोनों एक ही ज़मीन पर रहते हैं । कोई वेद पढ़ता है । कोई खुतबा पढ़ता है । कोई मौलाना कहलाता है, कोई पंडित । नाम अलग अलग हैं । असल में सब एक ही मिट्टी के बरतन हैं । कबीर कहता है इस भूठे भेद भाव में पढ़ कर ये दोनों असली रास्ते में भटके हुए हैं । इनमें से किसी को ईश्वर नहीं मिला । एक बकरा काटता है दूसरा गाय । इसी वहस में इन दोनों ने अपनी ज़िन्दगी बरबाद कर दी ।

मन्दिर और मसजिद, पूरब और पच्छिम के करक को बयान करते हुए कबीर साहब ने कहा है—

जो खुदाय महजीद बसतु है, अबर मुलुक केहिं केरा,
तीरथ मूरत राम निवासी, दुष्ट मंह किनु न हेरा ।

पूरब दिसा हरी को बासा, पच्छिम अल्लह मुकामा,
 दिल मंह खोज दिलहि मंह खोजो, इहे करीमा रामा ।
 वेद कतेब कहो किन झूठा, झूठा जो न बिचारै,
 सब घट एक एक कर जानै, वै दूजा केहि मारै ।
 जेते औरत मर्द उपाने, सो सब रूप तुम्हारा,
 कबीर पंगरा अल्लह राम वा, सो गुरु पीर हमारा ।

अगर खुदा मस्जिद ही में रहता है तो बाक़ी मुल्क किसका है ?
 हिन्दू समझते हैं राम तीरथ मूरत में रहता है, पर इन दोनों में किसी
 को भी राम नहीं मिला । जो समझते हैं ईश्वर पूरब में है या अल्लाह
 पच्छिम में है, वह दोनों धोंके में हैं । उसे ढूँढना है तो अपने दिल
 के अन्दर ढूँढो, वह वहीं मिलेगा । वही करीम है और वही राम है ।
 वेद और कुरान झूठे नहीं हैं, झूठा वह है जो उनका नाम
 लेता है पर सोचता विचारता नहीं । जो आदमी सब के अन्दर
 एक ही अल्लाह को देखता है और सबको अपनी ही तरह समझता
 है वह किसी को तकलीफ़ नहीं दे सकता । दुनिया में जितने औरत
 और मर्द हैं सब तुम्हारे ही रूप हैं । कबीर कहता है कि जो आदमी
 अल्लाह और राम का पंगरा है यानी दोनों को एक समझता है वही
 हमारा गुरु और पीर है ।

आदमी आदमी सब एक हैं—इसे दिखाते हुए कबीर साहब
 कहते हैं—

ऐसो भरम बिगुरचन भारी,
 वेद कतेब दीन औ दोजक को पुरुषा को नारी,

माटी के घट साज बनाया नान्दे बिन्दु समाना,
घट बिनसे का नाम धरहुगे ग्रहमक खोज भुलाना ।
एकै तुचा हाड़ मल मूत्रा एक रुधिर एक गूदा,
एक वृन्द सों सिस्टि कियो है को ब्राह्मन को सूदा ।
रजगुन ब्रह्मा तमगुन सङ्कर सत्त गुना हरि सोई,
कहहि कबीर राम रमि रहिये हिन्दू तुरुक न कोई ।

मारी दुनिया एक बहुत बड़े धाँके में पड़ी हुई है जो उसे बरबाद कर रहा है। कोई वेद की दुहाई देता है, कोई कुरान की, कोई दीन की बात करता है, कोई दीज़ग्व की। इन अलग अलग रास्तों में कोई फ़रक नहीं है। आत्मा या रूह के लिये मर्द और औरत दोनों बराबर हैं। सब के बदन एक ही मिट्टी के बने हुए हैं। सब में एक ही सी जान है। इस जिस्म के मिट जाने पर ऊपर की शक्तों का भी फ़रक नहीं रह जाता। नाममक आदमी असली रास्ते से भटके हुए हैं। आदमी आदमी सब बराबर हैं। सबके एक ही सी खाल हैं, एक ही सी हड्डियाँ, एक ही सा मल मूत्र (पाखाना पेशाब), एक ही सा खून और एक ही सा गोश्त। एक वृन्द में सब पैदा हुए हैं। न कोई ब्राह्मण है और न कोई शूद्र। ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों आत्मा की इन तीन हालतों के नाम हैं—रजोगुण यानी हरकत, मतां गुण यानी सकून और तमां गुण यानी काहली। कबीर कहता है सबका एक ही ईश्वर खुदा से लो लगानी चाहिये। न कोई हिन्दू है न कोई मुसलमान। यह सब फ़रक भूटे हैं।

ऊपरी रीत रिवाजों के हलकेपन को दिखाते हुए कबीर साहब कहते हैं—

मरि हां रे तन का ले करि हां, प्रान छुटे बाहर ले बरिहो,
 काया बिगुरचनि अनिबनि भांति, कोइ जरै कोइ गाड़ै माटि ।
 हिन्दू जरै, तुरूक ले गाड़ै, यहि बिधि अन्त दुनों घर छाड़ै ।

ये लोगो ! जब आदमी मर जायगा तो उसके जिस्म को क्या करोगे ? जान निकल जाने पर बाहर डाल दोगे । जिस्म के बेजान हो जाने पर लोग तरह तरह से बरताव करते हैं । कोई जला देता है और कोई मिट्टी में गाड़ देता है । हिन्दू जलाते हैं और मुसलमान गाड़ते हैं । बात एक ही है । आग़िय दोनों इस जिस्म को छोड़ कर चल देते हैं ।

हिन्दु कहें मोहे राम पियारा तुरूक कहें रहिमाना,
 आपस में दांड लरि लरि मूए, मरम काहु नहीं जाना ।

हिन्दू कहते हैं हमारे प्यारे का नाम राम है, मुसलमान कहते हैं हमारे प्रातम का नाम रहिमान है । दोनों आपस में लड़ लड़ कर मरे जाते हैं । उनकी असलीयत से दोनों नावाक़िफ़ हैं ।

जात पात और झुआ झूत का ग़लत बनाने हुए कबीर साहब ने कहा है—

गुप्त प्रगट हे एकै मूद्रा, का को कहिये बाह्यन सूद्रा,
 झूठ गर्व भुलो मत कोई, हिन्दु तुरूक झूठ कुल दोई ।

सबके अन्दर और बाहर एक ही सा बनाव है । न कोई बाह्यन है न कोई शूद्र । जात पात का यह सब घमंड झूटा है, इसमें किसी को नहीं पड़ना चाहिये । यह बात भी झूठी है कि हिन्दू और मुसलमान दो अलग अलग ख़ानदान हैं । आदमी आदमी सब बराबर है ।

दादू का कलाम भी ऐसी ऐसी ही तसवीरों और इसी तरह

की चीज़ों में भरा पड़ा है। कुछ मिसालें यहां दी जाती हैं।
दादू ने कहा है—

एकै अल्लह राम है समर्थ साईं सोइ,

मैदे के पकवान सब खातों होइ सो होइ।

दादू सिरजनहार के केते नांव अनन्त,

चित्त आवै सो लीजिये यों साधू सुमिरै* सन्त।*

वही अल्लाह है वही राम है। वही समर्थ (समद) है। वही स्वका मालिक है। ये सब अलग अलग नाम ऐसे ही हैं जैसे एक मैदे के अलग अलग पकवान। जिसे जो अच्छा लगे खावे। ऐ दादू! उस सिरजनहार के अनगिनत नाम हैं, जिन नाम से चाहो उसे पुकारो। भले लोग इन नामों में कोई फ़रक नहीं करते।

हिन्दू मारग कहैं हमारा तुरुक कहैं रह मेरी,

कहां पन्थ है कहां अल्लह का नुम तो ऐसी हेरी।

दुई दरोग लोग कूँ भावै साईं सांच पियारा,

कौन पन्थ हम चलै कहां धों साधो करो बिचारा।

खण्ड खण्ड करि ब्रह्म कूँ पखि पखि लीया बांट,

दादू पुरन ब्रह्म तजि बंधे भरम की गांठ।

हिन्दु कहते हैं कि हमारा रास्ता ठीक है, मुसलमान कहते हैं हमारा रास्ता ठीक है। इनसे पूछा कि बताओ अल्लाह का रास्ता कौन सा है? यह दोनों असली रास्तों से भटक हुए हैं। लोगों को यह दुई, यह अलग अलग रास्तों पसन्द आते हैं; पर यह दुई

* “उसे अल्लाह कहके पुकारो या रहिमान पुकारो, सब अच्छे नाम उसी के हैं।” (कुरान—इसराईल, ११०)

भूठी है। उस मालिक का सच ही प्यारा है। ऐ भले लोगो !
 सांचो कि हम किस रास्ते पर चले और कब तक ? इन लोगो ने
 ईश्वर के भी टुकड़े टुकड़े कर डाले, और उन अलग अलग टुकड़ों
 को आपस में बांट लिया। ऐ दादू ! यह सब लांग उस पूर्ण ब्रह्म,
 उस एक अल्लाह से भटक कर धोके में फंसे हुए हैं।

दादू एकै आत्मा साहेब है सब मांह,

साहेब के नाते मिलै, भेख पन्थ के नांह।

दादू दून्यों भरम हैं हिन्दू तुरुक गंवार,

जे दुहवां थे रहित है सो गहि तत्त बिचार।

अपना अपना करि लिया भंजन माहें बांह,

दादू एके कृप जल मन का भरम उठाय।

ऐ दादू ! एक ही जान सब के अन्दर है। सब में वही ईश्वर
 मौजूद हैं। उस एक ईश्वर के नाते ही से हमें एक दूसरे से मिलना
 चाहिये, अलग अलग भेसों और पंथों के फरक में नहीं पड़ना
 चाहिये। ऐ दादू ! हिन्दू और मुसलमान दोनों धोके में पड़े हुए हैं,
 दोनों ना समझ हैं। सोच समझ कर उस असली रास्ते को पकड़ना
 चाहिये जिसमें कोई गैर नहीं रह जाता। इन लोगो ने एक कुएं के
 पानी को अलग अलग बरतनों में डाल कर अपना अपना अलग
 अलग कर लिया है। दुई का यह धोका अपने मन से हटा देना
 चाहिये।

आगे चल कर दादू कहता है—

अबह राम छूटा भ्रम मोरा

हिन्दू तुरुक भेद कछु नाहीं, देखौं दरसन तोरा,

सोई प्रान प्यंढ पुनि सोई, सोई लोही मासा,
 सोई नैन नासिका सोई, सहजै कीन तमासा,
 स्रवनों सबद बाजता सुनिये, जिह्वा मीठा जागै,
 सोई भूक सबन कूं व्यापै, एक जुगति सोई जागै,
 सोई सन्ध बन्ध पुनि सोई, सोई सुख सोई पीरा,
 सोई हस्त पांव पुनि सोई, सोई एक सरीरा,
 यहु सब खेल खालिक हरि तेरा, तैहि एक करि लीना,
 दादू जुगत जान कर ऐसी, तब यहु प्रान पतीना ।

मेरे दिल से यह धोका जाता रहा कि अल्लाह और राम दो हैं, हिन्दू और मुसलमान में मुझे कोई फ़रक़ दिखाई नहीं देता, ऐ ईश्वर ! मैं सबके अन्दर तेरा ही दर्शन करता हूँ, सबको एक ही सा साँस आता है, सबके एक ही सा जिस्म, एक सा खून, एक सा गोश्त, एक सी आँख नाक है, सब में एक ही जान खेल रही है, सब के कान एक ही सी आवाज़ें सुनते हैं, सबकी ज़बानों को मीठा मीठा लगता है, सबको एक सी भूक लगती है, एक ही तरह सबकी भूक मिटती है, सबके एक से हड्डी और जोड़ हैं, सबको एक ही तरह दुख सुख होता है, एकही तरह दर्द होता है, सबके एक ही से हाथ पाँव, एक ही सा बदन है, ये सब खेल उसी एक खालिक का है । वही खालिक है, वही हरि है । उसी ने सब के अन्दर मुझे अपने और इस एकता के दर्शन कराये हैं, इस तरह देख और समझ कर ही दादू की आत्मा को यक़ीन हुआ है ।

धर्म या मज़हब के असल जौहर का बयान करते हुए दादू ने कहा है—

आपा मेंटे हरि भजै, तनमन तजै बिकार,
 निर बैरी सब जीव सों, दादू यहु मत सार ।
 निरबैरी सब जीव सों, सन्त जन सोई,
 दादू एकै आत्मा, बैरी नहि कोई,
 सब हम देख्या सोधि करि, दूजा नाहीं आन,
 सब घट एकै आत्मा, क्या हिन्दू मूसलमान ।
 नारि पुरुष का नांव धरि, इह संसै भरम भुलान,
 सब घट एकै आत्मा, क्या हिन्दू मूसलमान ।
 दोनों भाई हाथ पग, दोनों भाई कान,
 दोनों भाई नैन हैं, हिन्दू मूसलमान ।
 दादू संसा आरसी, देखत दूजा होइ,
 भरम गया दुबिधा मिटी, तब दूसर नाहीं कांड ।
 किससों बैरी होय रहा, दूजा कोई नाहि,
 जिसके अंग थैं उपजा, सोई है सब माहि ।

अपनी खुदी यानी अहंकार को मिटाना, एक ईश्वर की पूजा करना, अपने तन को बुरे कामों से और मन को बुरे खयालों से बचाना, और किसी जानदार का बुरा न चाहना, ऐ दादू ! यही मज़हब का निचोड़ है । वही आदमी संत है जो किसी जानदार से भी दुश्मनी न कर । ऐ दादू ! सब के अन्दर एक ही आत्मा है । कोई हमारा दुश्मन नहीं है । हमने सब अच्छी तरह खोज कर देख लिया है, कोई ग़ैर नहीं है । क्या हिन्दू और क्या मुसलमान सब के अन्दर एक ही आत्मा काम कर रही है । मर्द और औरत के अलग अलग नाम रख कर लोग धोके में पड़ गए हैं । मर्द और औरत हिन्दू और

मुसलमान सब के अन्दर एक ही आत्मा काम कर रही है। हिन्दू और मुसलमान दोनों एक दूसरे के भाई भाई हैं। दोनों एक ही जिस्म के दो हाथ, दो पैर, दो कान और दो आँखों की तरह हैं। शक की आगसी में हमें दो दिखाई देते हैं, इसी से हम धोके में पड़ जाते हैं। जब यह धोका जाता रहता है, और शक मिट जाता है तब फिर कोई दूसरा नहीं रह जाता। ऐ दादू ! तू किसमे दुश्मनी कर रहा है ? कोई गैर है ही नहीं, वही अल्लाह जिम्मे तुझे अपने से पैदा किया वही सब के अन्दर मौजूद है।

मन्दिर और मसजिद के फरक का जिक्र करने हुए दादू कहता है—

हिन्दू लागै देहुरे, मुसलमान मसीत.

हम लागै इक अलेख सों, सदा निरंतर प्रीत,

न तहां हिन्दू देहुरा, न तहां तुरूक मसीत,

दादू आपै आप है, नहीं तहां रह रीत,

यहु मसीत यहु देहुरा, सतगुरु दिया दिग्वाइ.

भीतर सेवा बन्दगी, बाहर काहे जाइ ।

दून्यों हाथी हूँ रहे, मिलि रस पिया न जाइ,

दादू आपा मेटि कर दून्यों रहे समाइ ।

दादू द्वै पख दूर कर, निरपख निरमल नांव,

आपा मेटै हरि भजै, ताके मैं बलि जाउं ।

दादू पंथों परि गए, बपुरे बारह बाट,

इनके संग न जाइये, उलटा औघट घाट ।

हिन्दू मन्दिर से चिपटा हुआ है मुसलमान मसजिद से, हम उमी

एक अल्लाह से लों लगाए हैं जो बे-निशान है। हमारी हर वक्त, उससे लौ लगी हुई है। न वहाँ मन्दिर की ज़रूरत है, न मसजिद की। वहाँ वह आप ही आप मौजूद है। उसकी पूजा के लिये किसी खास रीत रिवाज की भी ज़रूरत नहीं है। सच्चं गुरु ने हमें दिखा दिया है कि आदमी का यह जिस्म ही मसजिद है और यही मन्दिर है। इसके अन्दर ही आदमी खुदा की सेवा बन्दगी कर सकता है, बाहर जाने की ज़रूरत नहीं है। हिन्दू और मुसलमान दोनों दाँ पागल हाथियों की तरह हो रहे हैं, इसी लिये दाँनों मिल कर पानी नहीं पी सकते, यानी दोनों मिल कर ज़िन्दगी का लुत्फ नहीं उठा सकते। अपनी खुदी को मिटा कर दोनों आनन्द के साथ एक जगह समा सकते हैं। ऐ दादू ! इन दोनों के मेरे तरे से हट कर तू उस मालिक का पाक नाम ले जो इस सब मेरे तरे से ऊपर है। मैं उसी आदमी पर कुरबान हूँ जो अपनी खुदी को मिटा कर ईश्वर का भजन करता है। ऐ दादू ! ये लोग अपने अपने पंथों में पड़ गये, इसी लिये टुकड़े टुकड़े हो गये। इन का साथ छोड़, इनका रास्ता उलटा और बरबादी का है।

खुदा सब के अन्दर किस तरह मौजूद है इसे बयान करते हुए दादू ने कहा है—

जीयें तेज तिलस्त्रि में, जीयें गन्ध फुलस्त्रि,

जीयें माखन शीर में, ईयें रब्ब रुहस्त्रि,

ईयें रब्ब रुहस्त्रि में, जीयें रूह रगस्त्रि,

जीयें जेरो सूर में, ठण्डो चन्द्र बसस्त्रि,

जिन यह दिल मन्दिर किया, दिल मन्दिर में सोह,

दिल माहें दिलदार है, और न दूजा कोई ।

जिस तरह तिलो में तेल, फूलों में खुशबू और दूध में मक्खन है, उसी तरह सब रूहों में खुदा है। खुदा सब रूहों में उसी तरह मौजूद है जिस तरह रंगों के अन्दर रूह मौजूद है, जिस तरह सूरज में रोशनी और चाँद में ठंडक मौजूद है। जिस खुदा ने हमारे इस दिल के मन्दिर को बनाया है वही इस दिल के मन्दिर में बैठा हुआ है। हर दिल में दिलदार मौजूद है, कोई ग़ैर नहीं है।

अल्लाह के नामों का जिक्र करते हुए दादू ने कहा है—

बाबा नहीं दूजा कोइ

एक अनेक नांव तुम्हारे, मोपैँ और न होइ,

अलख इच्छाही एक तूँ, तूँ ही राम रहीम,

तूँ ही मालिक मोहना, केशो नांव करीम,

साईँ सिरजनहार तूँ, तूँ पावन तूँ पाक,

तूँ कायम करतार तूँ, तूँ हरि हाज़िर आप,

रमता राजिक्र एक तूँ, तूँ सारंग सुवहान,

क्रादिर करता एक तूँ, तूँ साहिब सुलतान,

अविगत अल्लाह एक तूँ, गनी गुसाईँ एक,

अजब अनूपम आप है, दादू नांव अनेक।

इस सब के माइने साफ़ हैं।

इस सवाल पर गुरु नानक और गुरु गोविन्द सिंह के शब्द भी देखने के काबिल हैं। सिख मज़हब के चलाने वाले गुरु नानक कबीर साहब ही के आखिरी दिनों में हुए हैं। कबीर और दादू ही की तरह गुरु नानक के चेलों में भी हिन्दू और मुसलमान दोनों शामिल थे। गुरु नानक खुद कबीर साहब के

बहुत बड़े प्रेमी थे। सिखों की मजहबी किताब आदि ग्रन्थ में सिख गुरुओं की वाणी के साथ साथ कबीर साहब और कई दूसरे मुसलमान संतों और फकीरों की वाणी भरी हुई है। सिख मजहब जिस तरह गुरु दृष्टा, वह हिन्दू मुसलमानों के मेल का मजहब था। गुरु अर्जुन को जब अमृतसर के गुरुद्वारे की नींव रखने के लिये किसी ईश्वर भक्त की जरूरत हुई तो उन्होंने मशहूर मुसलमान फकीर साईं मियांमीर को इस काम के लिए चुना। गुरुद्वारे को नींव साईं मियांमीर ही के हाथ की रक्खा हुई है। गुरु नानक ने अपने जमाने के हिन्दू और मुसलमानों की नासमझी पर दुखा होकर कहा है -

न हम हिन्दू न मुसलमान, दोनों बीच बसे शैतान.

तगा न हिन्दू पाइया, तगा न मुसलमान।

दावा राम रहीम कर, लब्धे बेईमान।

हम न हिन्दू हैं न मुसलमान, इन दोनों को शैरियत के शैतान ने बहका रक्खा है, इसी लिये न हिन्दू को रास्ता मिलता है न मुसलमान को। ये दोनों राम और रहीम को दां समझ कर लड़ते हैं। इन्हें किसी को एक खुदा पर ईमान नहीं है।

गुरु गोविन्द सिंह ने कहा है—

कोऊ भयो मुंडिया सन्यासी कोऊ योगी भयो,

कोऊ ब्रह्मचारी, कोऊ जतियन मान बो,

हिन्दू तुरुक कोऊ, राफ़ज़ी, इमाम शाफी,

मानस की जाति सबै इककै पहचान बो।

करता करीम सोई राज़िक्र रहीम ओई,
 दूसरो न भेद कोई भूल भ्रम मानबो ।
 एक ही की सेव सब ही को गुरुदेव एक,
 एक ही सरूप, सबै एकै जोत जान बो ।
 देहुरा मसीत सोई पूजा और नमाज ओई,
 मानस सबै एक पै अनेक को भ्रमाव है ।
 देवता अदेव जच्छ गंधर्व तुरुक हिन्दू,
 न्यारे न्यारे देसन कं भेसन को प्रभाव है ।
 एकै नैन एकै कान एकै देह एकै बानि,
 खाक बाद आनिश औ आब को रलाव है,
 अल्लह अभेद सोई पुरान औ कुरान ओई,
 एक ही सरूप सबै एक ही बनाव है ।

कोई अपने को मु डिया कहता हैं, कोई सन्यासी, कांई यांगी कांई
 ब्रह्मचारी और कांई जति, कांई हिन्दू, कांई मुसलमान, कांई राज़ी
 और कांई सुन्नी । ये सब फ़रक़ भूटे हैं । आदमी आदमी सब का
 एक ही जात है, सब बराबर हैं । सब का एक ही खुदा है । वही
 सब का कर्ता (बनाने वाला) है, वही करीम (सबका भला करने
 वाला), वही राज़िक्र (सबको रोज़ी देने वाला) है । वही रहीम (सब
 पर दया करने वाला) है । किसी का कोई अलग खुदा नहीं है । ये
 सब फ़रक़ भूल और धोका हैं । सबको उसी एक खुदा की सेवा
 वन्दगी करनी चाहिये । वही सबका गुरुदेव है । सब आदमियों की
 एक ही सी शकल है । सबके अन्दर एक ही अल्लाह की जोति काम
 कर रही है । जो मंदिर में है वही मसजिद में है, जो पूजा है वही

नमाज़ है। सब आदमी एक हैं, हम जो अलग अलग समझ बैठे हैं यह सिर्फ़ हमारा वहम है। देवता, अदेव, यक्ष, गन्धर्व, हिन्दू, मुसलमान सब सिर्फ़ अलग अलग देशों के अलग अलग रीत रिवाज का नतीजा हैं। सबकी एक ही सी आँखें, एक ही से कान, एक ही सा जिस्म, एक ही सी ज़बान। सबके जिस्म उसी मिट्टी हवा आग और पानी से बने हैं। जो अल्लाह है वही अभेद है। जो पुराण में है वही कुरान में है। सब का एक ही रूप और एक ही बनाव है।

अब तक हमने इन संत महात्माओं की बाणी में से इस तरह की चीज़ें दी हैं जिनमें सब मज़हबों की बुनियादी एकता, ईश्वर का एक होना, और सारे इन्सानी समाज की मोटी मोटी नासमझियों का ज़िक्र है। इनके अलावा, ख़ास कर कबीर और दादू ने जगह जगह अलग अलग मज़हब वालों की एक एक बुराई को भी बड़े ही ज़लते हुए लफ़्ज़ों में दिखाया है। अब हम इस तरह को कुछ मिसालें देने हैं। हिन्दुओं की छुआ छूत का ज़िक्र करते हुए कबीर साहब कहते हैं—

पांढे ! बूझि पियहु तुम पानी !

जेहि मिटिया के घर महं बैठे, तामहं सिस्टि समानी,

छपन कोटि जादव जहं भीजे, मुनि जन सहस अठासी,

पैग पैग पैगम्बर गाढ़े, सो सब सरिभो माटी,

तेहि मिटिया के भांढे, पांढे ! बूझि पियहु तुम पानी !

मच्छ कच्छ घरियार बियाने रुधिर नीर जल भरिया,

नदिया नीर नरक बहि आवे पसु मानस सब सरिया

हाव रुरि रुरि गूढ़ गरि गरि, दूष कहांते आया ?

नो लै पांडे ! जेवन बैठे, मटियहि छूत लगाया ।

वेद कतेब छांड देहु पांडे ! ई सब मनके भरसा,

कहहि कबीर ! सुनहु ओ पांडे ! ई सब तोहरे करमा ।

ऐ पांडे ! तुम आदमी की जात पूछ कर उसके हाथ से पानी पीते हो । जिस मिट्टी के घर में तुम बैठे हुए हो उसी मिट्टी में मारी नखलूक (सृष्टि) खप गई है । इसी मिट्टी में पुष्पन करण यादव और अटामी हजार मुनि मिलकर एक हो गये हैं । कदम कदम पर पैगम्बर गड़े हुए हैं । वे सब भी गल कर इसी मिट्टी में मिल गये हैं । ऐ पांडे ! उसी मिट्टी के बने हुए एक बरतन तुम भी हो । फिर भी तुम दूसरे आदमी की जात पूछ कर उसके हाथ से पानी पीते हो । जिस नदी का तुम पानी पीते हो उसके अन्दर अनगिनत मछली, कछु और झड़ियाँ बियाते रहते हैं । उन सबका खून और पानी उसीमें मिलता रहता है । दुनिया भर का नरक बह बह कर नदी में आता है । आदमी और जानवर सब उसी में सड़ते रहते हैं । जिस दूध को लेकर तुम खाने के लिये बैठते हो वह कहाँ से आता है ? हड्डियाँ भर भर कर और गोश्त गल गल कर इन्हीं से दूध बनता है । और तुम मिट्टी को छूत लगाते हो । ऐ पांडे ! वेद और शास्त्रों के हवाले देना छोड़ दो यह सब तुम्हारे मन की गढ़न्त है । कबीर कहते हैं ऐ पांडे ! यह सब तुम्हारे करतूत हैं ।

पंडित भूले पढ़ि गुनि वेदा, आप अपन पों जानि न भेदा ।

मंध्या तरपन औ पटकरमा, ई बहुरूप करहि अस धरमा,

गायत्री जुग चारि पढ़ाई, पूछहु जाह मुक्ति किन पाई,

और के छिये लेत हो मीचा, तुमते कहाँ कौन है नीचा ?

हैं गुन गरब करो अधिकाई, अधिके गरब न होइ भलाई,
जामु नाम है गरब प्रहारी, सो कय गरबाह सकै महारी ।
कुल मरजादा खोय के, खोजिनि पद निरबान,
अंकुर बीज नसाय के, भये विदेही थान ।

ऐ, पंडित ! तुम वेद पढ़ पढ़ा कर भी भूल गये । तुमने अपने आपको न पहचाना । मंध्या तर्पण और तरह तरह के कर्म काण्ड तुम करते हो, गायत्री भी जपते जपाते हो, यही करते कराते तुम्हें युग बीत गये, पर इस सबके करने से तुम्हें मुक्ति (निजात) नहीं मिली । क्योंकि दूसरे आदमी के छू जाने से तुम अपने ऊपर पाक होाने के लिये पानी छिड़कते हो । बताओ तुमसे ज्यादाह नीच और कौन हो सकता है जो आदमी के छूने से परहेज करते हो ? तुम अपने को ऊंचा समझते हो, और इसका तुम्हें घमण्ड है । इससे तुम्हारा भला नहीं हो सकता । जिस ईश्वर का नाम : वर् प्रहारी (घमण्ड को चूर करने वाला) है वह तुम्हारे इस झूठे घमण्ड को कैसे सह सकता है ? मोक्ष (निजात) उसी को मिल सकती है जो जात पात खानदान ऊंच नीचके सब घमण्डों को उमी तरह अपने अन्दर से मिटा दे जिस तरह बीज अपने आपको मिट्टी में मिला कर स्वतम कर देता है । तब ही उसमें से मुक्ति का अंकुर फूट सकता है ।

खुद मांस खाने वाले और दूसरों से परहेज करने वाले ब्राह्मणों से कबोर साहब कहते हैं—

पंडित ! अचरज एक बड़ होई,
एक मरे मुवले अन्न नहि खाई, एक मरे सिभे रसोई,
करि सनान देवन की पूजा, नव गुनि कांध जनेऊ,

हंडिया हाड़ हाड़ थरिया मुख, अब पट करम बनेऊ,
धरम कथै जहां जीव बधै तहां, अकरम करे मोरे भाई,
जो तोहरा को ब्राह्मन कहिये, काको कहिये कसाई ?
कहहि कबीर सुनहु हो सन्तो ! भरम भूलि दुनियाई
अपरमपार पार परसोतम, या गति बिरले पाई ।

ऐ पंडित ! मुझे बड़ा अचरज हो रहा है कि जब कोई घर का या मुहल्ले का आदमी मर जाता है तब तो तुम नापाकी मान कर खाना नहीं खाते, और बकरा मरा हुआ लेकर उसकी रसोई पकाते हो ! और फिर नहा कर पूजा करके कंधे पर जनेऊ डाल कर उसे खाने बैठते हो ! तुम्हारी हंडिया में भी हड्डियां होती हैं और सामने थाली में भी मुरदे की हड्डियां रहती हैं, कहो यह कैसा धर्म कर्म है ? जहाँ तुम धर्म की बात करते हो वहीं दूसरे की जान लेते हो । ऐ भाई ! यह ठीक काम नहीं है । अगर तुम्हें ब्राह्मन कहा जावे तो क़साई किसको कहा जावे ? कबीर कहते हैं, ऐ संतो ! सुनो यह सब दुनिया धोके में पड़ी हुई है । इस बात को बहुत कम लोग समझते हैं कि एक ही परमात्मा सब के घट में मौजूद है ।

हिन्दू और मुसलमान दोनों अपने अपने धर्मों के बहाने से ज़बान के सवाद में पड़े हुए हैं, इसे बयान करते हुए कबीर साहब कहते हैं—

सन्तो ! राह दुनो हम बीठा !

हिन्दू तुल्लू हटा नहि मानें, स्वाद सभनि को मीठा,

हिन्दू बरत एकादसि साधें दूध सिंवारा सेती,

अन्न को त्यागै मन को न हटकै, पारन करै सगोती,

तुरक रोजा निमाज गुजारें, बिसमिल बांग पुकारें,
 इनकूँ भिस्त कहाँ ते होई, सांभे मुरगी मारें,
 हिन्दु की दया मेहर नुरकन की, दोनों घट सों त्यागी,
 वै हलाल वै भटका मारें आगि दुनों घर लागी ।

हिन्दु तुरक की एक राह है, मतगुरु इहै बताई,
 कहहि कबीर सुनहु हो सन्तो ! राम न कहुं खुदाई ।

ऐ सन्तो ! हमने इन दोनों रास्तों का अच्छी तरह देख लिया है । हिन्दू और मुसलमान दोनों अपना अपनी ज़िद में पड़े हुए हैं । दोनों ज़बान के सवाद में फंसे हुए हैं । हिन्दू एकादशी का व्रत करते हैं, और अपने सब सगों को साथ बिठा कर दूध और सिंघाड़े उड़ाते हैं, अनाज से परहेज़ करते हैं, पर अपने मन को मज़ेदार चीज़ों से नहीं रोकते । मुसलमान रोज़ा रखते हैं शाम को नमाज़ पढ़ते हैं अज़ान देते हैं और उसी शाम को ज़बान के सवाद के लिये मुरगी मारते हैं । बहिश्त में जाने का यह रास्ता नहीं है । हिन्दुओं ने अपने दिल से दया का मिटा दिया । मुसलमानों ने अपने अन्दर से मेहर का छोड़ दिया । एक हलाल खाते हैं दूसरे भटका खाते हैं । चटोरपन की आग दोनों घरों में लगी हुई है । सच्चे गुरु ने हमें बताया है कि हकीकत में हिन्दू और मुसलमान दोनों के लिये रास्ता एक ही है । कबीर कहते हैं ऐ सन्तो ! सुनो, राम और खुदा में फ़रक नहीं है, पर हिन्दू और मुसलमान दोनों उसके रास्ते से भटके हुए हैं ।

भूटे मजहबी गुरुओं की हालत वयान करते हुए कबीर साहब कहते हैं—

सन्तों ! देखत जग बौराना,
 सांच कहों तो मारन धावै झूठं जग पतियाना ।
 नेमी देखा, धरमी देखा प्रात करहिं अस्नाना,
 आतम मारि पखानहिं पूजै' उनि मंह कछु न ज्ञाना ।
 बहुतक देखा पीर औलिया पढ़ें कतेब कुराना,
 कै सुरीद तदबीर बतावै' उनि मंह उहै जो ज्ञाना ।
 आसन मारि डिंभ धरि बैठे मन मंह बहुत गुमाना,
 पीतर पाथर पूजन लागे तीरथ गरब भुलाना,
 माछा पहिरै' टोपी पहिरै' छाप तिलक अनुमाना,
 साखी शब्दै गावत भूले आतम खबरि न जाना ।
 हिन्दु कहैं मोहि राम पियारा तुरुक कहैं रहिमाना,
 आपस मंह दोउ लरि लरि मूए मरम काहु नहिं जाना ।
 घर घर मन्तर देत फिरत हैं महिमा के अभिमाना,
 गुरु सहित सीस सब बूड़े अन्त काल पछताना,
 कहहि कबीर सुनहु हो सन्तो ! ई सब भरम भुलाना,
 केती कहूँ कहा नहिं मानें सहजै सहज समाना ।

. . .

काजी सो जो काज बनावे नहिं अकाज से राजी,
 जो अकाज की बात चलावे सो काजी नहिं पाजी ।
 कबीर सोई पीर है जो जाने पर पीर,
 जो पर पीर न जानई सो काफिर बे पीर ।

ऐ सन्तो ! देखते देखते दुनिया पागल हो रही है । सच्ची बात
 कहो तो मारने को दौड़ते हैं, झूठ में सब को यकीन है । बहुत से

नेमी और धर्मी देखे । मुवह उठकर नहाते हैं, ज़िंदा जानवर को मार कर खा जाते हैं, और पत्थर के देवता की पूजा करते हैं । इन लोगों को कुछ भी समझ नहीं है । ऐसे ही बहुत से पीर और औलिया देखे जो कुरान पढ़ते हैं, ये अपने मुरीदों का क्या तदबीर बतावेंगे, उन्हें खुद कुछ पता नहीं है ! इस तरह के भूटे गुरु आसन लगा कर ढोंग के साथ बैठ जाते हैं । दिल में अपने को बहुत बड़ा समझते हैं । पीतल और पत्थर की मूर्तियों को पूजते हैं । तीर्थों के घमंड में भूले हुए हैं । माला पहनते हैं टोपी पहनते हैं, बड़े बड़े तिलक लगाते हैं, साखी शब्द गाते हैं, पर इन्हें अपने अन्दर की खबर नहीं है । हिन्दू कहते हैं हमारा खुदा राम है । मुसलमान कहते हैं हमारा खुदा रहमान है । दोनों आपस में लड़ लड़ कर मरे जाते हैं । असलीयत की किसी को खबर नहीं है । अपने बड़प्पन के घमण्ड में घर घर चले मूँड़ते और मंत्र देते फिरते हैं । गुरु और चेले ये दोनों डूबेंगे । आखिर में दोनों को पछताना पड़ेगा । कबीर कहते हैं, ऐ सन्तों ! यह सब धोके की चीज़ें हैं । कहाँ तक कहा जावे, लोग कहना नहीं मानते । वह ईश्वर सब के अन्दर और सब में एक बराबर मौजूद है । असली क़ाज़ी वह है जो दूसरों का काम संवारे, और जो किसी बुरे काम से राज़ी न हो । जो कोई बुरा काम करने को कहे उसे क़ाज़ी नहीं पाजी कहना चाहिये । ऐ कबीर, सच्चा पीर वही है जो दूसरों की पीर यानी तकलीफ़ को समझे, जो दूसरों की तकलीफ़ को तकलीफ़ न समझे वह पीर नहीं, काफ़िर और बे पीर है ।

मन्दिर और मसजिद के भगड़े के बारे में दादू ने कहा है—

आप चिणावे देहुरा तिसका करहि जतन,
 परतखि परमेसुर किया सो भानै जीव रतन ।
 मसीत संवारी मानसों तिसकूं करै सलाम,
 ऐन आप पैदा किया सो ढावै मुसलमान ।
 यहु मसीत यहु देहुरा सत गुरु दिया दिग्वाइ.
 भीतर सेवा बन्दगी बाहर काहे जाइ ।
 हौद हज़ूरी दिल ही भीतर गुस्ल हमारा सारं,
 उजू साज अल्लह के आगे तहां निमाज गुजारं ।
 काया मसीत करि पंच जमाती, मन ही मुला इमामं,
 आप अलेख इलाही आगे सिजदा करे सलामं ।

जित मन्दिर को हिन्दू अपने हाथों से चुनते हैं उसका तो बड़ी देख रेख करते हैं, पर आदमी या जानवर का जिस्म जो खुद ईश्वर का बनाया हुआ मंदिर है उसे ताड़ डालते हैं यानी मार डालते हैं। इसी तरह मुसलमान आदमी की बनाई हुई मसजिद की तो इज्जत करते हैं, और खुद खुदा की बनाई हुई इमारत (यानी जानदार के जिस्म) को टा देते हैं। सच्चे गुरु ने हमें दिखा दिया है कि आदमी का यह जिस्म ही मसजिद है, और यही मन्दिर है। इसी के अन्दर बैठ कर हम अल्लाह की सेवा बन्दगी कर सकते हैं, कहीं बाहर जाने की ज़रूरत नहीं है। दिलके अन्दर ही ईश्वर के वजूद का हौज़ भरा हुआ है। उसमें हम अच्छी तरह नहा सकते हैं, और वज़ू करके वहीं पर अल्लाह के सामने नमाज़ पढ़ सकते हैं। हमारा यह जिस्म ही मसजिद है। हमारे पाँचो हवास (इन्द्रियाँ) जमाअत (साथ साथ नमाज़ पढ़ने वाले) हैं।

अपना मन ही मुल्ला और इमाम है। उम इमाम को सामने करके हमें उसी अलेख अल्लाह के सामने मिजदा करना चाहिये और उमी को सलाम करना चाहिए।

मूर्ति पूजा का जिक्र करते हुए दादू ने कहा है—

मूर्त गढ़ी पखान की कीया सिरजनहार,
दादू सांच सूके नहीं यूँ डूबा संसार।
आतम माहीं राम है पूजा ताकी होइ,
सेवा बन्दन आरती साध करें सब कोइ।
माहें निरंजन देव है माहें सेवा होइ,
माहें उतारे आरती, दादू सेवक सोइ।

पत्थर की मूर्त बनाकर लोग उसे ईश्वर मानने लगते हैं। ऐ दादू ! इन लोगों को सच्चा ईश्वर दिखाई नहीं देता, इसी लिए दुनिया डूब रही है। राम अपनी आत्मा के अन्दर ही मौजूद हैं, वहीं उनकी पूजा करनी चाहिये। सच्चे भक्त अपने अन्दर के राम की ही सेवा बन्दगी करते हैं। ऐ दादू ! सच्चा सेवक वही है जो अपने अन्दर के निरंजन देव की आरती करे।

ऊपर के रीत रिवाजों पूजा पाठों पर दादू ने कहा है—

दादू ! बांधे वेद बिधि धरम करम उरभाइ,
मरजादा माहीं रहे सुमिरन किया न जाइ।
इसकलि केते हूँ गए हिन्दू मूसलमान,
दादू साची बन्दगी झूठा सब अभिमान,
पोथी अपना पिंड करि हरि जसमाहें लेख,
पंडित अपना प्रान करि दादू कथहु अलेख,

कामा कतेब बोलिये लिख राखों रहमान,

मनुवां मुल्ला बोलिये सुरता है सुबहान ।

ऐ दादू ! लोगों को वेद शास्त्रों के रीति रिवाजों ने जकड़ रक्खा है । इसी से धोके में पड़े हुए हैं । लोग ऊपर के रीत रिवाजों में फंसे हुए हैं, इसीलिए उस मालिक का सच्चा सुमिरन यानी उसकी दिल से याद नहीं कर पाते ।

इस कलजुग में कितने ही हिन्दू और मुसलमान हो गए । ऐ दादू ! उस ईश्वर की बन्दगी ही सच्ची है बाक़ी सब धमंड भूठा है । अपने जिस्म ही को किताब बनाना चाहिए, उस किताब के अन्दर ईश्वर का नाम लिखा हुआ मौजूद है । अपनी जान ही को पण्डित मानना चाहिए । और उसी पण्डित से उस अलेख ईश्वर का नाम इस जिस्म की किताब में पढ़ना चाहिये । इसी किताब में रहमान लिखकर अपने मन को मुल्ला बना कर उस सुबहान (ईश्वर) के सामने दुआ माँगनी चाहिये ।

दादू ! पाती प्रेम की, बिरला बाँचे कोय,

वेद पुराण पुस्तक पढ़े, प्रेम बिना का होय ।

इसका मतलब साफ़ है ।

ऊपरी रीत रिवाज को ऋजूल बताते हुए दादू ने कहा है—

साँचा राम न जाने रे, सब झूठ बखाने रे.

झूठे देवा झूठी सेवा झूठा करे पसारा,

झूठी पूजा झूठी पाती, झूठा पूजन हारा,

झूठा पाक करे रे प्राणी, झूठा भोग लगावे,

झूठा आवा पढ़दा देवे, झूठा थाल बजावे,

भूटे बकता भूटे सुरता, भूठी कथा सुनावे,
 भूठा कलयुग सबको माने, भूठा भरम दिढ़ावे,
 थावर जंगम जल थल सहियल, घट घट तेज समाना,
 दादू आतम राम हमारा आदि पुरुष पहचाना ।

लोग मन्चे राम को नहीं पहचानते, सब भूठा बातें करते हैं ।
 भूटे देवता, भूठी सेवा, भूठा फैलाव. भूठी पूजा, भूठा चढ़ावा,
 भूठा पूजने वाला, भूठा खाना और भूट मूठ का भोग, भूठा
 परदा, भूठा थाल बजाना, भूठा कहने वाला, भूठा सुनने वाला,
 और भूठी कथा, कलयुग के आदमी इन सब भूठी चीज़ों को मानते
 हैं और भूठी बातों में लोगों का यक़ीन जमाते हैं । सच्ची बात यह है
 कि जानदार और वेजान सबके अन्दर जल और थल सब में, सबके
 घट के अन्दर उसी एक ईश्वर का तेज (नूर) समाया हुआ है ।
 ऐ दादू ! जो सबकी आत्माओं के अन्दर रहने वाला है वही हमारा
 राम है, वही एक हमेशा से है और हमेशा रहेगा ।

असली दीन या धर्म क्या है इसे बयान करते हुए दादू ने
 कहा है—

सोई साध सिरोमणी गोविन्द गुन गावे,
 राम भजे विषया तजे आपा न जनावे,
 मिथ्या मुख बोले नहीं, पर निन्द्या नाहीं,
 अवगुन छाड़े गुन गहे, मन हरिपद माहीं,
 निरबैरी सब आत्मा पर आतम जानै,
 सुखदाई समिता गहै आपा नहि आनै ।
 आपा पर अन्तर नहीं निर्मल निज सारा,

मतवादी साचा कहे लैखीन बिचारा।

निरभै भज न्यारा रहे काहू खिपत न होइ।

दादू सब संसार में ऐसा जन कोइ।

वही भक्त सबसे अच्छा है जो उस एक ईश्वर के गुण गावे, उसी का भजन करे, अपने नफ़्त पर क़ाबू रखे, किसी से घमंड न करे, मुंह से झूठ न बोले, किसी दूसरे की बुराई न करे, बुरे कामों से बचे, नेक काम करे, जिसका दिल खुदा के क़दमों में लगा रहे, जो किसी के साथ दुश्मनी न करे, दूसरों को अपनी ही तरह समझे, सबको सुख पहुंचावे, सबको बराबर समझे, अपनी खुदी को बीच में न लावे, अपने और पराए का कोई फ़रक़ न करे, सबमें एक ही पाक परवरदिगार का नूर देखे, हमेशा सच बोले, अपने अन्दर ही ढूँढा रहे, निडर होकर खुदा की बन्दगी करे, किसी से मोह या लगाव न रखे। ऐ दादू ! इस सारे संसार में ऐसे आदमी बहुत ही कम हैं।

४

दुनिया में हजारों बरस से “वसुधैव कुटुम्बकम्” की आवाज़ें उठ रही हैं यानी यह कि इस वसुधा, इस ज़मीन के सब रहने वाले एक छोटा सा कुटुम्ब एक ख़ानदान हैं। हमने अभी देखा है कि कोई मज़हब ऐसा नहीं जिसने अपने मानने वालों के सामने यह मक़सद, यह लक्ष्य, न रक्खा हो। हमने यह भी देख लिया कि कोई संत या महात्मा, सूफी या फ़कीर, ऐसा नहीं हुआ जिसके दिल की सब से बड़ी उमंग यह न रही हो कि इनसानी दुनिया के बीच में जो दीवारें आदमी को एक दूसरे से

अलग करने वाली रह गई हैं, और जो इन्हें एक नहीं होने देतीं, वह किसी तरह टूट जावेँ। कुदरत का भुकाव भी इसी तरफ है। वह भी इनसानी समाज को इसी तरफ लिए जा रही है। वेद में आया है कि—

समानी व आकृतिः, समाना हृदयानि वः, समानमस्तु वो मनो,
यथा वः सुसहासति, समानी प्रपा, सह वो अन्न भागः, समाने योक्ते,
सहवो युनज्मि, सम्यञ्चो अग्निम् स्पर्धन्त, अरानामिमिवामितः ।
संगच्छध्वं, संवदध्वं, संवो मनान्मि जानताम् ।

तुम सबकी गरज एक हो, सब के दिल मिले हुए हों, सबके मन मिले हुए हों, इसी में सबका भला है। तुम सब मिलकर काम करो, मिलकर खाओ पियो, ईश्वर ने तुम सबको एक ही बड़े काम में लगा रखा है। आत्मा की आग तुम्हें उसी तरह एक तरफ ले जा रही है जिस तरह पहिये के सब आरे नेह को एक ही तरफ चलाते रहते हैं। तुम सब मिलकर चलो, एक आवाज़ से बोलो, सबके दिमाग एक तरह काम करें और एक सच्चाई को समझें।

जिस दुनिया की तसवीर इस वेद मंत्र में खींची गई है, उसी दुनिया के आने की नवेद यानी खुशखबरी हर मजहब हमें देता रहा है, और हर मजहब ने दुनिया को ऐसा ही बनाने की कोशिश की है। जैसे, दुनिया के सब मुल्कों और सब ज़मानों के रसूलों को सामने रख कुरान कहता है कि—

“ऐ रसूलो ! सच मुच तुम्हारी ये सब अलग अलग उम्मतें (मजहब या फ़िरक़े) एक ही उम्मत हैं और मैं तुम सबका रब्ब हूँ, सो तुम मुझसे डरते रहो। लेकिन लोगों ने अपने दीन के आपस में

डुकड़े डुकड़े कर डाले और हर गिरोह के पास जो कुछ है वह उसी में फूला हुआ है ।” (मोमेनून, ५६-५४)

इज़्ज़ील में लिखा है कि—

‘तुम सब के दिमाग मिलकर चलें । सबको एक दूसरे से हमदर्दी हो । सब भाई भाई का तरह एक दूसरे से प्रार्थना करें । सबके दिल में दया हो । सब में दीनता हो । कोई बुराई का बदला बुराई से न दे, न गाली के बदले में गाली दे । सब एक दूसरे का भला चाहें । सबके दिल मिले हों । सब एक दूसरे के साथ अमन से रहें ।’ (कुर्रिथियों के नाम खत) “ईश्वर आदमी आदमी में कोई फ़रक नहीं करता, कोई किसी भी क्रौम का हो जो कोई ईश्वर में डरता है और नेक काम करता है ईश्वर उसे अपनाता है ।” (रसूलों के ऐमाल) “न कोई यहूदी है न कोई यूनानी न कोई गुलाम है न कोई आज़ाद, न कोई मर्द है न कोई औरत, ईसामसीह के लिए तुम सब एक हो ।” (गिलितियों के नाम खत) ।

चीन के महात्मा किंग फूत्ज़े का कहना है कि—

“अपने सब पड़ोसियों के साथ मेल मिलाप से रहना सीखो । सब भाइयों के साथ मिलकर प्रेम से रहो ।” (शोकिंग)

महात्मा बुद्ध ने कहा है कि—

“और ये सब चलते फिरते आदमी क्या हैं ? ये सब एक जिस्म के हिस्से, हाथ पैर हैं । इसलिए हर हिस्से को हर दूसरे हिस्से की फ़िक्र रखनी चाहिये ।”

हिन्दू धर्म का मशहूर उपदेश है—

अथं निजः परोवेति गणना बहु चेतसाम्

उदार चरितानां तु, वसुधैव कुटुम्बकम् ।

“यह मेरा अपना है और यह गैर है, इस तरह की गिनती वे लोग करते हैं जो छोटे दिल के हैं । लेकिन जो लोग बड़े दिल के हैं वह इस ज़मीन के सब रहने वालों को अपना ही कुटुम्ब (खानदान) समझते हैं ।”

गरज यह कि मजहर्बी किताबों में इस तरह की तालीम भरी पड़ी है ! फिर भी इन्सानी दुनिया अपनी इस मंजिल से अभी दूर दिखाई देती है । इसका सबब क्या है ? इसके दो ही सबब हैं । एक तो यह कि कुछ लोग इस सच्चाई को समझ नहीं पाते । दूसरे यह कि जो लोग समझ लेते हैं वह भी इस पर अमल नहीं करते । मंजिल तक पहुँचने में देर लगने की जिम्मेदारी उनपर नहीं है जो समझ नहीं पाते, इसकी सारी जिम्मेदारी उन लोगों पर है जो समझते हैं और फिर भी इस पर अमल नहीं करते । सच यह है कि दुनिया में इनक़लाब करने वाली, दुनिया को बदलने या उसे सुधारने वाली सब से बड़ी ताक़त अमल है । हमारी बातों, हमारे उपदेशों, और हमारी लफ़्ज़ी बहसों से हमारे कामों का दूसरों पर बहुत ज्यादा असर पड़ता है ।

गीता और कुरान अपने पढ़ने वालों के सामने रखने से हमारी गरज लोगों को सिर्फ़ एक तरह का दिमागी भोजन कराना नहीं है, बल्कि हमारी गरज यह है कि इससे हममें अमल करने की ताक़त पैदा हो । हम यह चाहते हैं कि ये दोनों पाक किताबें अमल की निगाह से पढ़ी जायं । हम चाहते

हैं कि इनके पढ़ने से ईश्वर, खुदा, हमसे वह ताकत पैदा कर दे कि हम अपने अलग अलग मजहब, अपनी कौम, अपने मुल्क, अपने गांव अपने खानदान के उन अलग अलग और खुद गरजी भरे शिकजों को चकना चूर कर दें जो हमें एक दूसरे से तोड़ तोड़ कर अलग किये हुए हैं और एक दूसरे से लड़ाते हैं। हमारा सिर्फ इतना महसूस कर लेना या समझ जाना ही काफी नहीं है कि हम सब एक हैं। जरूरत इस बात की है कि हम अपनी निजी और समाजी दोनों तरह का जिन्दगी में से वह सब बातें मिटा दें जो हमें आदमी आदमी में फरक करने पर मजबूर करती हैं, चाहें वे बातें रीत रिवाज की सूरत में हों और चाहे कानूनी और मजहबी पाबन्दियां (बन्धन) हों।

हमें किसी नये मजहब की जरूरत नहीं है। वह मानव धर्म, वह इन्सानियत का मजहब जिस पर सारे धर्मों और मजहबों की बुनियादें कायम हैं, हमारे लिए काफी है। अब हमें जरूरत है एक नये समाज, नई कलचर, की जिसमें मेरी और तेरी, इस गिरोह की या उस गिरोह की, नहीं, बल्कि इन्सानियत की रूह फुंकी हुई हो, जिसके रहन सहन और रीत रिवाजों में हर आदमी को बराबर की जगह दीजाय, और जिसके कायदे कानून हमारी दल बंदियों और हमारी फूट को टिकाऊ और अमिट बना देने का साधन न बनें। हमें इस तरह के जीवन की जरूरत है जिसकी इमारत आपस की मुहब्बत और एक दूसरे की मदद की गहरी और मजबूत बुनियादों पर खी हो। हमें उस मजहबी सांचे की जरूरत है जो हमें एक

विरादरी, एक क्रीम, एक खानदान, के जीते जागते सांचे में ढाल दे। हमारा यह नया धर्म, हमारी यह नई मिल्लत आज कल के मजहबों की तरह एक दूसरे से गैरीयत और नफरत करने और घिन वरतने का मजहब न हो। हम सबका खुदा ईश्वर इस खुली लामजहबी को इस अधर्म को हमारे दिलों और हमारे कामों से हमेशा के लिए निकाल दे। हमारा मजहब इन्मानीयत का मजहब, मुहब्बत का मजहब, त्याग या ना ईसार का मजहब, इश्क का मजहब, प्रेम का मजहब हो ! यही वह सच्चा मजहब है जिसे दुनिया के सब अवतारों और नबियों, सत्तों और वालियों, साधुओं और फकीरों ने हकीकी मजहब, सच्चा धर्म, मानव धर्म या अदीन बतलाया है !

हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि गीता और कुरान अपने पढ़ने वालों से वह साफ समझ, वह हिम्मत और वह शक्ति पैदा कर दें जिससे वह इन पाक किताबों की सच्ची तालीम पर अमल कर सकें यानी आज कल की हमें बरबाद करने वाली रिवाजी और मनाजी जकड़ बंदियों को तोड़ कर अपने को आजाद कर सकें और नये सिर से एक मिली जुली जिन्दगी, मिली जुली कलचर और सच्चे मानव धर्म (मजहबे इन्सानीयत) के सांचे में अपने को ढाल कर इस मुल्क में फिर एक बार प्रेम के सोते बहा सकें। इसके सिवा हमारे लिए इन्सानी क्रीम की सेवा या अपनी निजात का कोई दूसरा रास्ता नहीं है।

गीता

जिन किताबों को हिन्दू अपनी धर्म की किताबें मानते हैं उनकी तादाद हज़ारों नहीं तो सैकड़ों आसानी से गिनाई जा सकती है। दुनिया में जितने 'धर्म' चल रहे हैं उनमें शायद ही किसी दूसरे 'धर्म' की इतनी किताबें हों। यह बात कुदरती भी है। यूँ तो दुनिया के सब 'धर्म' एक दूसरे से मिलते चले आते हैं, सब एक ही सनातन परम्परा के हिस्से यानी एक पुराने सिलसिले की कड़ियाँ, या एक ही पुराने बड़े पेड़ की चारों तरफ फैली हुई डालियों के अलग अलग फूल हैं। फिर भी जहाँ तक अलग अलग धर्मों मज़हबों के अलग अलग सिलसिलों का सवाल है, हिन्दू धर्म का सिलसिला दुनिया में शायद सबसे पुराना है। यहूदी धर्म का सिलसिला इसके बहुत बाद का है। चीनी धर्म परम्परा भी जहाँ तक मालूम है इससे ज्यादा पुरानी नहीं। इसके अलावा आज से दो ढाई हज़ार साल पहले चीन के धर्म ने जिस जोर का पलटा खाया, हिन्दू धर्म ने वैसा कभी नहीं खाया, या यूँ कहना चाहिये कि खाते खाते रह गया।

आदमी का इतिहास यानी इन्सानी क़ौम की तारीख़ हिन्दुस्तान और चीन से कहीं ज़बादह पुरानी है। हिन्दुस्तान

और चीन की पुरानी तहजीबों (सभ्यताओं) से हजारों साल पहले और भी बड़ी बड़ी नामवर क़ौमें हो चुकी हैं और तरक्की की चोटी तक पहुंच चुकी हैं। दुनिया के लिखे और बेलिखे इतिहास से साफ पता चलता है कि एक तरफ़ ईरान के पहाड़ों से लेकर अरब सागर और हिन्द महासागर तक और दूसरी तरफ़ अफ़्रीका की नील नदी के किनारे किनारे बहुत पुराने जमाने में कम से कम दो बहुत बड़ी क़ौमें जन्म लेकर हिन्दुस्तान और चीन में कहीं पहले हजारों बरस तक आदमी को जिन्दगी का रास्ता दिखा चुकी थीं। पर अब उनकी ज़मीन में गड़ी हुई जड़ें या सूखी हुई शाखें ही कहीं कहीं ढ़ंढ़ने से मिलती हैं। क्रिस्त के अचूक और अटल चक्कर में ठीक वक्त पर अपना रहा सहा खून बाद में आने वाली क़ौमों को देकर और अपने सड़े गले हाड़माँस से उनके लिए खाद तय्यार करके वे क़ौमें और उनकी शानदार तहजीब दुनिया से मिट गईं। जिस तरह इस दुनिया का बनाने वाला बेअन्त है उसी तरह उसकी बनाई हुई दुनिया भी बेअन्त है। हमें इधर या उधर इस दुनिया का ओर या छोर देखने का हौसला नहीं करना चाहिये। हमारी छोटी सी समझ के लिये यह नामुमकिन भी है। लेकिन इतनी बात में कोई शक नहीं कि दुनिया में जो किताबें आज मिलती हैं उनमें ऋग्वेद सबसे पुरानी किताब है, और दुनिया के बचे हुए मजहबी सिलसिलों में हिन्दू सिलसिला सबसे पुराना है। ऋग्वेद की आजकल की १०,५८० ऋचाओं (आयतों) में कितनी शुरु की है और कौन सी कब कब शामिल की गईं इस बहस में

पड़ने की जरूरत नहीं। आजकल के तमाम धर्मों और उनका किताबों को मिलाकर देखने से इसमें कोई शक नहीं रह जाता कि सब धर्मों का असली निकास एक ही ईश्वर अल्लाह से है, सब धर्म पुस्तकों का असली मां जिसें कुरान में 'उम्मुल किताब' कहा गया है उसी ईश्वर के पास है, साथ ही इन सब धर्मों के ज्यादातर रस्मरिवाजों, नाम रूपों, और शब्दों तक का निकास ऋग्वेद और खास कर उसकी शुरू की ऋचाओं से है। इसीलिए बहुत से यूरोप के विद्वानों ने ऋग्वेद को 'सब धर्मों की मां' (मदर आफ़ आल रिलिजन्स) कहा है।

हिन्दू धर्म का किताबों में वेदों का और खासकर ऋग्वेद का सब सबसे ज्यादा मान है। लेकिन वेद इतनी बड़ी चीज़ हैं, उनकी ज़बान इतनी पुरानी और अजीब है और एक एक मन्त्र के इतने इतने तरह से अर्थ लगाए जा सकते हैं कि बंपदे लोगों के लिए ही नहीं विद्वानों के लिए भी हजारों बरस से वेद एक पहेली रहे हैं और हमेशा पहेली ही रहेंगे। वेदों का निचोड़ उपनिषदों को माना जाता है जो बहुत करके वेदों के ही हिस्से हैं। इसमें शक नहीं उपनिषदों या खास खास बारह उपनिषदों का, जिनके सब असली मन्त्रों को मिलाकर दो फ़र्मा की एक किताब भी नहीं बनती, भलाई बुराई नेकी बदी और पाप पुण्य के ऊंचे से ऊंचे असूतों (मारल आइडियलिज्म) . बाराक में वारीक फ़लसफ़े या दर्शन (ट्रान्सेण्डेण्टल मैटाफ़िज़िक्स), ब्रह्म और जीवअल्लाह और रूह की गहरी से गहरी सचाइयों (डीप स्पिरिचुएलिटी) और गहरे अध्यात्म (मारफ़ूत) की वजह से

दुनिया की ऊंची से ऊंची किताबों में एक ऊंची जगह हासिल है। हजारों पढ़े लिखे हिन्दू ऐसे हैं जिनसे अगर किसी बहुत बड़े तूफान या भौंचाल के वक्त पृछा जावे कि तुम अपने सब ग्रन्थों में से किन खास अवहगान को आगे की दुनिया के लिये सबसे ज्यादा बचा कर रखना चाहते हो तो वे कहेंगे—‘उपनिषद्’। हजारों गैर हिन्दू विद्वान भी इस बात में उनकी राय को ठीक बतावेंगे।

लेकिन उपनिषद् भी आमकहम नहीं हैं। उन्हें समझ सकना या उनका रस ले सकना बिरतों को ही वदा है। उपनिषदों के बाद हिन्दुओं में किसी एक पुस्तक का सबसे ज्यादा मान है तो वह श्री मद्भगवद्गीता का। गीता की भाषा और उसके कहने का ढंग इतना आसान है कि उसके पढ़ने पढ़ाने वालों की गिनती भी उपनिषदों के पढ़ने पढ़ाने वालों से हजारों गुना है। गीता माहात्म्य में “सब उपनिषदों” को मिलाकर उनकी बराबरी एक “गाय” के साथ की गई है और गीता को “उस गाय से दुहा हुआ दूध” और “महान अमृत” कहा गया है। मिसाल बहुत दर्जे तक ठीक है। उसी ‘माहात्म्य’ में लिखा है कि जिस आदमी ने गीता को “अच्छी तरह याद कर लिया” उसे फिर “दूसरे शास्त्रों के जमा करने” की कोई जरूरत नहीं। सचमुच गीता अपने जमाने के तमाम हिन्दू शास्त्रों का निचोड़ है। संस्कृत किताबों में जितना गीता का प्रचार है उतना किसी दूसरी किताब का नहीं है। पिछले हजारों बरस में जितनी टीकाएँ या तफसीरें गीता पर लिखी जा चुकी हैं उतनी एक

कुरान को छोड़कर शायद ही दुनिया की किसी दूसरी किताब पर लिखी गई हों। इसमें शक नहीं कम-से-कम अपने ज़माने तक की हिन्दुस्तानी कलचर का गीता सबसे बढ़िया और सबसे सुन्दर चोटी का फूल है। बल्कि गीता उन इनी गिनी किताबों में से है जो देश और काल की चौहद्दों पर ऊपर उठकर दुनिया के हर मुल्क और हर ज़माने के लोगों की एक सी वपौती हैं, जो सबके लिये फायदे और बरपन की चीज़ें हैं और जिनका सबको एक सा फल यानी अभिमान होना चाहिये। गीता दुनिया की उन किताबों में से एक है जो हमेशा ज़िन्दा रहेंगी।

आदमी की खास खास कठिनाइयें यानी मुशकिलें क़रीब क़रीब हर देश और हर ज़माने में एक ही सी रही हैं। इन मुशकिलों या सवालों के बाहरी रूप और उनके नाम बदलते रहे हैं। कभी कोई सवाल ज़्यादा सामने रहा है और कभी कोई। लेकिन इनकी असलीयत नहीं बदली। हर आदमी की आत्मा के अन्दर, और सारे इन्सानेय समाज में, वही स्वार्थ और परमार्थ, खुदी और खुदा के बीच लगातार लड़ाई जारी है। यह लड़ाई नये नये रूप बदलती रहती है। खुदी, छोटी छोटी खुद गारज़ियों की शकल में, आदमी की आँखों पर परदा डाल कर उसे अपने और पराये का फरक सिखाकर, खुद अपनी असली और टिकाऊ भलाई की तरफ से उसे अन्धा कर देती है। यही वजह है कि दुनिया की सब खास खास मज़हबी किताबें इन्सानेय क़ौम के लिए सच्चे उपदेशों

और सच्ची नसीहतों का एक ऐसा सरचश्मा हैं जो कभी मूख नहीं सकता ।

महाभारत के भीष्म पर्व के २५ वें अध्याय (वाच) में ४२ वें अध्याय तक का नाम गीता है । इन १८ अध्यायों में वह बात चीत लिखी है जो महाभारत की लड़ाई के शुरू में श्रीकृष्ण और अर्जुन में हुई थी । लड़ाई के दसवें दिन संजय ने यह बात चीत धृतराष्ट्र को सुनाई थी । संजय कहता है कि—“मैंने यह बात चीत व्यास की कृपा से खुद योग के मालिक कृष्ण के मुंह से सुनी थी” (१८-७५) । भीष्म पर्व के दूसरे अध्याय में लिखा है कि व्यास ने संजय को वह “दिव्य दृष्टि” (रूहानी आंख) दे दी थी जिसमें वह दूर बैठा हुआ लड़ाई का सब हाल देखता और सुनता रहा । बहुत से टीका करने वालों ने यह शक जाहिर किया है कि ठीक लड़ाई के मैदान में जब दोनों फौजें तय्यार खड़ी थीं, इस तरह के कठिन मामलों पर श्रीकृष्ण और अर्जुन का श्लोकों में इतनी लम्बी बात चीत करना और फिर संजय का उन श्लोकों को किसी करामात से दूर बैठे हुए सुनकर याद रखना एक अनहोनी सी बात है और मुमकिन नहीं है । यह बहस यहाँ तक चली कि गीता के सात सौ श्लोकों में से एक टीका करने वाले ने १००, दूसरे ने ३६, तीसरे ने २८ और चौथे ने ७ असली श्लोक खोज निकाले । इन विद्वानों की राय है कि इन असली श्लोकों में जो बात कही गई है वही वह असली बात है जो श्रीकृष्ण ने अर्जुन को समझाई थी, और बाद में उसे बढ़ाकर और श्लोकों की शकल देकर व्यास ने

७०० श्लोकों की गीता तय्यार कर दी। इसी मुशकिल को हल करने के लिए कई विद्वान गीता के अन्दर के लड़ाई के बयान को सिर्फ एक अलंकार (तशबीह या allegory) मानते हैं और कहते हैं कि यह सब आदमी की आत्मा के अन्दर होने वाली नेकी और बदी की लड़ाई का ही बयान है। इस बार में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की यह राय ठीक मालूम होती है कि—“परन्तु जिनको ग्रन्थ का ही रहस्य (राज) जानना है उनके लिए इस बहिरग परीक्षा (बाहरी इस्तहान) के झगड़े में पड़ना आवश्यक नहीं है।” (गीता-रहस्य, विषय-प्रवेश) महाभारत की लड़ाई कभी हुई हो या न हुई हो, उसमें लड़ाई से पहले श्रीकृष्ण और अर्जुन ने इस तरह की बात चीत की हो या न की हो, संजय को अन्दर की आंख मिली हो या न मिली हो, यह जाहिर है कि गीता के श्लोक न श्रीकृष्ण और अर्जुन के बनाए हुए हैं और न संजय के। ये श्लोक व्यास के बनाए हैं। गीता के श्लोकों को इसी शकल में श्रीकृष्ण या अर्जुन के मुंह से निकला हुआ समझना, या गीता की बात चीत को इतिहास की कसौटी पर कसना गीता का ठीक आदर मान करना नहीं है। वह “भगवद्गीता” जो “नमाम उपनिषदों को दुहकर” तैयार की गई है, जिसे पढ़ने के बाद फिर किसी दूसरे शास्त्र को पढ़ने की जरूरत नहीं रह जाती, अपने खास शानदार ढङ्ग से, अपने जमाने की धार्मिक हालत की तसवीर, और साफ रूप में हर मुल्क और हर जमाने की धर्म संकट में पड़ी हुई आत्माओं के लिए (१८-७८)

एक सुन्दर, क्रीमती और अमर सन्देश (पैगाम) है ।

गीता में जगह जगह उस ज़माने के धर्मों की हालत, अलग अलग पंथों, फिरकों, मज़हबी खयालों, पूजा के तरीकों, रस्म रिवाजों, झूठे वहमों, दार्शनिक यानी फ़लसफ़ी अस्मृतों वगैरह का झिंक किया गया है, उनके ठीक होने या ग़लत होने या एक दूसरे के खिलाफ़ होने या न होने पर बहस की गई है; अलग अलग मानताओं और एक ईश्वर की पूजा के अलग अलग तरीकों में बुनियादी एकता दिखाकर उनमें मेल और समन्वय (इत्तहाद) करने की कोशिश की गई है; आत्मसंयम यानी अपने ऊपर क़ाबू हासिल करने को और सदाचार या नेकी को सब मज़हबों की जड़ और आत्मा की तरक्की की पहली सीढ़ी बताया गया है; अपने पराये के फ़रक़ को यानी ग़ैरियत या दुई के परदे को हटाकर “अपनी तरह सबको”, “अपने अन्दर सबको” और “सब में अपने को” देख सकना मुक्ति (निजात) के लिए ज़रूरी बताया गया है; “जड़, चेतन” (ग़ैर जानदार, जानदार) सारी दुनिया में और “सब प्राणियों के दिल में” एक परमेश्वर के दर्शन का उपदेश दिया गया है; और आखिर में इन सब रास्तों को तय करते हुए अपनी आत्मा को पूरी तरह पाक करने और उस पर पूरा क़ाबू हासिल करने के बाद आत्मा की आगे की तरक्की के रास्ते, उसके तरीकों और मंज़िलों की तरफ़ इशारा किया गया है । यही श्रीमद्भगवत् गीता का मज़मून है ।

अब हमें यह देखना है कि इनमें से हरेक बात पर अलग

अलग गाता से हमें क्या पता चलता है और क्या उपदेश मिलता है।

सबसे पहले गीता को समझने के लिए जरूरी है कि हम उस जमाने की हालत, विचारों और रीत रिवाजों को, जहाँ तक उनका गीता से पता चलता है, जान लें।

गीता के शुरू ही में अर्जुन ने अपनी जो सबसे पहली और सबसे बड़ा कठिनाई श्रीकृष्ण के सामने रखी है वह यह है —

“मैं अगर इस लड़ाई में हिस्सा लूँगा तो हमारा सारा खानदान मिट जायगा, और जब कोई खानदान या कुल मिट जाता है तो उसके सब पुराने रीत रिवाज भी (कुल धर्माः सनातनाः — १-४०) उसके साथ साथ मिट जाते हैं, उनके मिट जाने पर कुल (खानदान) के रहे सहे लोगो और खासकर स्त्रियों को रोककर ठीक रास्ते पर रखने वाली कोई चीज़ नहीं रह जाती, अधर्म फैलता है, उससे स्त्रियों का चलन बिगड़ता है (१-४१), स्त्रियों का चलन बिगड़ जाने से ‘वर्ण संकर’ (नसलों का मिल जाना) होने लगता है, यानी फिर जन्म से वर्ण या जाति का फ़रक नहीं रह जाता, जब इस तरह का वर्ण संकर हो जाता है तो वे लोग जिन्होंने अपने खानदान वालों की हत्या की, और उनके साथ साथ खानदान के और सब लोग भी, यहाँ तक कि उस कुल के मरे हुए ‘पितर’ भी, ज़रूर सबके सब ‘नरक’ को जाते हैं, क्योंकि उन पितरों को ‘पिण्ड’ और ‘पानी’ देने वाली यानी उनका किया कर्म करने वाली उनकी कोई ठीक ठीक औलाद नहीं रह जाती (१-४२), नतीजा यह होता है कि ‘कुलो’ के अपने अपने ‘धर्म’ यानी रिवाज और ‘जातियों’ के अलग अलग परम्परा से चले

आए हुए पुराने 'धर्म' यानी रीत रिवाज भी (१-४३) मिट जाते हैं, और हम यह हमेशा से सुनते चले आये हैं कि जिन लोगों के इस तरह के 'कुल धर्म' मिट जाते हैं, उन सब को जरूर नरक में रहना पड़ता है (१-४४)। इसलिए इस लड़ाई में हिस्सा लेना हमारे लिए 'महापाप' है (१-४५)।"

अर्जुन ने इस अध्याय में तीन जगह 'पाप' लफ्ज इस्तेमाल किया है (१-३६, ३८, ४५)। जिस पाप की तरफ अर्जुन की निगाह जा रही है वह मामूली हिंसा या आदमी को मार डालना नहीं है, बल्कि अपने खानदान के लोगों को मारने, यानी अपने कुल के मिटाने का पाप है (कुलक्षयकृतं दोषं— १-३८-३९)। हमें यह भी ध्यान में रखना चाहिये कि गीता में 'जाति' (१-४३) का मतलब वर्ण यानी ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र नहीं है। वर्ण का फरक एक अलग चीज थी, जाति का फरक अलग था। दोनों जन्म से माने जाते थे, और 'कुल' या खानदान अलग अलग थे ही। महाभारत में यह भी पता चलता है कि अलग अलग 'जातियों' में जिन्हें 'ज्ञातियां' भी कहते थे और अलग अलग वर्णों में उन दिनों शादी ब्याह का रिवाज था। 'जन्म' से मतलब सिर्फ पितृपरम्परा यानी बाप की नसल से होता था।

दूसरे अध्याय में हमें उस जमाने के कुछ और विचारों का पता चलता है। उनमें एक खास विचार 'वेदों का मानना' है। लोग वेदों के चरचों में मगन थे (२-४२), उसका उनके दिलों पर और खुद अर्जुन के दिल पर गहरा असर था (२-५३)।

वेदों की बातें उन्हें कहने और सुनने में बड़ी प्यारी लगती थीं (२-४२) । वे कहते थे कि इससे बढ़कर और कोई चीज है ही नहीं (२-४३) । लेकिन वेदों से जो चीज उन्होंने अपनी जिन्दगी में ले रखी थी, वह सिर्फ इस तरह के ऊपरी कर्म-काण्ड या रीति रिवाज थे (१-४३) जैसे यज्ञ, हवन, जप, तप, पूजा, पाठ, दान वगैरह (६-२०, २१; ११-४८, ५३) । इनसे उनका मकसद या लक्ष्य सिर्फ “भोग ऐश्वर्य” यानी ऐश आराम, अपनी दुनयवी “कामनाओं (रुवाहिशों) को पूरा करना” और बहुत से बहुत “स्वर्ग” या “इन्द्रलोक” हासिल करके वहाँ के “दिव्य भोगों” का ऐश भोगना होता था (२-४३, ४४ ६-२०, २१) । उनका नरक (दोज़ख) तकलीफों का जगह था और स्वर्ग (वहिश्त) भोगों और ऐश की । यज्ञ कई तरह के होते थे (४-३५) । तीनों वेदों ऋक्, साम और यजुर के अलावा (६-१७, २०) बहुत से लोग अलग अलग स्मृतियों के मानने वाले थे और वैदिक यज्ञों के अलावा स्मृति-यज्ञ भी होते थे (६-१६) । वैदिक और स्मृति दोनों तरह के यज्ञों में मंत्र पढ़ पढ़कर घी और तरह तरह की खाने की और दूसरी चीजों की अग्नि कुण्ड में आहुतियां दी जाती थीं (४-२४; ६-१६), और सोमरस पिया जाता था (६-२०) । गीता के दृश्य, छठे और नवें अध्यायों में और उसके बाद भी कहीं कहीं जिस तरह वेदों का जिक्र आया है, उसमें जाहिर है कि लोग उन दिनों वेदों के सिर्फ ऊपरी कर्म काण्ड से ही वास्ता रखते थे, वेदों के ज्ञान काण्ड यानी उन ऊँचे और व्यापक (आत्मगौर) अमृतों से

उनका कोई नाता वास्ता न रह गया था, जो सब मुल्कों और सब कौमों के आदमियों के लिए एक बराबर फायदे की चीजें हैं।

एक परमेश्वर के अलावा बहुत से लोग अलग अलग देवताओं की भी पूजा करते थे। इन देवताओं से तरह तरह की मुगादें और मन्त्रें मांगी जाती थीं और दुनिया के सुखों की प्रार्थनाएं की जाती थीं। उन्हें खुश करने की तरह तरह से कोशिशें की जाती थीं। उनके नाम पर यज्ञ किये जाते और इन यज्ञों में देवताओं के नाम ले लेकर आहुतियां दी जाती थीं। (३-११, १२; ४-१२, २५; ७-२०, २३)। 'फल, पत्ती, फल और जल वगैरह' भी चढ़ाए जाते थे (६-२६)। देवताओं के अलावा 'पितरों' और 'भूतों' की पूजा का भी रिवाज था। सबके नाम पर अलग अलग यज्ञ होते थे, और सबके सामने तरह तरह के चढ़ावे चढ़ाए जाते थे (६-२५, २६)।

शगुन वगैरह के वहमों में भी लोग फंसे हुए थे (१-३१)।

चार वर्णों ब्राह्मण, क्षत्री वैश्य शूद्र की तरह आश्रमों (गृहस्थ, सन्यासी वगैरह) की भी रीति थी। उसमें भी दिल की हालत या नियत पर निगाह रखने की जगह दिखावट, भेस और ऊपरी नियमों पर ज्यादा जोर दिया जाता था, जैसे यह कि 'सन्यासी' आग को हाथ न लगावे, यह यह काम न करे, वगैरह (६-१)।

जो लोग सिर्फ एक परमेश्वर को मानते थे, वे भी कई अलग अलग रास्तों से उसे जानने या हासिल करने की कोशिश

करते थे (४-११) । गरज, देश में उस वक्त तरह तरह के पन्थ, फिक्के (सम्प्रदाय) और 'धर्म' (१८-६६) जारी थे । कुछ लोग 'सद्धियों' (करामातों) के पीछे भी दौड़ते थे, और उन्हें हासिल करने के दो रास्ते माने जाने थे । एक यज्ञ वगैरह कम काण्ड और दूसरा दुनिया स अलग रहकर रूखा ज्ञान ।

इन हालतों में कुदरती तौर पर दर्शनशास्त्र या कलसफे की निगाह से दो अलग अलग खयाल एक दूसरे के खिलाफ देश में मौजूद थे । इन दोनों का गीता में बार बार चिक्र आता है (२-२६; ३-३, ५-२; १३-२४) । एक सांख्य या ज्ञान वाले, जो यज्ञ वगैरह कामों की जगह ज्ञान पर जोर देते थे और ज्ञान को ही अनजात यानी मुक्ति का जरिया मानते थे, वे सब तरह के ही कामों को बुरा और 'त्याज्य' (छोड़ देने के क़ाबिल) मानते थे (१८-३), और मामूली घरबार की जिन्दगी से अलहदगी (सन्वास) को मुक्ति के लिए जरूरी बताते थे । दूसरे कर्म वाले जो ऊपरी रस्मों जैसे यज्ञ वगैरह पर जोर देते थे और उन्हीं के जरिये मुक्ति मानते थे । गीता में ज्ञान और कर्म दोनों को 'योग' बताया गया है (३-३) । ध्यान, प्राणायाम (हव्लेदम) वगैरह के भी कई तरीक़े उन दिनों जारी थे (१३-२४; ४-२६) ।

गीता में साफ लिखा है कि वह ज़माना, इस देश में, महज पाण्डवों के ऊपर कौरवों के जुल्मों का ही ज़माना नहीं था, बल्कि चारों तरफ़ "धर्म की ग्लानि और अधर्म के अभ्युत्थान" यानी धर्म के घटने और अधर्म के बढ़ने का ज़माना था । ठीक

वह ज़माना था, जब कि ईश्वर की तरफ से अवतारों या महान आत्माओं के जन्म लेने, गाता जैसे अमर उपदेशों के दिये जाने, और मन्त्रों "धर्म के फिर से कायम किए जाने" की ज़रूरत होना है (४-७, ८) ।

इन्हीं धर्मों, पन्थों और सम्प्रदायों के गोरखधन्धे में पड़ कर, अपने लिये साफ साफ रास्ता न देख, अर्जुन ने अपने को "धर्म सम्मूढ़ चेतः" (यानी जिसकी अकल यह नहीं समझ पा रही है कि असली धर्म क्या है) (२-७) कहकर श्रीकृष्ण से राह दिखाने की प्रार्थना की है । अर्जुन की इस प्रार्थना का जवाब ही गीता का उपदेश है :

अब हम गीता के एक एक अध्याय पर अलग अलग एक सरसरी निगाह डालेंगे । इन अध्यायों में कहीं कहीं अलग अलग पहलुओं से वही बात दुहराई गई है । मज़हबी हिदायत की किताबों में ऐसा होना मामूली बात है ।

गीता धर्म

पहला अध्याय

पहले अध्याय में अर्जुन ने अपनी जिन कठिनाइयों को श्रीकृष्ण के सामने रखा उनका जिक्र हम ऊपर कर चुके हैं। वे ये थीं कि—इस लड़ाई से हमारे खानदान, जाति और विरादरी के पुराने रीति रिवाज मिट जावेंगे, वर्णसंकर हो जावेगा, मरे हुए पितरों को पिण्ड और पानी न पहुँच सकेगा, यह सब धर्म मिट जावेगा और इस सब 'धर्म' के मिट जाने से हमारा खानदान नरक (दोड़ाख) में पड़ेगा। अर्जुन ने यह बात साफ कही है कि इन पुराने 'धर्मों' के मिट जाने से सब लोग नरक का जाते हैं, यह हम अपने पुरखों में सुनने आए हैं।

दूसरा अध्याय

श्रीकृष्ण का जवाब गीता के दूसरे अध्याय से शुरू होता है। इन सब बातों को श्रीकृष्ण ने पहले अर्जुन का सिर्फ "मोह" (बेजा लगाव) (२-२), उसकी "शान के खिलाफ" और उसके "दिल की कमजोरी" (२-३) बताकर टालना चाहा।

जब इससे अर्जुन की तमल्लनी न हुई तो श्रीकृष्ण ने "हसते हुए" कहा—

अर्जुन ! तू एक तरफ तो अकलमन्दों की सी बातें करता है और दूसरी तरफ उन बातों की फिक्र करता है जिनकी कोई फिक्र नहीं करनी चाहिये । "पण्डित" यानी समझदार आदमी का यह काम नहीं है कि कौन और क्या मिट गया और क्या अभी नहीं मिटा इसकी चिन्ता करे (२-११) ।

इस तरह शुरू में गीता ने अर्जुन के इन सब शकों को "अशोच्य" यानी ऐसी चीजें "जिनकी फिक्र ही नहीं करनी चाहिये" कहकर खत्म कर देना चाहा ।

यहां पर यह बात ध्यान देने के लायिक है कि लफ्ज 'धर्म' को अर्जुन ने रीत रिवाज के माइने में इस्तेमाल किया है (१-४३), लेकिन श्रीकृष्ण ने शुरू से 'धर्म' शब्द का इस्तेमाल दूसरों की तरफ अपने 'कर्त्तव्य' यानी कर्ज (२-३१) के माइने में किया है ।

दूसरे अध्याय के ग्यारह स तीस तक के श्लोकों में श्रीकृष्ण ने जिन्दगी और मौत, सुख और दुःख का कलसफा बयान किया है, और कहा है कि आत्मा (रूह) नित्य यानी हमेशा रहने वाली और अमर है, और यह जिस्म और दुनिया की सब चीजें, यहां के सब नाम रूप, अनित्य यानी थोड़ी देर रहनेवाले और फानी (मिट जाने वाले) हैं । गीता का कहना है—

जिन्दगी के इस सारे रहस्य बानी राज को कोई हैरान होकर देखता है, कोई हैरान होकर उबका फिक्र करता है, और कोई दांतों

तले उंगली दबाकर सुनता है, लेकिन सुनकर भी जानता या समझता कोई नहीं (२-२६) ।

गीता के इस फलसफे का जहाँ तक अमल के साथ सम्बन्ध है उसका निचाँड़ गीता के ही शब्दों में यह है—

जो काम अपनी खुदी को बिलकुल अलग रखकर, अपने निजी मुन दुःख नफे नुकसान और जीत हार का बिलकुल खयाल न करते हुए, निष्कं फल समझ कर किया जावे, उससे करने वाले को पाप नहीं लगता (२-३८) ।

यानी पाप की सारी जड़ खुदी में है ।

इसके बाद श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा कि अब तक मैं तुम्हें ज्ञान के रास्ते से समझा रहा था । अब यही बात मैं कर्म के रास्ते से समझाना चाहता हूँ । इसे तू समझ लेगा तो अपने फल को पूरी तरह जान लेगा । (२-३९)

इसी जगह गीता के इस अध्याय में वेदों और उनकी तालीम का वह वयान है, जिसका ऊपर जिक्र आ चुका है । अर्जुन ने खुद वेदों का हवाला नहीं दिया । श्रीकृष्ण ने उस जमाने की हालत को देखते हुए और अर्जुन के ऊपर क्या क्या असर पड़े हुए हैं यह जानकर वेदों और उनकी तालीम का जिक्र किया है । अर्जुन को समझाने में श्रीकृष्ण को सबसे बड़ी दिक्कत यही पड़ी कि वेदों की उस जमाने की तालीम का अर्जुन पर गहरा असर था । उन्होंने अर्जुन से कहा—

वेदों की तालीम से तेरी मति मारी गई है और अकल गुम हो गई है (श्रुति विप्रतिपत्ता ते.., बुद्धिः) । जब तक तेरी यह अकल फिर

से स्थिर यानी क़ायम न होगी तब तक तू कर्मयोग के रास्ते को नहीं समझ सकता (२-५३) जो लोग वेदों की तालीम में ही मगन हैं और कहते हैं कि इससे बढ़कर और कुछ है ही नहीं, वे बेसमझ (अविपश्चितः) हैं, वे अपनी दुनियावी ख्वाहिशों के पीछे पड़े हुए हैं, वे स्वर्ग (बहिश्त) के ऐश भोगना चाहते हैं, वे भोग और ऐश्वर्य यानी ऐश आराम के लिए तरह तरह के कर्म काण्डों (रीतरिवाजों) की मीठी मीठी बातें करते हैं, जिनसे उन्हें दुनिया के ऐश आराम मिल सके। इनका जी ऐश आराम में ही फँसा हुआ है। इन्हीं ख्वाहिशों ने उनकी बुद्धि को नष्ट कर रखा है (तयापहत चेतसाम्)। इसीलिए इनकी बुद्धि टिककर और एकसू होकर एक तरफ़ नहीं लग सकती (२-४२, ४३, ४४)। इस तरह के लोगों की बुद्धि वजाय एक तरफ़ लगने के—यानी अपनी खुदग़रज़ी और ख्वाहिश को अलग रखकर फ़र्ज़ को फ़र्ज़ समझ कर पूरा करने की तरफ़ लगने के—उन ख्वाहिशों को पूरा करने की तरफ़ लगी हुई है जिनका कोई अन्त नहीं। इसीलिए उनकी बुद्धि बहकी रहती है (२-४१)। वेदों की तालीम आदमी को सत्त्व (सकून), रजस (हरकत), तमस (काहिली), इन्हीं तीनों गुणों (सिफ़तों) में फँसाये रखती है। तू इन तीनों गुणों से ऊपर उठ जा। सुख, दुःख या अपने पराये के फ़रक़ से ऊपर हो जा। तू हमेशा सत्त्व में क़ायम रह। अपने लिए न किसी चीज़ को पाने की ख्वाहिश कर और न किसी चीज़ को अपनाए रखने की। तू अपनी आत्मा के अन्दर क़ायम हो (२-४५)। जो 'ब्राह्मण' यानी ज्ञानी आदमी हकीक़त को जान गया है, उसके लिए तमाम वेद वैसे ही बेकार हैं, जैसे उस जगह जहाँ पानी ही पानी भरा हो, एक छोटा

सा कुँवा (२-४६) ।

वेदों से यहां मतलब वेदों में बताए हुए ऊपरी रीत रिवाजों यज्ञों और पूजा पाठ वगैरह से है (६-२०, २१) ।

इसके बाद श्रीकृष्ण ने अर्जुन को फिर अपनी खुदी को अलग रखकर, अपने लिए किसी तरह की इच्छा न करते हुए, कामयाबी और नाकामयाबी दोनों में अपने मन को एक सा रखते हुए, फर्ज को फर्ज समझकर पूरा करने का उपदेश दिया है, फर्ज से हट कर बैठ जाने को बुरा कहा है, और दूसरों की तरफ अपने फर्ज के इस तरह ठीक ठीक पूरा करने को ही 'योग' बताया है (योगः कर्मसु कौशलम् २-५०) ।

श्रीकृष्ण के यह कहने पर कि वेदों के बताए रीत रिवाजों में भटकी हुई बुद्धि को एक जगह स्थिर करने यानी क्लायम करने की जरूरत है, अर्जुन ने पूछा कि 'स्थिर बुद्धि' या 'स्थितप्रज्ञ' आदमी की क्या पहचान है ? प्रज्ञा लफ्ज़ के माइने भी बुद्धि या अकल के हैं । इस सवाल के जवाब में दूसरे अध्याय के आखीर के वे अठारह श्लोक कहे गये हैं जो एक तरह गीता के उपदेशों का सार या निचोड़ माने जाते हैं । श्रीकृष्ण ने जवाब दिया कि—

ऐ अर्जुन ! जिसने अपने मन के अन्दर पैदा होने वाली तमाम ख्वाहिशों को जीत लिया, जो न दुःख से डरता है और न सुख की इच्छा करता है, जिसे न किसी से राग, लगाव या मोह है, न किसी से डर और न किसी पर क्रोध, जिसकी इन्द्रियां (हवास) उसके क्राबू में हैं, उसो को 'स्थितप्रज्ञ' (टिकी हुई या सलीम अकल वाला)

समझना चाहिये । इसलिये अपना इन्द्रियों को इस तरह इन्द्रियों की ग्वाहिश की चीज़ों से खींच कर अपने क्रावू में रखना चाहिये, जिस तरह कछुआ अपने हाथ पैरों को अपने अन्दर खींच लेता है । फिर भी तबियत उधर का बहकती रहेगी । इसका इलाज धीरे धीरे खयाल को उधर से हटाना और ईश्वर की तरफ़ लगाना है । जिसे किसी से राग या द्वेष यानी मोह या दुश्मनी नहीं है और जिसकी इन्द्रियाँ उसके क्रावू में हैं, वह दुनिया के सब काम करता हुआ भी भीतर शान्त रहता है । अपने नफ़स पर क्रावू रखने वाला आदमी दुनिया के सुख भोगों की तरफ़ से अपने को हटा कर अपने अन्दर की सफ़ाई और आत्मा की तरक्की की तरफ़ मनको लगाए रखता है । असली काम अपने 'अहंकार' (खुदी) को मिटाना है । यही सच्ची शान्ति और सच्चे सुख को हासिल करने का तरीका है । यही ईश्वर को पाना और निजात हासिल करना है । (२-५५ से ७२)

तीसरा अध्याय

अर्जुन के दिल में फिर यह सवाल पैदा हुआ कि अगर मुक्ति के लिए अपनी इन्द्रियों को जीतना और खुदी को मारना ही जरूरी है तो फिर दुनिया के कामों में क्यों फंसा जावे । इसके जवाब में तीसरे अध्याय में बताया गया है कि—

इस तरह के 'सन्यास' से जिसमें अपने दुनियावी फ़र्ज़ को छोड़ दिया जावे आदमी सिद्धि यानी कमाल को नहीं पहुँच सकता (३-४) । वे काम ही आदमी को बन्धन में डालते हैं जो "यज्ञ" के तौर पर नहीं यानी दूसरों की सेवा या दूसरों के फ़ायदे के लिये नहीं बल्कि अपनी खुदगर्ज़ी के लिए किए जावे । इसलिये आदमी को

बिना मोह के निस्वार्थ (बेग़रज़) होकर काम करना चाहिये (३-६) । ऐसे कामों के सहारे ही शुरू से दुनिया संभली हुई है । जो आदमी “सिर्फ़ अपने लिए खाना पकाता है” वह पापी है, वह “पाप” ही खाना है, जो दूसरों का ख़याल नहीं रखता वह ‘चोर’ है (३-१२, १३) । यहाँ “यज्ञ” का असली मतलब है । इसके खिलाफ़ जो अपनी इन्द्रियों के सुख में लगा रहता है उसका जीना निकम्मा और पाप है (३-१६) । आदमी को किसी भी दूसरे से अपनी गरज़ पूरी कराने की इच्छा नहीं रखनी चाहिये (३-१८) । आदमी “असक्त” यानी बेलाग और निस्वार्थ काम करते हुए ही ईश्वर को पा सकता है (३-१९) । इस तरह दूसरों की तरफ़ अपने फ़र्ज़ों को पूरा करते हुए ही जनक जैसे लोग कमाल को पहुँचे थे । इसी में सब का भला (लोक संग्रह) है (३-२०) । जिस तरह नासमझ आदमी अपने अपने स्वार्थ के कामों में लगे रहते हैं, उसी तरह समझदार आदमी को निस्वार्थ होकर दूसरों का यानी सबका भला चाहते हुए उनकी तरफ़ अपना फ़र्ज़ पूरा करने में लगा रहना चाहिये (३-२५) । अध्यात्म यानी रूहानियत में दिल को लगाये हुए, आशा और ममता से ऊपर उठकर, आदमी ‘ईश्वर के लिए’ अपने सब फ़र्ज़ों को पूरा करे (३-३०) । आदमी की इन्द्रियाँ कुछ चीज़ों की तरफ़ तो चाह से लपकती हैं और कुछ चीज़ों से भागती हैं, उनके इस चाहने या भागने में नहीं खाना चाहिये, यह चाह और नज़र ही आदमी की दुश्मन है (३-३४) । हर मौक़े और हर हालत में जो अपना फ़र्ज़ दिखाई दे उसी को अपना “धर्म” समझ कर पूरा करना चाहिए,

दूसरे किसी “धर्म” की तरफ नहीं जाना चाहिए। जैसा भी अपने से बन पड़े अपना यह कर्त्तव्य या फ़र्ज़ पूरा करते हुए ही मरना ठीक है (३-३५)। आदमी से पाप कराने वाली दो ही चीज़ें हैं। ये दो ही इस दुनिया में आदमी की दुश्मन हैं—एक ‘काम’ यानी शहवत और दूसरा ‘क्रोध’ यानी गुस्सा। जिस तरह धुआँ आग को ढक लेता है और गर्द शीशे को अन्धा कर देती है इसी तरह ये दोनों आदमी की अक़ल पर पर्दा डाल देते हैं (३-३७, ३८)। इसलिए सबसे पहले अपनी इन्द्रियों को काबू में करके, ज्ञान और विज्ञान का नाश करने वाले इन दोनों पापी-दुश्मनों को मारना चाहिये (३-४१)। इन्द्रियाँ यानी हवास काफ़ी सूक्ष्म (लतीफ़) चीज़ हैं, इन्द्रियों से ज़्यादाह सूक्ष्म मन है, मन से ज़्यादाह सूक्ष्म बुद्धि है, बुद्धि से कहीं ज़्यादाह सूक्ष्म आत्मा (रूह) है। वह आत्मा ही सब कुछ है। वही वह है (३-४२)। इसे समझते हुए अपने हवास को जीतते हुए और अपनी ख़्वाहिशों को मारते हुए आत्मा की तरफ़ बढ़े चलो (३-४२, ४३)। यही सच्चा धर्म है, यही वह “योग” है जो पुराने ज़माने से चला आ रहा है और जिसे भूल जाने की वजह से आज लोग ग़लत धर्मों यानी रीति रिवाजों में फँस गये हैं (४-१ से ३)।

चौथा अध्याय

चौथे अध्याय में कहा गया है कि जब जब दुनिया के लोग इस सच्चे धर्म को भूल कर ग़लत चीज़ों को धर्म समझने लगते हैं, और असली धर्म से फिर जाते हैं तब तब वह बड़ी बड़ी आत्माएं जन्म लेती हैं जो दुनिया को फिर से धर्म का

राम्नां बताती हैं (४-७, ८) ।

जिन लोगों के दिलों से मोह, गुस्सा और डर बिल्कुल जाते रहे, जिन्होंने एक परमेश्वर का सहारा लिया और उसी से अपना मन लगाया, उन्हें सच्चा ज्ञान मिलता है और आत्मीय में वे उसी परमेश्वर में लय (फ़ना) हो जाते हैं (४-१०) । मुक्ति (निजात) के लिए किसी रीति रिवाज की ज़रूरत नहीं, ज़रूरत अपने दिल से मोह, डर और गुस्से को निकाल कर उसे एक परमेश्वर की तरफ़ लगाने की है ।

जहां तक धर्म के ऊपरी हिस्से का सवाल है, जिसे 'शरअ' या कर्मकाण्ड कहते हैं, और जिससे अलग अलग धर्मों या मज़हबों में फ़र्क़ दिखाई देता है, वहां तक भगवद्गीता सब तरीक़ों को एक निगाह से देखती है और कहती है —

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्

ममवर्तमानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः । (४-११)

परमेश्वर कहता है कि जो जिस रास्ते से चलकर मेरे पास आते हैं मैं उसी रास्ते से उन्हें मिलता हूँ । जिस तरह किसी गोल चक्कर के चारों तरफ़ खड़े हुए लोग उसके बीच तक पहुंचने के लिए अलग अलग तरफ़ से चलकर भी एक ही जगह पहुंचते हैं, इसी तरह अलग अलग पन्थों और रास्तों से चलकर भी लोग उसी एक परमेश्वर तक पहुंचते हैं ।

इसी लिए गीता की राय में—

समझदार आदमी को चाहिये कि जो कमसमझ लोग किसी भी 'रास्ते' पर चलकर नेक कामों में लगे हुए हैं, उनकी समझ को

डाँवाडोल न करे, बल्कि उन्हें उसी तरह नेक कामों में लगाए रखें (३-२६ से २६) ।

ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र इन चारों वर्णों के लिए गीता का कहना है कि न आदमी इस तरह का कोई फ़रक बना सकता है और न जन्म से इसका कोई वास्ता है । परमेश्वर ने सारी दुनिया के अन्दर चार तरह की तबीयतों वाले और वैसे ही चार तरह के काम करने वाले आदमी पैदा किये हैं । यह फ़रक एक कुदरती फ़रक है, और हर आदमी के गुणों (औसाफ़) और कामों के मुताबिक—“गुणकर्म विभागः”, ही उसे ब्राह्मण, क्षत्री वगैरह मानना चाहिये (४-१२) ।

आगे जाकर अठारहवें अध्याय में चारों वर्णों के अलग अलग गुण और काम बयान कर दिये गये हैं (१८-४१ से ४४); यानी यह कि किन गुणों वाला और किस तरह के काम करने वाला आदमी ब्राह्मण समझा जाना चाहिये, किन गुणों वाला क्षत्री, किन गुणों वाला वैश्य और किन गुणों वाला शूद्र, और कहा है कि हर आदमी खुद अपने ‘स्वभाव’ को देखकर वह काम करे जो उसके स्वभाव के मुताबिक (स्वभावज) हो, यानी जिसकी तरफ़ उसमें झुकाव और क़ाबलीयत हो ।

इस तरह अपने अपने स्वभाव के मुताबिक (स्वभाव नियत कर्म) सच्चे दिल से और ईश्वर के लिए (ईश्वरार्पण) काम करता हुआ हर आदमी अपने ही रास्ते से सिद्धि या क़माल हासिल कर सकता है । यही हर आदमी का “स्वधर्म” है (१८-४५, ४६, ४७) ।

जो आदमी अपने कामों से खुद अपने लिये सुख हासिल करने

का इरादा नहीं रखता वही “पंडित” है। जिसका मन उसके बस में है, जो दुई से ऊपर है (द्वन्द्वातीतो), जो किसी से डाह नहीं करता (विमत्सरः), जो हर काम कुर्बानी (यज्ञ) के तौर पर यानी दूसरों के भले के लिए और ईश्वर के लिए करता है, वह अपने कामों से बन्धन में नहीं फँसता (४-१६ से २३)। आदमी को यह समझ कर सब काम करने चाहियें कि जो कुछ वह देख रहा है सब ईश्वर की ही लीला, उसी का ज़हूर है। ईश्वर सत्य यानी हक़ और नित्य यानी लाज़वाल है और बाक़ी सब असत्य और अनित्य यानी वातिल और फ़ानी हैं, और आख़ीर में सब को ईश्वर की ही तरफ़ जाना और उसी में लीन होना है। यह समझते हुए अपने सब क़र्ज़ों को पूरा करना ही असली “यज्ञ” है (४-२३, २४)। लोग और भी तरह तरह के यज्ञ जैसे तप (रियाज़त), प्राणायाम (हब्सदम) वग़ैरह करते हैं जिनका वेदों में ज़िक्र है, लेकिन इन सब से बढ़कर असली यज्ञ वह “ज्ञान” है जिसे एक बार हासिल करने के बाद फिर आदमी इस तरह के धोखे में नहीं पड़ सकता। वह ज्ञान यही है कि आदमी तमाम जानदारों को अपने अन्दर और सबको ईश्वर के अन्दर और सब के अन्दर ईश्वर को देखे (येन भूतान्य शेषेण द्रक्ष्य-स्यात्मन्यथो मयि) (४-२५ से ३५)।

सब को अपनी तरह समझना और सबके अन्दर एक ईश्वर के दर्शन करना, यही गीता के अन्दर बार बार ज्ञान की आख़िरी हद बताई गई है।

इस ज्ञान से बढ़कर आदमी को पाक करने वाली दूसरी चीज़ इस दुनिया में नहीं है। योगी धीरे धीरे खुद अपने अन्दर इसे साफ़

साफ़ देख लेता है (४-३८) । इसके लिये महज़ श्रद्धा (यक़ीन) की और अपनी इन्द्रियों को क़ाबू में रखने की ज़रूरत है (४-३१) ।

पाँचवाँ अध्याय

पाँचवें अध्याय में अर्जुन ने फिर वही सवाल किया कि 'सांख्य मार्ग' और 'कर्म मार्ग' इन दोनों में कौन अच्छा है ? यानी सब कामों से अलग होकर 'सन्यास' और 'ज्ञान' का सहारा लेना, या दुनिया में रहते हुए दुनिया के सब काम करते हुए आत्मा की भलाई की कोशिश करना । इस सवाल के जवाब में गीता ने इन दोनों रास्तों को असलीयत में एक बताते हुए दोनों का एक सुन्दर मेल या समन्वय करने की कोशिश की है । श्रीकृष्ण ने जवाब दिया—

जो लोग यह कहते हैं कि सांख्य मार्ग और कर्म मार्ग दोनों दो अलग अलग रास्ते हैं, वे बच्चे हैं । पंडित यानी समझदार लोग इन्हें अलग अलग नहीं मानते । हर आदमी इन दोनों में से किसी एक रास्ते पर भी ठीक ठीक चलकर दोनों का फल पा सकता है । सांख्य मार्ग से चलकर लोग जिस स्थान (मुक़ाम) तक पहुँचते हैं, कर्म योग के रास्ते से चलकर भी उसी स्थान तक पहुँचते हैं । जो आदमी सांख्य मार्ग और कर्म मार्ग दोनों को एक समझता है वही ठीक ठीक समझता है । (५-४, ५)

इसके बाद कहा है—

वह आदमी सच्चा सन्यासी है जो न किसी से नफ़रत करता है और न कुछ चाहता है, जो दुई से ऊपर है, जो अपने क़र्ज़ के पूरा

करने में लगा रहता है, जिसका दिल साफ़ है, जिसने अपने ऊपर काबू हासिल कर लिया है, जिसकी इन्द्रियाँ (हवास) उसके बस में हैं, जो सब किसी की आत्मा को अपनी ही आत्मा की तरह समझता है (सर्व भूतात्म भूतात्मा), और जो सब कामों को, मोह छोड़कर, ईश्वर के लिए (ब्रह्मण्याधाय) करता है। इस तरह वह अपनी आत्मा को शुद्ध करता है (५-३ से ११)।

जो लोग इस तरह समझ बूझ कर अपने कर्ज़ को पूरा करते हैं उनके अन्दर अपने आप सृज की तरह उस ज्ञान की रोशनी फूटती है जिसमें उन्हें अपने अन्दर ही परमेश्वर के दर्शन होते हैं। फिर उसी से लौ लगाए हुए वे मुक्ति (निजात) हासिल करते हैं। उनके सब पाप धुल जाते हैं (५-१५ से १७)।

विद्या विनय सम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि,

शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः सम दर्शिनः।

सच्चा पण्डित वही है जो विद्या (इल्म) और विनय (इनकसार) वाले ब्राह्मण को, गाय को और हाथी को, कुत्ते को और चाँडाल को, सब को एक निगाह से देखता है (५-१८)।

जिन्होंने इस तरह की समता (मसावात) में अपने मन का कायम कर लिया उन्होंने इसी दुनिया में सब कुछ जीत लिया, क्योंकि परमेश्वर सब में 'सम' (बराबर) है और समता ही परमेश्वर है (५-१९)

इन्द्रियों के सब सुख आत्मीर में दुख ही पैदा करते हैं। समझदार आदमी उनमें नहीं फँसता। जो कोई मरने से पहले इसी ज़िन्दगी में काम और क्रोध यानी अपने नफ़स और गुस्से के ज़ोर को रोक सकता

है वही योगी है, वही मुखी है। जो कोई अपनी आत्मा के अन्दर ही मुख, आनन्द और रोशनी पाता है वही परमेश्वर में लीन (क्राना) होकर मुक्ति हासिल करता है। यह बात उन्हीं को हासिल होगी जिनकी दुई मिट गई, जिन्होंने अपने आपको जीत लिया, और जा हमेशा सब की भलाई के कामों में लगे रहते हैं (सर्वभूत हितैरताः)। मुक्ति सिर्फ ऐसे ही के लिए है। (५-२२ से २६)

इसके बाद के तीन श्लोकों में आत्मा की आगे की तरक्की के रास्ते यानी योगाभ्यास (सलूक) का जिक्र है। लिखा है—

आदमी अपनी इन्द्रियों के सम्बन्ध की बाहर की तमाम चीजों को बाहर रखकर, दोनों आँखों को भवों के बीच में लाकर, अन्दर जाने वाले और बाहर आने वाले सासों को बराबर करके, इन्द्रियों, मन और बुद्धि को इधर उधर जाने से रोक कर, इच्छा, डर और गुस्से को दूर करके, और यह जानकर कि परमेश्वर सब दुनियाओं का मालिक, सब की पूजा वन्दगी लेने वाला और सब प्राणियों का भला चाहने वाला है, उसका ध्यान करे। उसे ऐसा जानकर ही आदमी सच्ची शान्ति हासिल कर सकता है (५-२७ से २९)।

छठा अध्याय

फिर सांख्य और कर्म दोनों रास्तों को एक बताते हुए कहा गया है—

जो आदमी नतीजे की परवाह न कर जिसे अपना कर्ज समझता है उसे पूरा करता है, वही सन्यासी है, और वही योगी है। सन्यास के ऊपरी नियमों पर अमल करने वाला, जैसे आग को न छूने वाला

या यह काम और वह काम न करने वाला, सन्यासी नहीं है ।
(६-१, २)

यानी सन्यास दिल की एक हालत का नाम है, किसी ऊपरी नियम या लिबास वगैरह का नहीं ।

जो आदमी योग को हासिल करना चाहता है उसके लिए दुनिया की तरफ अपने कर्जों को पूरा करना ही योग का रास्ता है, और एक बार योग हासिल हो जाने के बाद उसके अन्दर की शान्ति और समता खुद अपने आप उससे उसके सारे कर्ज पूरे कराती रहती है (६-३) ।

आदमी आप ही अपना दोस्त है और आप ही अपना दुश्मन । जिस किसी ने अपने आपे (खुदी) को जीत लिया वह अपना दोस्त है और जिसका आपा उस पर सवार है वह आप अपना दुश्मन है ।
(६-५, ६)

जिसने अपनी खुदी को जीत लिया, जो शांत है और जो सरदी गरमी, सुख दुःख, मान अपमान में यकसाँ रहता है, उसकी आत्मा ही परमात्मा है (६-७) । जो दोस्त और दुश्मन, अपने और पराये, धर्मात्मा और पापी सब को एक निगाह से देखता है वही ठीक है ।
(६-८)

इसके बाद फिर अन्दर की साधना या योग का जिक्र है । लिखा है—

इस तरह का आदमी किसी साक़ सुथरी जगह में चुपचाप निडर और अकेला बैठकर अपने मनको रोककर, अपने दिल से सब तरह की ख्वाहिशों और सब चीज़ों के मोह को निकालकर आत्मा को

एक तरफ़ लगा कर...सिर, गर्दन और जिस्म को बिल्कुल सीधा और इन्द्रियो को अडोल रखते हुए, अपनी नाक के सिरे को एकटिक देखता हुआ, इधर उधर निगाह न डालता हुआ ..अपनी आत्मा को शान्त रखते हुए, आत्मा की शुद्धि के लिए परमात्मा में ध्यान जमाए, तो धीरे धीरे उसे परम शान्ति और वह सबसे बढ़कर हालत हासिल होगी जिससे फिर बड़े से बड़ा सुख दुःख भी उसे डिगा नहीं सकता, उसी हालत का नाम मुक्ति यानी निजात है। (६—१० से ११ और २२)

फिर बताया गया है कि यह योग न दुनिया में फंसे हुए लोगों के लिए है और न दुनिया के फ़र्जों से भाग कर दुनिया से अलग बैठने वालों के लिए है—

यह उसी के दुःखों को मिटा सकता है जो अपने आहार और विहार में यानी खाने पीने और रहन सहनमें, न कोई ज़्यादाती करता है और न बिल्कुल कमी, जो ठीक बीचके रास्ते पर चलता है, जो अपने सब फ़र्जों को पूरा करने और कामों को करने में एक बीच का रास्ता पकड़ता है, ठीक सोता भी है और ठीक जागता भी है। (६-१६, १७)

अठारहवें से अट्ठाईसवें श्लोक तक इस रास्ते को कुछ और खोलकर बयान किया गया है। और इसका आखिरी नतीजा आत्मा का परमात्मा में लीन (फना) हो जाना (ब्रह्म भूतं) बताया गया है। इसी हालत को सूफियों के शब्दों में 'फना किल्लाह' हो जाना कहते हैं। फिर कहा गया है—

जिस आदमी का दिल योग में लगा हुआ है वह सब प्राणियों के

अन्दर अपने को और अपने अन्दर सब प्राणियों को देखता है। वह सब को एक निगाह से और एक बराबर देखता है। जो सब के अन्दर परमेश्वर को और परमेश्वर के अन्दर सबको देखता है उसका फिर परमेश्वर से नाता नहीं टूटता। जो दुई से ऊपर उठकर सब प्राणियों के अन्दर परमेश्वर का भजन करता है, वह कहीं भी रहे उसका नाता परमेश्वर से जुड़ा हुआ है। जो सब के सुख दुःख को अपना ही सुख दुःख समझता है और अपनी ही तरह सब को एक बराबर देखता है वही परमेश्वर का सब से बढ़कर प्यारा है।
(६-२६ से ३२)

अर्जुन ने सवाल किया कि चंचल मन को इस तरह काबू में करना बहुत मुश्किल है। जवाब मिला कि—

इसके लिए 'अभ्यास' यानी मशक्क की और 'वैराग्य' यानी दुनिया के भोगों की तरफ से तबियत को हटाने की ज़रूरत है (६-३५)। जिसे अपने ऊपर काबू नहीं है वह इस योग को हासिल नहीं कर सकता (६-३६)। ऊपर के रीतिरिवाज इसमें मदद नहीं दे सकते, क्योंकि इस योग की ख्वाहिश भी जिस के अन्दर पैदा हो गई है, उसे वेदों और उनके रस्मरिवाजों की कोई ज़रूरत नहीं रह जाती, वह उनसे ऊपर उठ जाता है (६-४४)।

और जो इस तरफ़ थोड़ी सी भी सच्ची कोशिश कर लेता है, फिर चाहे उसका मन डिग जाय और उसे पूरी कामयाबी न मिलसके, तब भी उसकी कोशिश फ़ज़ूल नहीं जाती और न उसकी आगे की गति ख़राब होती है। आगे की ज़िन्दगी में उसकी तरक्की बराबर जारी रहती है। तप (रियाज़त), ज्ञान (मार्फ़त) और कर्म काण्ड

(शरीअत) सब से यह रास्ता कहीं बढ़कर है । (६-३७ से ४६)

सातवां अध्याय

जो लोग परमेश्वर को जानना चाहते हैं उनके लिए सातवें अध्याय में यह बताने की कोशिश की गई है कि परमेश्वर हर जगह और हर चीज़ में मौजूद है, एक परमेश्वर और बहुत से देवताओं का करक़ बताया गया है, और सिर्फ़ एक परमेश्वर अल्लाह ताला की ही पूजा बन्दगी करने पर जोर दिया गया है—

परमेश्वर की प्रकृति (क़ुदरत) के दो पहलू हैं । इन्हीं दोनों से सारी दुनिया और सब जानदार पैदा हुए हैं । मिट्टी, पानी, आग, हवा, आकाश (ईथर), मन, बुद्धि और अहंकार (खुदी), ये आठों परमेश्वर की “अपरा” यानी स्थूल (जली) प्रकृति हैं, और जो चीज़ जान की शकल में इस सारी दुनिया को संभाले हुए है और इसे चला रही है वह ईश्वर की “परा” यानी सूक्ष्म (ख़फ़ी) प्रकृति है । ईश्वर ही सारी दुनिया का पैदा करने वाला और उसे ख़त्म करने वाला है । उसके अन्दर यह सब दुनिया इस तरह पिरोई हुई है जिस तरह एक डोरे के अन्दर माला के दाने । वह ईश्वर ही पानी के अन्दर रस, चाँद सूरज के अन्दर रोशनी, वेदों में ओश्म, आकाश में आवाज़, आदमियों में मर्दानगी, मिट्टी में खुशबू, आग में दमक, तपस्वियों में तप, और सब जानदारों की जान है । वही सबका असली बीज है । वही बुद्धिमानों की बुद्धि और तेजस्वियों का तेज (जलाल वालों का जलाल) है । वही उन्

बलवानों का बल है जो काम (शहवत) और मोह ममता से आज़ाद हैं। वही जानदारों के अन्दर की जायज़ ख़्वाहिश है। सत्व (सकून), रजस (हरकत) और तमस (काहिली) सब हालते ईश्वर से ही पैदा हुई हैं, लेकिन वह खुद इन तीनों से परे है। इन तीनों के जाल में पड़कर ही दुनिया उसे नहीं पहचानती। वह नित्य (गैरफ़ानी) और सब से अलग है। (७-४ से १३)

कुछ लोग अपनी छोटी छोटी ख़्वाहिशों के पीछे पड़कर ना समझी से दूसरे देवताओं की पूजा बन्दगी करते हैं। जो जिसकी पूजा श्रद्धा (एतक्राद) से करना चाहता है परमेश्वर उसे उसी में श्रद्धा देते हैं। जो फल उन लोगों को हासिल होते हैं वह भी परमेश्वर ही के ठहराए हुए हैं। लेकिन उन नासमझों के यह फल नाश होने वाले यानी फ़ानी हैं। देवताओं की पूजा करने वाले देवताओं को पहुँचते हैं और एक परमेश्वर की पूजा करने वाले परमेश्वर को। बात यह है कि कम समझ लोग परमेश्वर की असलीयत को नहीं समझ पाते। वे उसकी पूजा किसी न किसी ऊपरी शकल में ही करना चाहते हैं। एक तरह सब देवताओं के रूप परमेश्वर के ही रूप हैं। लेकिन परमेश्वर निर्गुण यानी बिना किसी रूप का, कभी पैदा न होने वाला, घटने बढ़ने और ज़िन्दगी मौत से अलग यानी लाज़वाल और सब से ऊपर है। कम समझ आदमी उसे नहीं समझ पाते, पर परमेश्वर पिछली अगली और इस वक्त की सब बातों का जानता है। जो आदमी राग और द्वेष, मुहब्बत और नफ़रत, से हटकर, दुई से ऊपर उठकर, सब तरह के पापों से बचता हुआ, नेक काम करता हुआ सिर्फ़ एक परमेश्वर की पूजा करता है, वही इक़ीक़त को जान सकता

है और वही निजात हासिल कर सकता है । (७-२० से ३०)

आठवां अध्याय

आठवें अध्याय में फिर कहा गया है कि—

आदमी को मरते वक्त, एक परमेश्वर को याद करते हुए ही यह तन छाँड़ना चाहिए । तब ही आदमी परमेश्वर को पहुँच सकता है । जो लोग दूसरे देवताओं या दूसरी चीज़ों का ध्यान करते हैं वह अपने उन्हीं छोटे छोटे खयालों में फँसे रहते हैं । दुनिया में अपने सब फ़ज़ों को पूरा करते हुए भी हमेशा एक परमेश्वर की ही याद करते रहना चाहिए । वह परमेश्वर, सब कुछ और सब को जानने वाला, हमेशा से हमेशा तक रहने वाला, सब का चलाने वाला, सब का पालने वाला, बारीक से बारीक यानी आँख कान वगैरह कोई जिसे देख या सुन न सकें, खयाल की पहुँच से परे, अन्धेरे से दूर और ज्योति ही ज्योति यानी नूर ही नूर है । वेद के जानने वाले उसी को अक्षर (लाज़्जवाल) कहते हैं । न उसका शुरू है न आख़ीर । ये सब जानदार उसी के अन्दर हैं । वह इन सब में रमा हुआ है । इसी रूप में सब के अन्दर उसकी पूजा बन्दगी करना चाहिये । वेदों के रास्ते से यानी हवन, तप, दान वगैरह तमाम ऊपरी रीत रिवाजों से यह रास्ता कहीं बढ़कर और ऊँचा है । (८-५, ६, ७, ९, १०, ११, २२, २८)

बीच बीच के श्लोकों में यह बताया गया है कि मरते वक्त आदमी को किस तरह परमेश्वर में ध्यान लगाना चाहिए और अपने दिल में क्या क्या खयाल रखना

चाहिये । कुछ श्लोकों में बताया गया है कि कब कब और किन किन हालतों में मरने से आदमी अंधेरे रास्तों से जाकर स्वर्ग और नरक (जन्नत और दोज्जख) वगैरह में फँसता है और कब कब और किन किन हालतों में मर कर रोशनी के रास्तों से होकर असली मुक्ति (निजात) की तरफ बढ़ता है । गीता के ये श्लोक (इस अध्याय के २४ से २७ तक) सारी किताब के सब से मुश्किल श्लोक माने जाते हैं । टीका करने वालों ने इन पर तरह-तरह अपनी विद्या और बुद्धि को आजमाया है । लोकमान्य तिलक ने अपनी किताब 'गीता रहस्य' में कुछ और पहले के टीकाकारों की राय को ठीक मानते हुए इन श्लोकों का यह मतलब बताया है कि जो आदमी आखीर तक ऊपरी रूढ़ियों यानी रीत रिवाजों और कर्म काण्ड (शरीरत) में फँसा रहता है वह मरने के बाद अन्धेरे रास्ते से जाकर स्वर्ग और नरक के चक्कर में पड़ता है, और जो इन सब चीजों से ऊपर उठकर सब जानदारों को एक निगाह से देखता हुआ दुनिया की बेलौस, बेलगाव (निष्काम) और बेगारज (निस्वार्थ) सेवा में लगा हुआ शरीर छोड़ता है वह रोशनी के रास्ते से चलकर मुक्ति की तरफ कदम बढ़ाता है । (गीता रहस्य २६५ से २६८)

नवां अध्याय

नवे अध्याय के शुरू में कहा गया है कि हकीकत का राज (रहस्य) वही आदमी समझ सकता है जो किसी से डर

न रखता हो (अनसूयवं), ऐसा आदमी ही सच्चे धर्म को पाल सकता है। इसके बाद लिखा है—

परमेश्वर खुद अव्यक्त (अलखली) यानी निगाह और खयाल दोनों से ओभल है। पर यह सारा जगत उसी से रमा हुआ है। सब जानदार (मखलूक) उसी के अन्दर हैं। जिस तरह सब जगह जाने वाली हवा हमेशा आकाश के अन्दर रहती है उसी तरह सब जानदार परमेश्वर के अन्दर रहते हैं। (६-४, ६)

जो लोग समझ बूझकर परमेश्वर की उपासना करते हैं वे एक में अनेक और अनेक में एक यानी वहदत में कसरत और कसरत में वहदत को देखते हैं। वह जिधर देखते हैं उधर ही उन्हें ईश्वर का मुंह दिखाई देता है। सब धर्मों और फ़िर्कों में, सब तरह के यज्ञों और रीत रिवाजों में, वही परमेश्वर मौजूद है। हवन में वही हवन है, वही सामग्री है, वही आग है और वही मन्त्र है। वही अमृत है, वही मौत है। वही इस दुनिया का पिता है, वही माता है, वही संभालने वाला और वही पितामह (सब का मूरिसे आला) है। वही ओंकार है। वही ऋग्वेद, सामवेद और वही यजुर्वेद है। वही हरकत है, वही पालने वाला, वही मालिक, वही देखने वाला, वही सब के रहने की जगह, सबका सहारा, वही सबका भला चाहने वाला, सब का पैदा करने वाला, सब का नाश करने वाला, सब का आधार, सब का आखीर और सब का बीज है, ऐसा बीज जो कभी खराब नहीं होता। वही सूरज के रूप में तपता है। वही बारिश को रोकता और फिर बरसाता है। (६-१५ से १६)

वेदों के मानने वाले हवन और ऐसे ही रीत रिवाजों के जरिये

स्वर्ग (बहिर्गत) वगैरह के सुख भोगने की लालसा करते हैं । पर उनके इन कामों के नतीजे थोड़ी देर तक ही रहते हैं । (६-२०, २१)

जो लोग सच्चाई के साथ दूसरे देवताओं की पूजा करते हैं, वे भी एक तरह एक परमेश्वर ही की पूजा करते हैं । क्योंकि सब ऊपरी रीत रिवाजों को अपनाने वाला एक परमेश्वर ही है । सब रूप उसी के रूप हैं । लेकिन इन लोगों का रास्ता ठीक नहीं । यह लोग परमेश्वर को ठीक ठीक नहीं समझते, इसीलिए गिरते हैं । जो जिस रूप की पूजा करता है वह उसी रूप को पाता है । देवताओं की पूजा करने वाले देवताओं को, पितरों की पूजा करने वाले पितरों को, आदमियों की पूजा करने वाले आदमियों को और एक परमेश्वर की पूजा करने वाले परमेश्वर को पाते हैं । फूल पत्ती फल या जल जो चीज़ भी कोई परमेश्वर को भक्ति के साथ चढ़ाता है, परमेश्वर उसे प्रेम के साथ मंज़ूर करते हैं । इसलिये—

यत्करोषि यदशनासि यज्जुहोषि ददासि यत्

यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम् । (२७)

ऐ अर्जुन ! खाना पीना, करना धरना, देना लेना जो कुछ भी तू करे सब उसी एक परमेश्वर के लिए कर, अपने लिए नहीं । यही परमेश्वर को पाने का तरीका है । उस परमेश्वर को जो सब जानदारों में एक बराबर मौजूद है (समोऽहं सर्वभूतेषु), और जिसे न किसी से दुश्मनी है, न किसी से मोह । जो आदमी इस तरह सब के अन्दर रहने वाले परमेश्वर के साथ अपने दिल को लगाता है वही परमेश्वर को पाता है । वह परमेश्वर में रहता है और परमेश्वर उसमें । (६-२३ से २६, ३४)

इसका मतलब यह है कि तरह तरह के सम्प्रदाय, फिर्के, पूजा बन्दगी के अलग अलग तरीके, रीत रिवाज सब उसी ईश्वर से हैं। आदमियों के सब इष्टदेव यानी माबूद उसी के रूप हैं। इस निगाह से ये सब रास्ते सच्चे हैं। लेकिन ये सब अधूरे हैं। समझदार आदर्मी को चाहिये कि इन सबको छोड़ कर उसी एक परमेश्वर की पूजा बन्दगी करे जो सब के अन्दर मौजूद है, जो सबकी जान है, अपने अन्दर से दुई और गैरियत के खयाल को मिटाकर किसी से डाह दुशमनी न रखते हुए, अपनी आत्मा को शुद्ध करे और फिर सबके साथ अपने कर्ज को पूरा करते हुए सब की आत्मा के अन्दर परमात्मा की आराधना (पूजा) करे।

दसवां अध्याय

दसवें और ग्यारहवें अध्यायों में उस परमेश्वर का जो 'सत्य' (हक़) है, जिसकी सचाई के सामने बाक़ी सब चीज़ें भूठी हैं, जो हर तरह के व्यक्तित्व (शख़सीयत) से अलग है, जहाँ न 'मैं' है न 'तू' है, न 'वह' है, जो सब तरह की अलहदगी और दुई से ऊपर है, जिस तक खयाल की पहुँच नहीं, जो सब में और सब जगह रमा हुआ है, उस परमेश्वर की बेअन्त विभूतियों (ज़हूरों) और उसके विश्वरूप को, उसके हमागीर वजूद को, समझाने की कोशिश की गई है। लिखा है—

वह कभी पैदा नहीं हुआ, उसका कोई शुरू नहीं है, वह सब

दुनियाआ का मालिक है (लोकमहेश्वरम्) । सब देवता और महर्षि उसी से पैदा हुए हैं । इन्सानो कौम के सब पुरखे जिनको नसलों से दुनिया के तमाम लोग पैदा हुए हैं उस एक परमेश्वर ही के मानस पुत्र हैं यानी उसी के खयाल से पैदा हुए हैं । लोगों के दिलों में जितनी तरंगे उठती हैं, सब उसी से पैदा होती हैं । वही सारी दुनिया का पैदा करने वाला है । वे लोग समझ वाले हैं जो उस परमेश्वर से लौ लगाये हुए एक दूसरे से हमेशा उसका जिक्र करते हैं, आपस में समझते समझाते हैं और इस तरह एक दूसरे के साथ मिलकर तसल्ली और आनन्द पाते हैं ।

मच्चित्ता मदगतप्राणा बोधयन्तः परस्परम्

कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च ।

ऐसे लोग ही सच्चे ज्ञान को हासिल करते हैं । वे ही परमेश्वर को पा सकते हैं ।

वह पुरुषोत्तम, अल्लाह, अपने को अपने ही से जानता और पहचानता है । आदमी उसको सिर्फ उसकी विभूतियों (जहूरों) के जरिये ही सोच समझ सकता है । ये ईश्वरी विभूतियां बेअन्त हैं । मिसाल के तौर पर उसकी थोड़ी सी विभूतियां ये हैं—

सब जानदारों में वही जान है । वही सब का शुरू, बीच और आखीर है । आदित्यों में (अलग अलग ब्रह्माण्डों के सूर्यों में) वह विष्णु है, चमकती हुई चीजों में वह सूरज है, ...नक्षत्रों में वह चाँद है, वेदों में वह सामवेद है, देवताओं में इन्द्र है, इन्द्रियों में मन है, रुद्रों में शंकर, अनार्य लोगों में यानी यक्ष और राक्षसों में कुबेर,

वसुओं में अग्नि, पर्वतों में मेरु, ... पानी की जगहों में सागर, महर्षियों में भृगु... टिकी हुई चीजों में हिमालय, दरख्तों में पीपल, देवर्षियों में नारद... घोड़ों में उच्चैःश्रवा... हाथियों में ऐरावत, आदमियों में राजा, हथियारों में वज्र (विजली)... पैदा करनेवालों में कामदेव, साँपों में वासुकी, नागों में शेषनाग... हाकिमों में यम, खाजानेवालों में काल (वक्त), जानवरों में शेर, परिन्दों में गरुड़, हथियारबन्दों में राम, ... पानी के जानवरों में मगर, नदियों में गंगा, ... विद्याओं में अध्यात्म विद्या (रुहानियत)... अक्षरों (हरफों) में अकार (अलिफ), ... सब तरफ उसके मुँह है... वही सब को खत्म करने वाली मौत है, वही सब को पैदा करने वाला है, वही कीर्ति (शुहरत) है... वही मेधा (समझ) है... छन्दों में गायत्री छन्द, ... महीनों में अग्रहन, मौसमों में वसन्त, छलियों में जुआ, तेजस्वियों का तेज, जीत, मेहनत, असलीयत, यादवों में वासुदेव, पाँडवों में अर्जुन, मुनियों में व्यास, कवियों में उशना कवि (शुक्राचार्य), दमन करने वालों में दण्ड, .. जीत चाहने वालों में इन्साफ़, छिपी हुई चीजों में मौन (खामोशी), जानियों का ज्ञान, सब जानदारों का बीज वही है, चराचर में कोई चीज़ नहीं है जो बिना उसके हो, उसकी लीला का कोई ओर छोर नहीं है...

यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा

तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोऽशसम्भवम् । (४१)

यानी दुनिया में जो चीज़ भी शान वाली, शोभा वाली या तेज वाली है, वह उसी के तेज के एक ज़र्रे (अंश) से पैदा हुई है ।
(१०-१६ से ४१)

इस निगाह से सब देशों, सब कौमों और सब धर्मों के महापुरुष, अवतार, पैगम्बर, तीर्थङ्कर वगैरह, और सब के इष्टदेव (माबूद) उसी परमेश्वर के अंश हैं ।

वह अपने सिर्फ एक अंश से इस सारे जगत को संभाले हुए है । (१०-४२)

इस सब का मतलब यह है कि परमेश्वर 'अचिंत्य' यानी खयाल की पहुँच से परे और 'अव्यक्त' यानी रंग रूप से दूर है, लेकिन सब में रमा हुआ है, इसलिये सब के साथ अपने एकपन या अपनेपन को महसूस करके ही आदमी सबके अन्दर परमेश्वर के दर्शन कर सकता है ।

इसी को ग्यारहवें अध्याय के शुरू में अध्यात्म' यानी रूहानियत कहा गया है ।

ग्यारहवां अध्याय

इसके बाद योग के मालिक श्रीकृष्ण की कृपा से अर्जुन की ज्ञान की आँखें खुल गईं और उसने ज्ञान की आँखों से परमेश्वर के इस 'विश्वरूप' को देखा । उसने देखा कि—

परमेश्वर के सैकड़ों और हजारों तरह तरह के रूप हैं । सारी दुनिया, जानदार और बेजान, उसी के अन्दर है । उसके सब तरफ़ मुँह हैं । हजारों सूरज की एक साथ रोशनी से बढ़कर उसकी ज्योति है । आर्य कौम के सब ऋषि मुनि और अनार्य कौमों के सब बड़े बड़े लोग (उरगाश्च दिव्यान्) उसी परमेश्वर के अन्दर हैं । सब देवता और सब प्राणी उसी के अन्दर हैं । उसके बहुत सी भुजाएँ

बहुत से पेट, बहुत से मुह, बहुत सी आंखें और बहुत से रूप हैं। यहाँ तक कि सब रूप उसी के रूप हैं। सब तरफ़ वही वह है। उसका न शुरु है, न बीच, न आख़िर। वह विश्वरूप है और विश्व (सारी दुनिया) का मालिक। उसका प्रकाश (नूर) चारों तरफ़ फैला हुआ है। सूरज और चाँद उसकी आंखें हैं। उसकी शक्ति बेअन्त है। वह आसमान और ज़मीन को और दसों दिशाओं को पार किए हुए है। सब डरने वाले उसी से डरते हैं। सब स्तुति (हम्द) करने वाले उसी की स्तुति करते हैं। सब मज़हबों, कौमों और देशों के लोग उसी की तरफ़ टकटकी लगाये हैं। वही हमेशा रहने वाला है, वही हमेशा से धर्म की हिफ़ाज़त करता है। जिस तरह सब नदियाँ समुद्र में जा गिरती हैं, उसी तरह सब दुनिया और सब जानदार आख़ीर में परमेश्वर में ही जा मिलते हैं। वह देश (मकान) और काल (ज़मान) दोनों से परे है। वही काल (मौत) है। बाक़ी सब महज़ एक बहाना हैं। वही अक्षर (लाज़वाल) है। वही व्यक्त (ज़ाहिर) है। वही अव्यक्त (बेनिशान) है। वही दोनों से परे है। वही आदि देव है। वही जानने वाला और वही जानने की चीज़ है। वह अपने बेअन्त रूप से सारे विश्व में रमा हुआ है। वही वायु है। वही यम है। वही अग्नि है। वही वरुण है। वही चन्द्रमा है। वही प्रजापति (ब्रह्मा) है। वही सब का परदादा है। उसे हज़ार बार नमस्कार ! फिर फिर नमस्कार ! सामने से और पीछे से सब तरफ़ से नमस्कार ! वह अनन्त-वीर्य है। वह बेअन्त हिम्मत वाला है। वह सब को अपने अन्दर समाकर फिर भी सब का सब बाक़ी है। सब का पिता, सबका पूज्य और सब से बड़ा है। उसकी कोई दूसरी मिसाल या उस जैसा

कोई नहीं। वह अकेला आप है। वह आदमी की शकल में सब का दोस्त है। वह सबका प्यारा है। (११-८ से ४३ सार)

वह न वेदों के ज़रिये जाना जा सकता है, न यज्ञों के, न पूजा पाठ के, न दान के, न तरह तरह की रस्मों के, न बड़े बड़े तपों के। आदमी उसे सिर्फ “आत्मयोग” के ज़रिये यानी अपने नफ़्स को क़ाबू में करके और “अनन्य” भक्ति के ज़रिये ही, वह भक्ति जिसमें किसी दूसरे को उसका शरीक न किया गया हो, उसे जान सकता है, ठीक ठीक देख सकता है और उसी में लय या फ़ना होकर उसी में समा सकता है। (११-४८, ५३, ५४)

उसका सब से सुहावना रूप, सब से प्यारा रूप, जिससे आदमी को तसल्ली और शान्ति मिल सकती है “मनुष्य रूप” है (११-५१) ❀ । वह सब रूपों में है।

यह सभी उसका “विश्वरूप” है। इसलिये आदमी को चाहिये कि उसी के लिये सब काम करे, उसी को अपना मक़सद समझे, एक उसी की भक्ति करे, अपने स्वार्थ खुदी और मोह से अलग रहे, और दुनिया के “सब प्राणियों के साथ दोस्ती और मेल रखे (निर्वैः सर्वभूतेषु)” । वस ऐसा आदमी ही ईश्वर को पा सकता है। (११-५५)

बारहवां अध्याय

बारहवें अध्याय में, जिसका नाम भक्ति योग है, अर्जुन ने

❀ शक़्ले इन्सा में खुदा था मुझे माज़ूम न था,

चौद बादल में छिपा था मुझे माज़ूम न था । (सूफी)

फिर यह सवाल उठाया कि परमेश्वर की सगुण रूप में यानी उसकी स्रक्तों का खयाल करते हुए, पूजा करने वाले, और निगुण रूप में, खालिस लामकान का ध्यान करने वाले इन दोनों में से कौन ज्यादा ठीक रास्ते पर है ? गीता का जवाब है कि—

जो लोग पूरी श्रद्धा के साथ भगवान के सगुण रूप का उपासना करते हैं वे भगवान की नज़र में ज्यादा ठीक हैं। लेकिन जो लोग भगवान के उस परब्रह्म रूप की उपासना करते हैं जो “अक्षर” यानी हमेशा एकरस है, “अनिर्देश्य” है यानी जिसकी बाबत कुछ कहा हा नहीं जा सकता, जो अव्यक्त (बेनिशान) है, जो सब जगह रमा हुआ और अचिन्त्य यानी खयाल से परे है, जो कूटस्थ, अचल और अटल है, वे भी उसी परमेश्वर को पहुंचते हैं, बशर्ते कि उन्होंने अपनी सब इन्द्रियों पर क़ाबू पा लिया हो, वे सब को एक निगाह से देखते हों और हमेशा “सर्वभूतहिते रताः” यानी सब जानदारों की भलाई के कामों में लगे रहते हों (१२-२,३,४)। लेकिन अव्यक्त की उपासना का रास्ता ज्यादा मुश्किल है (१२-५)। इसलिये सब कामों का नतीजा ईश्वर पर छोड़ कर और उसी का ध्यान करते हुए, अपने कर्तव्य पालन में लगे रहना चाहिये (१२-६)। जो किसी से बैर नहीं करता, जो सब का दोस्त है, जो सब पर दया करता है, जिसमें ‘मेरे तेरे’ का खयाल नहीं है, जिसमें अहंकार यानी खुदी नहीं, जो सुख दुःख में एक सा और सब को माफ़ कर देने वाला है, जो हमेशा सन्तुष्ट (राज़ी) है, जिसने अपने को जीत लिया है, जिसका इरादा पक्का है और जिसने अपने मन और

बुद्धि को ईश्वर में लगा रखा है, ऐसा ईश्वर का भक्त ईश्वर को प्यारा है (१२-१३, १४) । जिससे दुनिया के किसी आदमी को किसी तरह का डर नहीं और न जिसे किसी से किसी तरह का डर है, जो खुशी, रञ्ज और डर से ऊपर उठ गया है, वह ईश्वर को प्यारा है (१२-१५) । जो हर हाल में राज़ी पाक, बिना आलस्य, मेरे तरे मे ऊपर और दुःख से परे है, जो नतीजे की परवाह न कर हमेशा अपने फ़र्ज़ के पूरा करने में लगा रहता है, वही भक्त ईश्वर को प्यारा है (१२-१६) । जो न आनन्द से फूलता है और न दुःखो से दुःखी होता है, जिसे न किसी चीज़ के जाने का रञ्ज और न पाने की खुशी, जिसने अपने लिये अच्छे और बुरे दोनों तरह के नतीजों का त्याग कर दिया है, वह भक्त ईश्वर को प्यारा है (१२-१७) । जो आदमी दोस्त और दुश्मन दोनों को एक निगाह से देखता है, जो मान और अपमान दोनों में एक बराबर रहता है, जो सरदी, गरमी, सुख, दुख में एक सा है, जिसे मोह नहीं है, जिसके लिये बदनामी और नेकनामी बराबर है, जो फ़ज़ूल नहीं बोलता, जो हर हाल में राज़ी रहता है, जो किसी घर को अपना घर नहीं मानता, जिसका दिल अडिग है, वह भक्त ईश्वर का प्यारा है (१२-१८) । जो लोग इस “धर्म्मामृत” को श्रद्धा के साथ पालते हैं और उसी पर चलते हैं, जो ईश्वर में लौ लगाए हैं, वे भक्त ईश्वर को बहुत ही प्यारे हैं (१२-२०) ।

तेरहवां अध्याय

तेरहवां अध्याय गीता का सब से ज्यादा दार्शनिक (फन

सफ़ियाना) अध्याय है । वेदान्त शास्त्र (ब्रह्मसूत्रों) का गीता में सिर्फ़ एक बार नाम आया है और वह इसी अध्याय में । आत्मा के अलावा जानने की चीज़ें क्या हैं, यानी ज्ञान का 'मैदान' क्या है, और आत्मा जो इस सब को जानता है क्या है, सच्चे ज्ञान को पाने का रास्ता क्या है, असली चीज़ जानने की क्या है और सच्चा ज्ञान या ठीक निगाह किसे कहते हैं, यह सब इस अध्याय में बताया गया है ।

मोटे तौर पर यह शरीर (बदन) जानने की चीज़ है और आत्मा इसे जानने वाला है लेकिन बदन में सिर्फ़ यह जड़ जिस्म ही नहीं है । पांच महाभूत (मिट्टी, पानी, हवा, आग और आकाश), अहंकार (खुदी), बुद्धि (अकल), प्रकृति (कुदरत) पांच ज्ञानेन्द्रियां (हवास), पांच कर्मेन्द्रियां (हाथ पैर वगैरह) मन और पांचों ज्ञानेन्द्रियों के अलग अलग विषय (मज़मून), ऐसे ही ख्वाहिश, दुःख, सुख, दुःख, टक्कर, होश, धीरज, ये सब जानने की चीज़ें हैं । इन सब में उलट फेर होते रहते हैं । और जो शुद्ध पुरुष, जो ज्ञान, इन सब में रमी हुई है उसमें उलट फेर नहीं होते । वही जानने वाला है । वही इस देह का मालिक, वही परमात्मा और परम पुरुष है । वह हमेशा रहने वाला और एक रस है (१३-१, २, ५, ६, २२) । जानने वाला और जानने की चीज़ें इन दोनों के मेल से ही सारी दुनिया बनी है (१३-२६) ।

सच्चे ज्ञान यानी सच्ची जानकारी के हासिल करने का यह रास्ता बताया गया है—

धमंड न करना; किसी से छल न करना; अहिंसा; सबको माफ़ कर देना; ईमानदारी; गुरु के पास बैठना; पाक साफ़ रहना; अडिग रहना; मन को अडोल रखना; अपने ऊपर दुःख; इन्द्रिय विषयों यानी शहवत की चीज़ों से दिल को हटाना; अहंकार या खुदी का न होना; जन्म, मौत, बुढ़ापा, बीमारी और दुःख, इनकी बुराई को समझना; किसी से मोह न होना; औरत बच्चों, घर वगैरह में अपने को भूल न जाना; चाहे कोई बात अपने मनकी हो या उसके खिलाफ़ हो, हर हालत में अपने दिल को एक सा रखना; ईश्वर में भक्ति; कभी कभी अकेले में रहने की आदत; भीड़ से बचने की ख्वाहिश; अध्यात्म (रूहानियत) की तरफ़ लगन; सच्चाई को जानने की इच्छा; —यह सब सच्चे ज्ञान को पाने का रास्ता है। यही सच्चा ज्ञान है। इससे उलटा सब अज्ञान (जहालत) है (१३-७-११)। इस सब से बढ़कर जानने की चीज़ क्या है? वह परब्रह्म (अल्लाह) जिसका कोई शुरू नहीं, जिसके बारे में न 'है' कहा जा सकता है, न 'नहीं'। जिसके सब तरफ़ हाथ, पैर, कान, सिर और मुंह हैं, जो सब में रमा हुआ और सब से परे है। जिसमें सब इन्द्रियों (हवास) के गुण मालूम होते हैं, पर जिसके कोई इन्द्रिय नहीं है। जिसे किसी से मोह नहीं, पर जो सब का सहारा है। जो निर्गुण (बेसिफ़ात) है, लेकिन सब गुणों (सिफ़तों) का ख़ज़ाना है। जो सब जानदारों के अन्दर और सब के बाहर है। जो चल भी है और अचल भी। जो इतना सूक्ष्म (लतीफ़) है कि जाना नहीं जा सकता। जो दूर से दूर और पास से पास है। जो सब प्राणियों में एक अदृष्ट रूप से भी मौजूद है और अलग अलग भी है, सब का पालने वाला है, सब का मारने

वाला और फिर उनके रूप में खुद पैदा होने वाला है। अंधेरे से दूर, सब ज्योतियों की ज्योति (नूर का भी नूर)। सब के दिलों में रहने वाला, वही ज्ञान है और वही ज्ञेय यानी जानने की चीज़ (१३-१२ से १७)। ध्यान, ज्ञान और कर्म तीनों उसे जानने के रास्ते हैं (१३-२४)। उसी आदमी को निगाह सच्ची निगाह है जो सब जानदारों में एक बराबर मौजूद एक परमेश्वर को देखता है। जो परमेश्वर को सब जगह रमा हुआ देखकर किसी दूसरे को दुख देकर अपने हाथ से अपनी हिंसा नहीं करता वही परमगति (कमाल) को पाता है। जब आदमी सब अलग अलग जानदारों के अन्दर एक ही परमेश्वर को देखने लगता है, तब वह उस पूर्ण ब्रह्म को, उस परमात्मा को पहचानता है, जो हमेशा एक रस निर्गुण (बेसिफात) और निर्विकार (तबदीलियों से ऊपर) है। जिस तरह आकाश सब जगह रहते हुए भी बेदाग रहता है उसी तरह आत्मा सब जिस्मों में रहते हुए भी बेदाग रहता है। जिस तरह एक सूरज सारी दुनिया को रोशनी देता है, उसी तरह एक आत्मा इस सारे मैदान को रोशन करती है। (१३-२७ से ३३)

चौदहवां अध्याय

इस अध्याय में सत्त्व (सकून), रजस (हरकत), और तमस (काहिली) इन तीनों गुणों को बयान किया गया है—

सत्त्व, रजस और तमस यह तीनों गुण प्रकृति (मादे) से पैदा होते हैं। यह तीनों ही जीव (रूह) को जिस्म में बाँध कर रखते हैं (गुण शब्द के एक माइने रस्ती भी हैं)। इनमें सत्त्व पाक साफ़ और

रोशन है। वह जीव को सुख और ज्ञान के साथ बाँधता है। रजस मोह रूप है। वह लोभ और ख्वाहिश से पैदा होता है और जीव को इच्छा और कर्म (कामों) में बाँधे रखता है। तमस अज्ञान (जहालत) और अन्धेरे से पैदा होता है। वह इसे ग्राफिली, काहिली और नींद में फंसाए रखता है। इन तीनों में बराबर खींचातानी होती रहती है। मरते वक्त जिस गुण का आदमी में जोर होता है वैसा ही उसे आगे को नतीजा मिलता है। आत्मा या परमात्मा इन तीनों गुणों से ऊपर है। इसलिए जो आदमी तीनों गुणों से ऊपर उठ जाता है, यानी 'गुणातीत' हो जाता है, वही इस दुनिया से निजात पाता है। (१४-५ से २०)

तीनों गुणों से ऊपर या 'गुणातीत' उसे समझना चाहिये जो न रोशनी की ख्वाहिश करता है न तरह तरह के कामों में फंसे रहने की, और न सुस्ती या काहिली में फंसेता है, और न इन तीनों हालतों में से किसी से भी घबराता है; उदासीन (बेलौस) की तरह जो सुख दुख को एकसा मानता है और इन हालतों के बदलने से अपने अन्दर बिल्कुल डारवाँडोल नहीं होता ; जो सुख, दुख, मिट्टी, पत्थर, सोना, चाँदी, मीठा, कड़ुवा, नेकनामी और बदनामी सब में एक सा धीर और अडोल रहता है; जो मान अपमान, दोस्त और दुश्मन इन सब में एक बराबर रहता है; जो सब ख्वाहिशों से ऊपर है, वही 'गुणातीत' है। जो परमेश्वर से सच्ची लौ लगाता है वह इन गुणों से ऊपर उठकर परमेश्वर के "साधर्म्य" को पाता है, यानी खुद उस जैसा होकर उसी में लीन (फना फिल्लाह) हो जाता है, क्योंकि परमेश्वर ही आत्मा यानी जान का, अमृत का और

अखंड सुख का ज्ञाना है । (१४-२, २२ से २७)

पन्द्रहवां अध्याय

इस अध्याय में बताया गया है कि यह दुनिया एक बड़े पीपल के दरख्त की तरह है, जिसकी बाबत लिखा है कि—

उसकी जड़े ऊपर हैं और शाखें नीचे । यह दरख्त ही सब से बड़ा रहस्य (राज्ञ) है । (‘अश्वत्थ’ लफ्ज के मायने ‘पीपल’ भी हैं और ‘कल न रहने वाला’ यानी फ़ानी भी हैं), वेद (ज्ञान) उसकी पत्तियां हैं । सत्व (सकून), रज (हरकत), और तम (काहिली) उसकी नसें हैं । विषय वासनाएं (नफ़सानी ख़्वाहिशें) उसकी डालियां हैं । उसकी कुछ जड़े नीचे को भी निकली हुई हैं । ये वे ख़्वाहिशें हैं जो आदमी को दुनिया की हविसों में बांधे रखती हैं । इस डरावने दरख्त को एक ही हथियार काट सकता है और वही इसके रहस्य को हल कर सकता है । वह हथियार ‘असंग शस्त्र’ है, यानी किसी चीज़ के साथ भी लगाव या मोह न रखना । उसी हथियार से इसे काटकर आदमी शान्ति और परमपद (कमाल) पा सकता है और परम पुरुष अल्लाह से मिल सकता है । (१५-१ से ४) वे ज्ञानी लोग ही, जिनमें न अहंकार (खुदी) है और न मोह, जिनके दिलों में दुनिया से लगाव नहीं रहा, जो अध्यात्म (रूहानियत) में लगे रहते हैं, जिनकी ख़्वाहिशें दूर हो चुकीं, जो दुई से ऊपर उठ गये, जिन पर सुख दुःख असर नहीं करता, वे ही उस परमपद को पाते हैं जहाँ न सूरज चमकता है, न चाँद, न आग, और जहाँ पहुँच कर फिर वहाँ से वापस नहीं आया जाता (१५-५, ६) । जीव (रूह) ईश्वर

का ही “अंश” है। मन और इन्द्रियों (हवास) के क्राबू में आकर वह संसार के चक्र में पड़ा हुआ है। इन्द्र ने उसे यहां बांध रखा है (१५-७)।

इस सारे रहस्य की असलियत वही ईश्वर है। सूरज में, चांद में और आग में सब तेज उसी का तेज है। वही धरती के अन्दर से सब प्राणियों को सँभाले हुए है। वह चांद के ज़रिये जड़ी बूटियों में रस पहुंचाता है। जानदारों में वह जठराग्नि (हरारते गरीज़ी) है। वही अन्न पचाता है। वही सब के दिलों के अन्दर बैठा हुआ है (सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो)। उसी से इल्म, याददाश्त, वगैरह पैदा होती हैं। योगी उसे अपने अन्दर धस कर देखते हैं। वही पुरुषोत्तम है। वही सब कुछ जानता है, और जो उसे जान जाय वह भी सब कुछ जानता है। (१५-११ से १५, १८, १९)

सोलहवां अध्याय

इस अध्याय में कहा गया है कि—

इस दुनिया में दो तरह की तबीयतों के आदमी होते हैं। एक दैवी सम्पद यानी फ़रिश्तों की सी तबीयत वाले या अल्लाह वाले, और दूसरे आसुरी सम्पद यानी शैतानी तबीयत वाले या गुमराह। दैवी सम्पद वह है जो आदमी को आज्ञादी और निजात (मुक्ति) की तरफ़ ले जाती है। आसुरी सम्पद उसे बन्धनों में जकड़े रखती है। (१६-५)

दैवी सम्पद में ये छव्वीस बातें शामिल हैं—(१) किसी चीज़ से डरना नहीं, (२) दिल की सफ़ाई, (३) ज्ञान हासिल करने की

कोशिश, (४) दान देने की आदत, (५) इन्द्रियों पर काबू, (६) दूसरों की भलाई करना, (७) अच्छी चीज़ें पढ़ना, (८) तप, (९) छल कपट न करना, (१०) अहिंसा, (११) सच्चाई, (१२) गुस्सा न करना, (१३) त्याग, (१४) शान्ति, (१५) किसी की चुगली न करना, (१६) सब पर दया करना, (१७) लोभ न करना, (१८) दीनता, (१९) शराफ़त, (२०) गम्भीरता, (२१) तेज, (२२) क्षमा, (२३) धीरज, (२४) पवित्रता, (२५) किसी से दुश्मनी न करना और (२६) घमंड न करना (१६-१ से ३) ।

आसुरी सम्पद वाले के स्वभाव में इस तरह की बातें होती हैं—
(१) ढोंग, (२) ग़रूर, (३) अपने को बड़ा मानना, (४) गुस्सा, (५) दिल की सख़्ती और (६) अज्ञान (जहालत) (१६-४) ।

इसके बाद तेरह श्लोकों में आसुरी सम्पद (शैतानी तबीयत) वाले के रहन सहन और ढङ्ग को बयान किया गया है । आजकल के कुछ लोगों खासकर बड़ी हुई पच्छिमी क्रौमों के बड़े बड़े नेताओं और उन्हीं के रङ्ग में रंगे हुए लोगों की यह इतनी अच्छी तसवीर है कि इन तेरह श्लोकों का पूरा पूरा तरजुमा नीचे दिया जाता है—

ये लोग नहीं जानते कि किस तरह के कामों में आदमी को लगाना चाहिये और किस तरह के कामों में नहीं । उनमें न पवित्रता होती है, न नेकी और न सच्चाई । वे कहते हैं कि—‘इस दुनिया का

कोई ईश्वर नहीं है, न इसमें कहीं सच्चाई है और न इसका कोई चलाने वाला है। जड़ परमाणुओं यानी ज़रों के मिलने से ही यह दुनिया बन गई है। आत्मा या रूह से इसका कोई वास्ता नहीं। मर्द और औरत के बीच की ख्वाहिश से ही यह सारा संसार पैदा हुआ है। कोई इसका पैदा करने वाला नहीं है।' दुनिया का बुरा करने वाले ये लोग जिनकी आत्माएं बरबाद हो गई हैं, जिनकी बुद्धि बहुत छोटी है, और जिनके काम बहुत तेज़ होते हैं, दुनिया के मिटाने के लिये ही इन ख्यालों का लेकर पैदा होते हैं। खुदी (अहंकार), डोंग (दम्भ) और ग़रूर (मद) से भरे हुए ये इस तरह की ख्वाहिशों के पीछे लगे रहते हैं जो कभी पूरी नहीं हो सकती। मोह में फंसे हुए, नापाक इरादे करके, और ग़लत ज़िद्दों में पड़कर वे अपनी कोशिशों में लग जाते हैं। वे इस तरह की लम्बी फ़िक्रों में पड़ जाते हैं जो मौत तक उन्हें घेरे रहती हैं। उन्हें इस बात का यक़ीन हो जाता है कि कामोपभोग यानी ऐशपरस्ती से बढ़कर और कोई चीज़ दुनिया में नहीं है। सैकड़ों उम्मीदों के जाल में फंसे हुए, काम (शहवत) और क्रोध (गुस्से) के शिकार वे अपने ऐश आराम के लिए अन्याय से धन इकट्ठा करने में भी लग जाते हैं। वे यही सोचा करते हैं कि आज मैंने अपना यह मनोरथ पूरा कर लिया, कल वह पूरा कर लूंगा, यह धन मेरा हो चुका, कल वह भी मेरा हो जायगा, उस दुश्मन को मैंने मार डाला, और दुश्मनों को भी मैं मार डालूंगा, मैं इस दुनिया का मालिक हूँ, मैं भोगने वाला हूँ, मैं कामयाब हूँ, मैं ताक़तवर हूँ, मैं सुखी हूँ, मैं धनी हूँ, मैं ऊंची नसल का हूँ, मेरे बराबर और दूसरा कोन है मैं हो

दुनिया का भला करूंगा, मैं जो जिसे चाहूंगा दूंगा, मैं मज़ा उड़ाऊंगा — अज्ञान से अन्धे हुए वे इसी तरह की बातें सोचा करते हैं। उनका मन तरह तरह की ख्वाहिशों में भटकता रहता है, वे मोह जाल से घिरे रहते हैं और अपनी ऐशपरस्ती में लगे हुए आखिर को गन्दे नरक में पड़ते हैं। अपने को वे बहुत बड़ा समझते हैं। धन और अल्पन के घमण्ड में चूर, अपनी ऐंठ में, वे दिखावे और ढोंग के लिए झूठे कर्मकाण्ड, यज्ञ वगैरह भी करते हैं। अहंकार, घमण्ड, बल, काम और क्रोध के कारण दूसरो के साथ बैर रखते हुए वे सब के अन्दर एक बराबर रहने वाले परमेश्वर के साथ बैर करते हैं। ये ज़ालिम दुनिया के लोगों में अधम (नीच) होते हैं। (१६-७ से १६)। उनका अन्त बहुत खराब होता है। वे सच्चाई या हक से दूर नीचे ही नीचे गिरते चले जाते हैं (१६-२०)।

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः,

कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् । (२१)

यानी आत्मा को बरबाद करने वाले नरक के ये तीन दरवाज़े हैं— काम, क्रोध और लोभ। इसलिये इन तीनों को छोड़ देना चाहिये। ऐ अर्जुन ! जो आदमी इन तीनों अन्धेरे दरवाज़ों से बच जाता है वही अपना भला करता है और वही आखिर में परागति यानी निजात पाता है। इसलिये आदमी को चाहिये कि सदाचार शास्त्र (नेकी के क़ानून) को ही अपना रास्ता दिखाने वाला बनावे, उसी पर चले, खुद अपनी ख्वाहिशों के पीछे न पड़े (१६-२१ से २४)।

सतरहवां अध्याय

इस अध्याय में अर्जुन ने फिर पूछा—

जो लोग आपके इन सदाचार के असूत्रों का खयाल न करते हुए खुद अपनी श्रद्धा (यक्कीन) से दुनिया में अपना फ़र्ज पूरा करते हैं और उसके लिए मुसीबतें झेलते हैं और त्याग करते हैं, उन्हें आप कैसा समझते हैं ? (१७-१)

श्रीकृष्ण ने जवाब दिया—

लोगों की तबीयतें तीन तरह की होती हैं, और तीन ही तरह की उनकी श्रद्धा होती है—सात्विकी, राजसी और तामसी (१७-२) । जैसी जिसकी तबियत वैसी ही उसकी श्रद्धा होती है । आदमी श्रद्धा का बना है । जिसकी जैसी श्रद्धा है वैसा ही वह खुद है (१७-३) । जो लोग ढोंग और अहंकार से, अपनी ख्वाहिशों और मोह के ज़ोर में, बिना समझे, गहरे तप भी करते हैं, मुसीबतें झेलते हैं और अपने जिस्म को तकलीफ़ पहुंचाते हैं, उनके ये तप और तकलीफ़ें भी शैतानी (आसुरी) हैं । सब के अन्दर रहने वाला परमेश्वर उनके इन तपों से खुश नहीं होता (१७-५, ६) । आदमी का खाना, पीना, उसका त्याग, उसका तप और दान सब तीन तीन तरह के हैं—सात्विक, राजस और तामस (१७-७) । जो काम सिर्फ़ फ़र्ज समझ कर किए जाते हैं, जिनसे अपने लिए फल की इच्छा बिल्कुल न हो, जो पक्षपात (अपने पराये के खयाल) से न किए गए हों, जो सोच समझ कर पूरे दिल और श्रद्धा से किए जावें, जिनमें कामयाबी या नाकामयाबी से करने वाले के दिल पर कोई असर न हो, और जिनके बदले में

किसी से अपने लिये फ़ायदे की इच्छा न हो, वे ही काम सात्विक हैं (१७-११, १७ से २०; १८-२३, २६)। जो काम फल की इच्छा से, लोभ से, ढोंग से, या अहंकार से या अपने नाम के लिए, या सत्कार, मान, पूजा पाने के लिए, या दूसरे पर उपकार के बदले में अपने लिए उपकार की उम्मीद से, ज़ोर लगाकर किए जाते हैं, वे राजस हैं (१७-१२, १८, २१; १८-२४, २७)। और जो काम सुस्ती से, बिना श्रद्धा के, बिना नतीजा सोचे, बेतरीके, दूसरे के फ़ायदे नुक़सान को न देखते हुए, मूर्खता या ज़िद से, दूसरे को बरबाद करने की गरज़ से, या जा बेजा, देश काल, मौक़ा या ठीक आदमी का ख़याल न करते हुए, हिंसा से, या दूसरे की मान मर्यादा इज़्ज़त का ख़याल न करके किया जाय वह तामस है (१७-१३, १९, २२; १८-२५, २८)। अपने से बड़ों की इज़्ज़त, जिस्म की सफ़ाई, सादगी, ब्रह्मचर्य और अहिंसा ये पाँच जिस्म के तप हैं। अपनी बात से किसी का दिल न दुखाना, सच बोलना, प्यारी लगने वाली बात कहना, जो बात दूसरे के लिए फ़ायदे की हो वह कहना, और अच्छी चीज़ें पढ़ना ये पाँच ज़बान के तप हैं। खुश रहना, शान्ति, मौन (ख़ामोशी), इन्द्रियों को क़ाबू में रखना और दिल की सफ़ाई ये पाँच मन के तप हैं (१७-१४ से १६)। ऐ अर्जुन ! जो काम बिना श्रद्धा, बेदिली से किया जावे वह न इस दुनिया में किसी काम का है, न दूसरी दुनिया में (१७-२८)।

गीता के इस छोटे से अध्याय में आदमों के सब कामों और उसकी नीयत की बड़ी सुन्दर कसौटी बता दी गई है।

अठारहवां अध्याय

आखिरी अध्याय में 'सन्यास' के दिखावटी रिवाज का खण्डन करते हुए कहा गया है—

अपने सब कामों के अन्दर से खुदगुरुजी निकाल देने को ही समझदार आदमी असली “सन्यास” कहते हैं, और सब कामों के फल का त्याग यानी अच्छे बुरे नतीजे की परवाह न करना ही सच्चा “त्याग” है। (१८-२)

गीता में जहाँ जहाँ 'फल के त्याग' या 'अच्छे बुरे नतीजे की परवाह न करने' का जिक्र है वहाँ मतलब सिर्फ यह है कि अपने कर्ज के पूरा करने में करनेवाले को चाहे सुख हो चाहे दुःख, नेकनामी हो, चाहे बदनामी, उसे इसकी बिल्कुल परवाह नहीं करना चाहिये, उसके दिल पर भी इसका कोई असर नहीं होना चाहिए। यह मतलब नहीं है कि कोई काम बिना नतीजा सोचे किया जावे। जो काम “बिना नतीजा सोचे...जा बेजा... का खयाल न करते हुए” किया जाय उसे पिछले ही अध्याय में “तामस” यानी सब से बुरा काम कहा गया है। 'फल त्याग' का मतलब सिर्फ अपने स्वार्थ या खुदगुरुजी का त्याग और 'सब के भले की इच्छा रखते हुए' (चिकीर्षुर्लोक संग्रहम् ३-२५) काम करना है। इसी को इस अध्याय में असली “सन्यास” या “त्याग” कहा गया है—

दूसरों की सेवा करना, दान देना और तप जैसे काम करने ही चाहिए। इनसे आदमियों की आत्माएं पाक होती हैं। लेकिन ऐसे

कामों को भी मोह छोड़कर, फल की परवाह न करते हुए, सिर्फ़ फ़र्ज़ 'कर्तव्य' समझकर करना चाहिये (१८-५, ६) । यही असली 'सात्विक' त्याग है (१८-६, ११) । मोह में आकर अपने फ़र्ज़ को छोड़ देना या बदन की तकलीफ़ के डर से फ़र्ज़ से पीछे हट जाना दोनों बुरे हैं (१८-७, ८) । ऐसे ही ज्ञान या समझ भी तीन तरह की है । सब जानदारों में अलग अलग रूपों के होते हुए भी एक ही अव्यय (लाज्जवाल) और अव्यक्त (बेनिशान) आत्मा को देखना, सात्विक समझ है । सब में अलग अलग आत्माओं को देखना राजस समझ है । वह निखट समझ जिससे आदमी बिना मतलब या असलीयत को समझे एक ही काम में अन्धे की तरह लिपटा रहता है और उसे ही सब कुछ समझ लेता है, तामस समझ है । (१८-२० से २२)

ठीक इसी तरह सब धर्मों और सब जातियों को एक समझना सात्विक, सबको अलग अलग समझना राजस और अपने ही धर्म या जाति को ठीक और दूसरों को ग़लत समझ बैठना तामस है ।

सुख भी तीन तरह का होता है । जो सुख शुरू में ज़हर की तरह और आख़ीर में अमृत की तरह है, जिससे आत्मा और बुद्धि को शान्ति मिलती है वह सुख सात्विक है । इन्द्रियों का सुख जो शुरू में अमृत की तरह और आख़ीर में ज़हर की तरह है राजस सुख है । जो सुख शुरू से आख़ीर तक आत्मा को सिर्फ़ मोह, नींद, आलस्य और सुस्ती में डाले रखता है, वह सुख तामस है । (१८-३७, ३८, ३९)

इसी तरह कर्त्ता, कर्म, बुद्धि और धीरज सब तीन तीन तरह के हैं।

सब धर्मों की एकता, सदाचार (नेकी), और सब में एक ही आत्मा को देखने पर जोर देते हुए गीता अलग अलग आदमियों के लिए अलग अलग 'धर्म' भी बताती है। अलग अलग आदमियों में गीता एक ही फरक मानती है, और वह अलग अलग "स्वभाव" यानी तबीयतों का फरक है। जन्म, जाति, देश, पन्थ, सम्प्रदाय वगैरह के कोई भी फरक गीता नहीं मानती—

जिस आदमी के स्वभाव में (स्वभाव प्रभवैर्गुणैः) शम (शान्ति), दम (अपने ऊपर क़ाबू), तप, शौच (पाकी), क्षमा (माफ़ करना), आर्जव (कपट न होना), ज्ञान विज्ञान और आस्तिक्य (ईश्वर में यक़ीन), इन चीज़ों की तरफ़ झुकाव हो, वह इन कामों में लगे। जिसमें बहादुरी, तेज, धीरज, होशियारी, लड़ाई में डटे रहना, दान और हकूमत इनकी तरफ़ झुकाव हो वह इस तरह के कामों में लगे। जो अपने 'स्वभाव' से खेती, जानवर पालना और तिजारत वगैरह इनके ज़्यादाह क़ाबिल हो वह इन्हें करे। और जो अपनी तबीयत से दूसरों की सेवा ख़िदमत करने के ज़्यादाह क़ाबिल हो वह इसमें लगे। (१८-४१ से ४४)

चारों में गीता ने 'स्वभाव' पर ही जोर दिया है। यही गीता की वर्ण व्यवस्था का मतलब है। इसमें छोटे बड़े ऊंचे नीचे या जन्म जाति का कोई सवाल नहीं। क्योंकि—

इस तरह हर आदमी अपने अपने काम में लगा हुआ ही सिद्धि यानी कमाल हासिल कर सकता है, बशर्ते कि वह अपने सब काम

उसी परमेश्वर के लिए करे जिसने सबको पैदा किया है और जो सब के अन्दर रमा हुआ है (१८-४५, ४६) । हर आदमी का जो “स्वभाव नियत” (स्वभाव से तय) काम है वही उसका “स्वधर्म” है । उसके खिलाफ उसे किसी दूसरे काम या धर्म की तरफ नहीं जाना चाहिए । (१८-४७)

यहां हर आदमी के स्वभाव, उसकी तबियत और उसकी क़ाबलीयत के मुताबिक दुनिया की यानी दूसरों की तरफ उसके फर्क की बात कही गई है, किसी तरह की जन्म की जाति या ऊंच नीच का जिक्र नहीं है ।

आदमी परमेश्वर को कैसे जान सकता है, यह बताते हुए फिर कहा गया है कि—

जिसकी बुद्धि हर तरह बेलौस (निर्मोह) है, जिसने अपने को जीत लिया है, जिसमें कोई ख़्वाहिश नहीं रह गई है, वह उस निर्मल बुद्धि के साथ, धीरज से अपने कां संभाले हुए, इन्द्रियों के सुखों से अलग रह कर, न किसी से राग, न किसी से द्वेष, अकेला रहकर, थोड़ा खा कर, अपने मन, वचन और तन को क़ाबू में रखकर, सच्चे वैराग्य के साथ, अपनी आत्मा में ध्यान लगाकर, खुदी, ज़ोर, धमकड़, शहवत, गुस्सा, धन जमा करना और मेरा तेरा, इस सबको छोड़कर, शान्त होकर, खुद ब्रह्मरूप हो जाता है । फिर वह न किसी बात की फ़िक्र करता है, न ख़्वाहिश, उसका दिल फूल की तरह खिल जाता है, वह सब जानदारों को एक निगाह से देखता है (समः सर्वेषु भूतेषु) और परमेश्वर को ठीक ठीक जानकर उसी में लीन (क़ना) हो जाता है । (१८-४६ से ५५)

सब काम ईश्वर के लिए ही करने पर बार बार जोर दिया गया है (१८-५७)। परमेश्वर सबके दिलों के अन्दर है, “ईश्वरः सर्व भूतानाम् हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति” (१८-६१), यह बात गीता में बार बार आती है।

आखीर में जिस बात को गीता में सबसे बड़े रहस्य (राज) की बात “सर्वगुह्यतमं” कहा है वह यह है कि—

सिर्फ एक परमेश्वर ही में मन को लगाओ, उसी की भक्ति करो, उसी के लिए सब काम करो, उसी के सामने सर को झुकाओ, और—“सर्व धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं ब्रज”, सब “धर्मों” यानी रीति रिवाजों, अलग अलग फिरकों को छोड़कर सिर्फ एक परमेश्वर का सहारा लो। यही एक मुक्ति हासिल करने का तरीका है। (१८-६४, ६५, ६६)

गीता का सार

गीता के १८ अध्यायों में से हरेक का अलग अलग सार (निचोड़) ऊपर दिया जा चुका है। इसमें जैसा हम शुरू में कह चुके हैं, हमने सिर्फ उस 'गीता-धर्म' को दिखाने की कोशिश की है, जो हमारी राय में हर जमाने और हर मुल्क के लोगों के लिए एक क्रोमती नसीहत है। तरजुमा करने में हमने जहाँ भरसक इस बात का ध्यान रखा है कि कहीं अर्थ का अनर्थ न हो वहाँ हमने हर जगह, हर श्लोक, हर शब्द और हर वाक्य को ज्यों का त्यों न देकर सार लेने की कोशिश की है।

गीता में यूँ तो, जीव और परमेश्वर यानी रूह और खुदा में क्या नाता है ? किस तरह परमेश्वर अव्यक्त यानी बेनिशान भी है और व्यक्त यानी हर चीज़ में मौजूद भी है ? मादा और रूह क्या चीज़ें हैं ? दुनिया कैसे बनी ? वगैरह सब दार्शनिक सवालों पर अपने ढङ्ग से बहस की गई है, और गीता का रुझान अद्वैतवाद (वहदतुलवजूद) की तरफ है, लेकिन फिर भी गीता कहती है कि सच्ची धार्मिक जिन्दगी बसर करने के लिए सिवाय एक ईश्वर के और किसी इस तरह के असूल में यकीन करना या न करना जरूरी नहीं है।

गीता का धर्म एक करने धरने की चीज़ है। दुनिया में खास तरह से जिन्दगी बसर करना ही धर्म है, यह मानना या वह मानना नहीं।

अब हम इन अट्टारह अध्यायों की तालीम का निचोड़ फिर से थोड़े से शब्दों में दे देना चाहते हैं।

उस ज़माने में बहुत से अलग अलग 'कुल' 'जातियाँ,' और 'वर्ण' इस देश में मौजूद थे जो सब जन्म से माने जाते थे। किसी पुराने ज़माने से हर कुल और हर जाति के बहुत से अलग अलग रीत रिवाज चले आते थे, जिन्हें "कुल धर्मों" और "जाति धर्मों" का नाम दिया जाता था (१-४०, ४३)। इन अलग अलग खानदानी धर्मों और जाति धर्मों का पालना इतना ज़रूरी माना जाता था कि अगर किसी खानदान की इन रीतों का पालना बन्द हो जाय, तो समझा जाता था कि उस घराने के सब स्त्री पुरुष, और उसके मरे हुए 'पितर' तक नरक को जाते हैं (१-४२) : पितरों को "पिण्ड" वगैरह देने का रिवाज भी था (१-४२), जिसका हक सिर्फ अपनी औलाद को ही होता था; कुदरती तौर पर लोग 'वर्ण संकर' यानी नसलों में गोल माल होजाने से बहुत डरते थे और इसीलिए अपने खानदान के किसी आदमी को मारना, चाहे वह "आततायी" जालिम भी क्यों न हो, "बहुत बड़ा पाप" माना जाता था (१-३६, ४५)। गीता इन सब रीति रिवाजों का खयाल करना तक समझदार आदमी के लिए "मोह", "दिल की कमजोरी" और "शान के खिलाफ़" बताती है। गीता इन

सब को गलत मानती है । (२-३ से १०)

तीनों वेदों ऋक्, यजुर और साम पर उन दिनों लोगों को बहुत भरोसा था । वेदों से उन्होंने यज्ञ, हवन, जप, तप वगैरह तरह तरह के काम सीख रखे थे । लोग बहुत से देवी देवताओं की भी पूजा करते थे । देवताओं के नाम पर हवन में तरह तरह की आहुतियां दी जाती थीं । चढ़ावे चढ़ाये जाते थे । देवताओं से अपने इस दुनिया के सुखों के लिए और स्वर्ग के लिए दुआएं मांगी जाती थीं । “स्वर्ग” का खयाल भी “भोग ऐश्वर्य” और “इन्द्रिय सुखों” का खयाल था । यज्ञों में “सोम” पीने का भी रिवाज था (२-४२, ४३, ४४, ५३,) वगैरह ।

गीता इन सब रीत रिवाजों से ऊपर उठने का उपदेश देती है । गीता इस तरह के वहमों में पड़े हुए लोगों को नासमझ कहती है और बताती है कि इनसे लोगों की अकल मारी जाती है (तयापहत चेतसाम् २-४२ से ४४), वेदों का कर्म काण्ड लोगों को तीनों गुणों में फंसाए रखता है, आदमी को इन तीनों से ऊपर हो जाना चाहिये । समझदार आदमी के लिये वेद वैसे ही फजूल हैं जैसे उस जगह कुआं जहां चारों तरफ पानी ही पानी हो (२-४५, ४६) । वेदों की इस तरह की तालीम से लोगों की मति फिर जाती है (श्रुति विप्रतिपन्ना बुद्धि २-५३) । और जिस आदमी के दिल में सच्चे कर्म योग की यानी दुनिया में अपना ठीक ठीक कर्ज पूरा करने की इच्छा भी पैदा हो जाती है उस फिर वेदों की कोई जरूरत नहीं रह जाती (६-४४)—“वेदों से, यज्ञों से, जप तप से

और इन तमाम रीत रिवाजों से आदमी को ईश्वर के दर्शन नहीं मिल सकते” (११-४८, ५३) ।

गीता इस बात को भी अच्छी तरह बताती है कि असली “यज्ञ”, असली “तप” वगैरह किसे कहते हैं । चौथे अध्याय में अपने जमाने के तरह तरह के यज्ञों को बयान करने के बाद गीता कहती है कि आदमी को अपने सब काम ही ‘यज्ञ के तौर पर’ (४-२३) यानी निस्वार्थ भाव से, अपनी खुदगारजी को अलग रखकर, दुई से ऊपर उठकर, किसी से दुश्मनी न रखते हुए, दूसरों के भले के लिए और ‘ईश्वरार्पण’ ईश्वर के लिए करने चाहियें (४-२२, २३, २४ वगैरह) । यही यज्ञ है । सब से बढ़कर यज्ञ वह ‘ज्ञान यज्ञ’ है, जिससे आदमी ‘सब को अपनी आत्मा के अन्दर और सब को ईश्वर के अन्दर देखता है’ (४-३५) । इस ज्ञान से बढ़कर आत्मा को पाक करने वाली चीज इस दुनिया में दूसरी नहीं है (४-३८) । ऐसे ही गीता ब्रह्मचर्य (अपने नफ्स पर काबू) और अहिंसा (किसी को तक्रलीक न देने) को जिस्म का तप; सच्ची, प्यारी और ऐसी बात कहने को जिससे किसी का दिल न दुखे और जिससे दूसरों का फायदा हो, जवान का तप; और अपनी इन्द्रियों पर काबू, दिल को साफ और शान्त रखने को मन का तप बताती है । (१७-१४ से १६)

इन्द्रियों के सुखों और स्वर्ग वगैरह की लालसा को गीता जगह जगह आत्मा की तरक्की में रुकावट बताती है और इन्हें छोड़ देने की हिदायत करती है ।

तरह तरह के मजहबी रीत रिवाजों के बारे में गीता की एक और राय भी है। वह यह है कि जो कम समझ लोग किसी तरह के रिवाजों को पूरा करते हुए अपने विश्वास (यक़ीन) के सहारे नेक कामों में लगे रहते हैं, अगर उनके विश्वास को हिला देने से डर हो कि वह नेकी से हट जावेंगे तो समझदार आदमी को चाहिये कि उनकी बुद्धि को डावांड़ोल न करे (३-२६, २६)।

अलग अलग देवताओं या ताक़तों की पूजा और एक ईश्वर की पूजा के अलग अलग तरीकों के बारे में गीता का खयाल और भी ज्यादा खुला और साफ़ है। गीता ईश्वर की बात कहती है कि उसका न कोई शुरू है न आखीर, वह सब में रमा हुआ और सब से अलग है, वह सब के दिलों में बैठा हुआ है, पर वह खयाल की पहुँच से भी परे है, न आदमी का दिमाग उसकी कल्पना कर सकता है और न ज़बान उसे बयान कर सकती है, आदमी के लिए इस तरह के निर्गुण ईश्वर का ध्यान कर सकना कठिन है (१२-३, ४, ५), इसलिए आदमी उसकी पूजा बन्दगी या उपासना सिर्फ़ उसके किसी एक गुण या सिफ़त को सामने रख कर या उसके किसी एक अंश या पहलू या उसकी किसी एक ताक़त को लेकर ही कर सकता है। आम तौर पर अलग अलग देवताओं के नाम परमेश्वर ही की एक एक सिफ़त या ताक़त के नाम हैं। इस तरह सब देवताओं की अलग अलग कल्पना (तख़य्युल) ईश्वर ही की अंश-कल्पना है और दुनिया के सब इष्टदेव यानी माबूद एक

परमेश्वर ही के रूप हैं। इसलिए किसी भी देवता की पूजा एक तरह से ईश्वर ही की पूजा है।

इसलाम सिवाय एक निराकार अल्लाह के किसी भी दूसरे की पूजा बन्दगी को गलत मानता है और कड़ाई के साथ रोकता है। पर ऊपर का खयाल कुछ मुसलमान सूफियों की किताबों में भी पाया जाता है। सतरहवीं सदी ईस्वी में शेख मुहिबुल्लाह इलाहाबादी एक मशहूर सूफी फकीर हुए हैं। उनकी और दाराशिकोह की खतकिताबत फारसी में छपी हुई है, जिसमें शेख मुहिबुल्लाह ने 'लाइलाहइल्लल्लाह' (नहीं है कोई माबूद सिवाय अल्लाह के) का मतलब बताते हुए लिखा है— “दुनिया के जितने माबूद हैं सब अल्लाह ही हैं।” सूफी मत की मशहूर फारसी किताब “गुलशने राज़” में भी ‘लाइलाह इल्लल्लाह’ के ठीक यही माइने लिए गए हैं। इस तरह के सूफी विद्वान अद्वैत यानी ‘बहदतुलबजूद’ के मानने वाले थे। उनकी रायमें अल्लाह एक है, उस जैसा दूसरा कोई नहीं, और दुनिया के सब माबूद (इष्टदेव) उसी एक अल्लाह के रूप हैं इसलिए किसी भी माबूद की पूजा एक दर्जे तक उसी एक अल्लाह की पूजा है। इन सूफी विद्वानों का खयाल गीता के खयाल से बहुत कुछ मिलता हुआ है।

इसी तरह पूजा के अलग अलग तरीकों के बारे में गीता का कहना है कि जो आदमी श्रद्धा और सच्चाई के साथ जिस तरीके से भी ईश्वर की पूजा करता है ईश्वर उसी तरीके से उसकी पूजा को अपनाते हैं।

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्

मम वर्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः । (४-११)

इस पर भी दूसरे अलग अलग देवताओं की पूजा को गीता ईश्वर की “बेतरिके पूजा” (६-२३) बताती है ‘देवताओं के उपासक देवताओं को पहुंचते हैं और ईश्वर के उपासक ईश्वर को’ (६-२५) । इसलिए गीता की बार बार और साफ शब्दों में तालीम है कि और सब देवताओं वगैरह को छोड़कर सिर्फ एक ईश्वर ही की पूजा करनी चाहिये (६-२७, ३४), और—
“और सब धर्मों को छोड़कर सिर्फ एक ईश्वर का ही सहारा लेना चाहिए, वही आदमी को पापों से बचा सकता है ।”
(१८-६६)

इस तरह गीता और कुरान दोनों सिर्फ एक ईश्वर की पूजा की ही तालीम देते हैं ।

वर्ण भेद को यानी ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र के फरक को गीता बजाय जन्म से मानने के आदमी के गुण, काम और तबीयत के मुताबिक मानती है और इसमें किसी को ऊँचा या नीचा नहीं मानती । जिस आदमी को अपनी इन्द्रियों पर क़ाबू है, जिसका दिल शान्त है और जिसकी तबीयत ज्ञान और इल्म की तरफ़ जाती है, उसे “इसी तरह के कामों में लगना चाहिये और उसे ब्राह्मण कहना चाहिये, जिसमें बहादुरी, हुकूमत करने और इन्तज़ाम करने की ताक़त है उसे क्षत्री कहना चाहिये, किसान और व्यापारी को वैश्य, और सिर्फ दूसरों की सेवा चाकरी में लगे हुए लोगों को शूद्र (१८-४२ से ४४) ।

न इसका जन्म या खानदान से कोई वास्ता है और न किसी खास मजहब के लोगों से। ये चार तरह के आदमी हर देश और हर मजहब में होते हैं। यानी अगर गीता की बात मानी जावे तो हिन्दुस्तान में लाखों नौकरी और मजदूरी करने वाले ब्राह्मणों को क्षत्री या शूद्र मानना होगा, बम्बई के बोहरे मुसलमानों को वैश्य, और दीनबन्धु ऐण्ड्रूज़, मौलाना अबुलकलाम जैसे हजारों ग़ैर हिन्दुओं को ब्राह्मण।

दर्शन शास्त्र या फलसफे की निगाह से उन दिनों दो तरह के खयाल वालों का ज्यादा जोर था। एक 'कर्म' के मानने वाले, जो वैदिक कर्मकाण्ड और रीत रिवाज को पूरा करने में मुक्ति (निजात) मानते थे, और दूसरे 'सांख्य' के मानने वाले, जो दुनिया के कामों से अलग रहकर सन्यास और त्याग के जरिये मुक्ति मानते थे। गीता ने इन दोनों के ऊपरी रीत रिवाजों को फञ्चूल बताते हुए, दोनों की असलीयत का बड़ा अच्छा मेल या समन्वय किया है और दोनों को एक बताया है (५-४,५)। गीता कहती है कि "आग को हाथ न लगाने वाला आदमी या इसी तरह की सन्यास की दूसरी ऊपरी बातों में फँसा हुआ आदमी सच्चा सन्यासी नहीं है, और न अपनी रुवाहिशों का गुलाम या रस्म रिवाजों में फँसा हुआ आदमी कर्मयोगी है। जो अपने स्वार्थ यानी खुद गरज्जी को अलग रखकर, दुई से ऊपर उठकर, किसी से दुश्मनी न करता हुआ दुनिया के लोगों की तरफ अपने सब फज्जों को पूरा करता है, वही सच्चा सन्यासी है और वही कर्मयोगी है।" (५-३;६-१)

गीता जिस चीज़ को असली धर्म और सब आदमियों के लिये एक बराबर धर्म मानती है और जिस चीज़ पर बार बार और तरह तरह से जोर देती है वह यह है—अपने आप पर काबू पाकर, अपनी इन्द्रियों को जीत कर (१२-४), दुई से ऊपर उठकर (निर्व्वन्दो), अपने निजी सुख दुख, नफ़े नुक़सान की बिल्कुल परवाह न करते हुए (२-३८), सब दुनिया का भला चाहते हुए (३-२५), किसी से दुशमनी या बैर न रखते हुए (११-५५), सब के भले के कामों में लगे हुए (५-२५; १२-४), दूसरों की तरफ़ अपने फ़र्ज़ों को फ़र्ज़ समझ कर पूरा करता है (१८-६) वही धरमात्मा है। गीता कहती है नरक के तीन दरवाज़े हैं—काम, क्रोध और लोभ (१६-२१)। दुनिया के सब आदमियों के लिए यही गीता-धर्म का सार है। इसी को गीता ईश्वर की सच्ची भक्ति बताती है (१२-१३ से २०)। गीता कहती है “ईश्वर को सब से ज्यादा प्यारा वह आदमी है जिससे दुनिया में कोई आदमी न डरता हो और न जिसे खुद किसी से किसी तरह का डर हो (१२-१५)। इसके खिलाफ़ “अपने स्वार्थ के लिए, घमण्ड या खुदी के असर में आदमी अगर मेहनत भी करे, तप करे और तकलीफ़ें उठावे तो उसके ये सब काम भी शैतानी हैं, और ईश्वर ऐसे आदमियों से खुश नहीं होता।” (१६-५, ६)। इस तरह “अपनी खुदी को मार कर दूसरों की तरफ़ अपने फ़र्ज़ों के पूरा करने में लगे हुए, सबकी भलाई करते हुए ही आदमी सच्चे ज्ञान को पा सकता है।” सच्चा ज्ञान यही है कि आदमी

“सब को अपनी तरह” (५-७; ६-३२) “अपने अन्दर सबको” (६-२६), “सब को ईश्वर के अन्दर” और “सब के अन्दर एक ईश्वर को” (६-३०, ३१) देखे । सिके इस तरह ‘आत्मसंयम’, और ‘दूसरों की सेवा’ के जरिये ही आदमी ‘अपनी आत्मा को पाक’ करते करते, आत्मा की असली तरक्की के रास्ते पर कदम बढ़ा सकता है, और फिर ‘अपने अन्दर’ और ‘सब के अन्दर’ उस परमात्मा का साक्षात् करके, उसका दीदार हासिल करके, जो सब ज्योतियों की ज्योति है (१३-१७), और सब के दिलों में बैठा है (१५-१५), मुक्ति हासिल कर सकता है । (३-१६; ५-१६, १७, ३०)

यही गीता धर्म का निचोड़ है ।

“हिन्दुओं में बहुत सी गीताएँ हैं जैसे राम गीता, शिव गीता, अष्टावक्र गीता वगैरह। ‘गीता’ के मायने हैं कोई चीज़ जो गाकर या लय के साथ कही गई हो। पर गीता लफ्ज़ से आम तौर पर भगवद्गीता ही का मतलब लिया जाता है।

“कुरान के मायने हैं वह चीज़ जो पढ़ी गई या ऐलान की गई हो। खुद कुरान के अन्दर कुरान के हर अलग अलग हिस्से को और ऐसे ही कुरान से पहले की मज़हबी किताबों को भी ‘कुरान’ कहा गया है। मौलाना रूमी की मशहूर किताब मसनवी ‘फ़ारसी ज़बान में कुरान’ कही जाती है।

“गीता में भी गीता के हर अलग अलग हिस्से को गीता ही नाम दिया गया है।

“श्री कृष्ण ने अकसर बांसरी की लय से नसीहत की है। मौलाना रूमी ने बांसरी ही के ज़िक्र से मसनवी को शुरू किया है और अपनी किताब को अल्लाह की बांसरी की आवाज़ बताया है।

“हक़ यह है कि एक ही हकीक़त की आवाज़ सारी दुनिया में गूँज रही है। गीता हिन्दुस्तान का कुरान है और कुरान अरब की गीता।”

—ख़ुबुल्लाहशाह क़लन्दर

राम और रहीम

(१)

तुम राम कहो, वह रहीम कहें, दोनों की गारज अल्लाह से है
तुम दीन कहो, वह धर्म कहें, मंशा तो उसी की राह से है
तुम इश्क कहो, वह प्रेम कहें, मतलब तो उसी की चाह से है
वह योगी हों, तुम सालिक हो, मकसूद दिले आगाह से है
क्यों लड़ता है मूरख, बन्दे ! यह तेरी खाम खयाली है
है पेड़ की जड़ तो एक वही, हर मजहब एक एक डाली है.

(२)

बनवाओ शिवाला या मसजिद, है ईंट वही, चूना है वही
मेमार वही, मजदूर वही, मिट्टी है वही गारा है वही
तकबीर का जो कुछ मतलब है, नाकूस का भी मंशा है वही
तुम जिनको नमाजें कहते हो, हिन्दू के लिये पूजा है वही
फिर लड़ने से क्या हासिल है ? जी फहम हो तुम नादान नहीं
जो भाई पै दौड़े गुरा कर वह हो सकते इनसान नहीं.

(३)

क्या क़त्ल व गारत खूँरेखी तारीफ़ यही ईमान की है ?
क्या आपस में लड़कर मरना तालीम यही कुरआन की है ?
इन्साफ़ करो, तफ़सीर यही क्या वेदों के फ़रमान की है ?
क्या सचमुच यह खूँखारी ही आला खसलत इनसान की है ?
तुम ऐसे बुरे आमाल पै अपने कुछ तो खुदा से शर्म करो !
पत्थर जो बना रक्खा है 'सईद' इस दिल को ज़रा तो नर्म करो !

क्रुश न

“अल्लाह ही ने यह किताब (कुरान) तुम्हारे (मुहम्मद साहब के) घट में उतारी है । इसकी कुछ आयतें “मुहकमात” यानी पक्के और साफ साफ हुकुम हैं, वे ही इस किताब की जड़ बुनियाद है, बाकी आयतें “मुतशाबेहात” यानी मिसाल या उपमा के तौर पर हैं । जिन लोगों के दिलों में टेढ़ापन है वे कुरान के उसी हिस्से पर चलते हैं जो मिसाल के तौर पर कहा गया है, उसके जरिये कितना और झगड़ा खड़ा करना चाहते हैं । और उसका मनगढ़न्त मतलब लगाते हैं, लेकिन उसका मतलब सिवाय अल्लाह के और उन लोगों के और कोई नहीं जानता जो पक्के ज्ञानी हैं, और कहते हैं कि हम इस सब को मानते हैं, यह हमारे रब्ब की देन है । दूर की सोचने वाले ही इस बात की परवाह करते हैं ।” (कुरान, २६)

कुरान

इसलाम के पैगम्बर हजरत मुहम्मद की आत्मा दुनिया की बड़ी से बड़ी खोजी आत्माओं में से थी। बरसों की तपस्या (रियाज़त), एकान्त (गोशानशीनी) और लम्बे लम्बे उपवासों (रोज़ों) के बाद, अरब की उस ज़माने की गिरी हुई और दर्दनाक हालत में, ईश्वर ने उन्हें उनके देश और तमाम दुनिया के भले का रास्ता दिखाया। अपने धर्म का प्रचार शुरू करने से पहले मुहम्मद साहब की उम्र ४० साल की हो चुकी थी। ६३ बरस की उमर में वे इस दुनिया से कूच कर कस गये। इन २३ बरस के अन्दर जब जब मुहम्मद साहब के सामने कोई खास रुहानी मुश्किल आती थी और रास्ता न सूझता था, तब तब वे आमतौर पर रो रो कर अपने खुदा से रोशनी की प्रार्थना करते थे। उनका बदन अक्सर थर थर काँपने लगता था, कभी कभी वे चादर लपेट कर लेट जाते थे, आँसुओं और पसीने से उनकी चादर तर हो जाती थी, कभी कभी कई कई दिन तक बिना दाने और पानी के वे इसी तरह पड़े रहते थे, आखीर में वे उठते थे। जो शब्द उस वक्त उनके मुँह से निकलते थे उन्हें वे अपने ईश्वर का हुकुम बताते थे। २५ बरस

के अन्दर इस तरह वक्त वक्त पर और दूसरे खास मौकों पर मुहम्मद साहब के मुँह से निकली हुई चीजों के मजमूए (संग्रह) का नाम ही 'कुरान' है ।

कुरान शब्द 'करा' से बना है जिसके माइने हैं एलान करना या पढ़ना । संस्कृत 'कर' , अंग्रेजी 'कर' और अरबी 'करा' , तीनों असल में एक ही शब्द हैं । 'कुरान' के लफ्ज़ी माइने हैं—वह चीज़ जो एलान की जावे या जो पढ़ी जावे । रिवाज़ी माइने हैं—धर्म की किताब ।

इसलाम से पहले यहूदी अपनी मज़हबी किताब को 'कराह' कहा करते थे । यहूदियों की ज़बान इवरानो और अरबों की अरबी दोनों एक दूसरे से बहुत मिलती हैं । 'कुरान' और 'कराह' के भी एक ही माइने हैं । खुद कुरान के अन्दर अपने से पहले की मज़हबी किताबों को भी 'कुरान' नाम दिया गया है (१५-८०, ६१) ।

मुहम्मद साहब की बाक़ी सब नसीहतें, कहावतें और उनकी वक्त वक्त की और सब रिवायतें 'हदीस' कहलाती हैं और इल्हामी यानी ईश्वरीय नहीं मानी जातीं ।

इस तरह २३ बरस के अन्दर कुरान के जो हिस्से अलग अलग वक्तों में उतरते या जाहिर होते रहे उन्हें लोग, उसी वक्त मुहम्मद साहब के हुकुम से, अलग अलग ताड़ के पत्तों, चमड़े के टुकड़ों या लकड़ी या पत्थर की सिल्लियों पर लिखते रहे । कोई कोई उन्हें पढ़ने के लिए ले जाते थे । बहुत सों को वे ज़बानी याद हो गए थे । आख़ीर में ये ताड़ पत्र, चमड़े के टुकड़े वग़ैरह

लकड़ी के एक बक्स के अन्दर बिना किसी खास तरतीब के रख दिए जाते थे। मजमूआ बढ़ता चला गया। कुछ हिस्से मुहम्मद साहब ही के जमाने में और उनके हुकुम से अलग अलग सूरों यानी अध्यायों में बँट गए।

कुरान में इस बात का भी जिक्र है कि “अल्लाह जिस आयत को चाहता है मनसूख (रद्द) कर देता है या लोगों की याद से मिटा देता है और उसकी जगह वैसी ही दूसरी आयत या उससे बेहतर आयत कायम कर देता है क्योंकि अल्लाह सब चीजों पर कादिर यानी समर्थ है।” (२-१०६)। एक दूसरी जगह लिखा है कि “अल्लाह एक आयत को दूसरी आयत से बदल देता है और अल्लाह ही सब से अच्छा जानता है कि वह क्या नाज़िल करता है (हुकुम उतारता है)” (१६-१०१)।

इस तरह कहा जाता है कि “साठ आयतें मुहम्मद साहब की ज़िन्दगी में ही मनसूख कर दी गई थीं और कुछ और आयतें जिनका अब मौक़ा नहीं रहा था बाद के ज़माने में मनसूख समझी जाने लगीं।”*

‘आयत’ का कुरान में क़रीब क़रीब वही मतलब है जो वेदों में ‘ऋचा’ का।

मुहम्मद साहब के बाद पहले खलीफ़ा हज़रत अबुबक्र ने उन सब टुकड़ों को निकाल कर जो उस वक़््त मौजूद थे और

*‘The Wisdom of the Quran’, by Mahamud Muhtar Pasha, Introduction, p 45.

कुछ और हिस्सों की मदद से जो लोगों को ज़बानी याद थे, पहली बार ११४ सूरों में एक बाज़ाब्ता मजमूआ तय्यार कराया, और उसे मुहम्मद साहब की बेवा हज़रत हिफ़सा के पास संभाल कर रखवा दिया।

पर इन अलग अलग हिस्सों की कुछ नक़लें दूसरे लोगों के पास भी मौजूद थीं। जिन लोगों को कुछ हिस्से ज़बानी याद थे उन्होंने भी अपनी याद से वे हिस्से लिख रखे थे। नतीजा यह हुआ कि दस पन्द्रह वरस के अन्दर ही कई अलग अलग कुरान मक्के, मदीने, और इराक़ में चल पड़े, जिनमें एक दूसरे से कहीं कहीं काफ़ी फ़रक़ था। आख़ीर में, मुहम्मद साहब के करीब बीस वरस बाद, तीसरे ख़लीफ़ा हज़रत उसमान ने कुरान की उस कापी को जिसे हज़रत अबु बक्र ने तरतीब दी थी मुस्तनद (प्रामाणिक) एलान किया, उसकी नक़लें कराकर सब सूबों में भिजवादीं, और जितनी दूसरी कापियां या नुसखे इधर उधर चल पड़े थे उन सब को मंगवा कर जलवा दिया, ताकि एक ही कुरान पक्का और ठीक माना जावे, और फिर कभी उसमें कोई हेर फेर न किया जा सके। कुरान की ठीक वही तरतीब आज तक दुनिया में चलती है।

इस पर भी आज साढ़े तेरह सौ वरस के बाद सात तरह के कुरान मिलते हैं। इनमें फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है कि किसी में जिसे एक आयत मान लिया गया है उसी को दूसरे में दो हिस्से करके दो आयतें माना गया है, इससे आयतों की कुल तादाद में फ़रक़ हो जाता है। इनमें से एक कुरान में कुल आयतों की

तादाद ६,००० है, दो में ६,२१४ है, एक में ६,२१६ है, एक में ६,२३६ है, एक में ६,२२६ और एक में ६,२२५ है। लेकिन मज़मून सब में ठीक वही है। शब्दों की तादाद भी सब में बराबर बताई जाती है।

इस पर भी जिस शकल में कुरान अब हमारे सामने है उसमें एक बहुत बड़ी मुशकिल यह है कि उसके अलग अलग हिस्से उस तरतीब में नहीं हैं जिस तरतीब में वे नाज़िल हुए यानी उतरे। बाद के सूरें शुरू में और शुरू के सूरें बाद में हैं और कभी कभी एक ही सूरत के अन्दर बाद की आयतें पहले और पहले की आयतें बाद में आती हैं। कौनसी आयत कब किस मौक़े पर और किन हालतों में उतरी यानी कौन हुकुम कब दिया गया इसका पता भी आयतों से लगाना बहुत मुशकिल है। ज्यादातर आयतों के बारे में यह तै हो चुका है कि कौन सी कब और किस मौक़े पर उतरी। लेकिन बहुत सी आयतों के बारे में तो इस बात में बड़े से बड़े मुसलमान आलिमों की राय में भी फ़र्क है। इस लिए कुरान की आयतों की आजकल की तरतीब की वजह से कुरान के मामूली पढ़ने वाले को बड़ी दिक्कत उठानी पड़ती है। जो लोग अरबी भाषा जानते हैं और उसका रस ले सकते हैं, या जो बग़ैर मतलब समझने की परवाह किए सिर्फ़ श्रद्धा के साथ कुरान पढ़ लेते हैं, उनकी बात अलग है। लेकिन जो दूसरे लोग कुरान के मतलब को ठीक ठीक समझना चाहते हैं उनके पल्ले असल कुरान से या उसके उसी तरतीब में तर्जुमे से, ज्यादा नहीं पड़

सकता। अलग अलग मज्जमूनों पर कुरान की अलग अलग चुनी हुई आयतों से ऐसे लोगों को कुरान का मतलब समझने में ज्यादा आसानी होगी।

कुरान की ज़बान

अरबी के देशी और विदेशी सब आलिमों की राय है कि कुरान की ज़बान ऊँचे दर्जे की, बड़ी सुन्दर, रसीली, और एक तरह की आज़ाद नज़्म या स्वतंत्र कविता (Poetic prose) है। कुरान के अंगरेज़ी तरजुमा करने वालों में सब से मशहूर और सब से ज्यादा आलिम जाज़ सेल माने जाते हैं। उनकी राय है कि—

“कुरान का तर्ज़ (उसकी शैली) आमतौर पर सुन्दर और दरिया की तरह बहती हुई है... एक एक आयत के अन्दर बहुत सी बात थोड़े से शब्दों में कही गई है, यहाँ तक कि कहीं कहीं मतलब भी इतना साफ़ समझ में नहीं आता। बीच बीच में ज़बान की खूबसूरती को बढ़ाने वाली एशियाई ढंग की ऊँचे दर्जे की तशबीहें यानी उपमाएँ हैं, चुभते और चमकते हुए जुम्लों ने ज़बान में और भी जान डाल दी है। बहुत जगह पर, खासतौर से जहाँ अल्लाह की तारीफ़ और उसके गुण बयान किये गये हैं, ज़बान बहुत ही ऊँची, बढ़िया और शानदार है।”*

कुरान की ‘किरअत’ यानी पाठ करने के करीब करीब उसी तरह बहुत से अलग अलग ढंग मुसलिम विद्वानों में जारी हैं, जिस तरह वेद पाठ के हिन्दू पंडितों में।

*Sales Preliminary Discourse, p. 44.

मुहम्मद साहब से पहले के अरब

अलग अलग मजमूनों पर कुरान की खास खास आयते आगे जमा कर दी गई हैं। उम्मीद है यह तरीका कुरान का मतलब समझने की इच्छा रखने वालों के लिए ज्यादा आसान होगा। इन आयतों के अलावा कुरान के बहुत बड़े हिस्से में बहुत सी पिछली कौमों का जिक्र है जो अलग अलग जमानों में धर्म और नेकचलनी से भटक कर तरह तरह के पापों में पड़ गईं और जिन्हें इसक बुरे नतीजे भोगने पड़े। कुछ और इस तरह के हुक्म या हिदायते भी हैं जो किसी खास मौके पर या खास हालत में उस वक्त के लोगों को दी गई थीं।

कुरान को समझने के लिए यह भी जरूरी है कि उस वक्त के अरबों की हालत की एक छोटी सी तस्वीर हमारी नज़रों के सामने हो।

मुहम्मद साहब के जन्म के वक्त अरब कौम हजारों छोटे बड़े कबीलों में बँटी हुई थी। इन कबीलों में आए दिन लड़ाइयाँ होती रहती थीं। हर कबीला अपनी जगह अपने को पूरी तरह आजाद समझता था। हर एक कबीले का अपना एक देवता था जिस उस कबीले के लोग पूजते थे। कोई देवता लकड़ी का, कोई पत्थर का और कोई गूँधे हुए आटे का। कोई देवता मर्द या औरत की शकल का था, कोई किसी जानवर की शकल का, कोई दरख्त की सूरत का और कोई बिल्कुल अनगढ़। बहुत से लोग कई कई देवी देवताओं को भी पूजते थे। लेकिन ज्यादातर अरबों में सब के मालिक 'एक खुदा' का

खयाल तक न था और न उनका कोई एक धर्म था। एक दूसरे के दुश्मन हज़ारों कबीलों को एक धागे में बांधने वाली कोई ताकत न थी। नतीजा यह था कि मुल्क के एक बहुत बड़े हिस्से पर बाहर की कौमों की हुकूमते कायम हो चुकी थीं। उत्तर में रोम के ईसाई शहनशाह की हुकूमत थी, पूरव में ईरान के खुसरो की और दक्खिन और पच्छिम में इथियोपिया के ईसाई शहनशाह की। इस तरह अरब का आधे से ज्यादा हिस्सा दूसरों के मातहत था।

बदचलनी की यह हालत थी कि शराब पी पी कर अकसर अरबों को मौतें होती रहती थीं। शराब के साथ साथ जुआ चलता था और इस दरजे बढ़ा हुआ था कि बहुत से अरब अपना सारा माल असबाब जुए में हार कर आखीर में अपने तन की बाज़ी लगा देते थे और जब हार जाते तो बाक़ी ज़िन्दगी जीतने वाले के गुलाम बनकर रहना मंज़ूर कर लेते थे।

गुलामों के साथ बिल्कुल जानवरों का सा बर्ताव होता था। जानवरों ही की तरह वे बाज़ारों में बेचे और ख़रीदे जाते थे। यहां तक कि नन्हे नन्हे बच्चे ज़बरदस्ती माँओं से अलग करके बेच डाले जाते थे। माँ किसी के हाथ और बच्चा किसी के। किसी भी गुलाम को मार डालने की कोई सज़ा न थी। गुलाम औरतों के साथ बदचलनी जायज़ समझी जाती थी और कभी कभी उनके मालिक उनसे पेशा कराकर पैसा कमाते थे।

अरब लोग अपनी बदचलनियों का घमण्ड के साथ खुले सबके सामने बखान करते थे ।

औरतों के साथ भी आमतौर पर बहुत ही बुरा बर्ताव होता था । उनके कोई किसी तरह के हक न माने जाते थे । मर्द जितनी चाहे शादियां कर सकता था और जब चाहे अपनी जिस औरत को तलाक दे सकता यानी छोड़ सकता था । एक औरत के कई कई पति (खादिन्द) का भी रिवाज था । कभी कभी हफ्ते के सात दिन इस तरह बँटे हुए होते थे कि एक ही औरत के अलग अलग दिनों के लिये अलग अलग पति बँधे हुए थे, इतवार के लिए अलग, सोमवार के लिए अलग और मंगल के लिए अलग । बाप के मरने पर उसकी जितनी बीवियां होती थीं वे सब उसके बड़े बेटे की बीवियां समझी जाने लगती थीं । यानी सिवाय उस एक मां के जिसने अपने पेट से किसी को जन्म दिया हो, या उस औरत के जिसका किसी ने दूध पिया हो और कोई रिश्ता अरबों में पाक न समझा जाता था ।

आम तौर पर अरब किसी को अपना दामाद बनाना बड़ी हेठी यानी बेइज्जती की बात समझते थे । कहीं कहीं तो लड़कियों को पैदा होते ही गढ़े में गाड़ दिया जाता था और कहीं कहीं उनकी उमर ५, ६ घरस की होने पर उन्हें जिन्दा दफन कर दिया जाता था ।

कुछ लोगों में, जो खास कर लेन देन और तिजारत का काम करते थे, सूदखोरी का रिवाज भी बहुत बढ़ा हुआ था ।

बहादुरी, मेहमाँनवाजी, बात का धनी होना, वगैरह कई

अच्छी बातें भी उनमें थीं। लेकिन इन गुणों के होते हुए भी ऊपर की गर्मनाक बुराइयों की वजह से उन दिनों अरबों की हालत ग्यामी नाजुक और खतरनाक थी।

इस तरह के देश और इस तरह के लोगों में हज़रत मुहम्मद और कुरान ने जन्म लिया। कुरान के उपदेशों का समझने के लिए अरबों की उन दिनों की हालत को अपने सामने रखना ज़रूरी है।

कुरान का असर

कुरान के उपदेशों ने अरबों की इन जहगती बुराइयों में बहुत सी बुराइयों को, जैसे शराबखोरी, जुआ, मृदंगोरी, लड़कियों को मार डालना, जड़ से मिटा दिया; मैकड़ों और हज़ारों अलग अलग देवी देवताओं के पूजन वालों को अपने उन अलग अलग देवी देवताओं को छोड़ कर, एक निराकार ईश्वर, एक अल्लाह ताला, की पूजा करना सिखा दिया; एक दूसरे के दुश्मन हज़ारों कबीलों को एक करके उन सब की एक अरब कौम बना दी; सारी कौम के चलन और रहन सहन का पाक और ऊँचा कर दिया, उनमें इल्म और ज्ञान का चाह पैदा कर दी, मुल्क के उन सब टुकड़ों को जो अलग अलग विदेशी ताकतों के मातहत थे आजाद करके सारे देश पर एक आजाद और खुद मुख्तार अरब हुकूमत कायम कर दी। यह सब काम २३ साल के अन्दर अन्दर पूरा हो गया।

मुहम्मद साहब के मरने के सौ बरस के अन्दर अन्दर

अरब का यह नया मजहब चीन की दीवार से लेकर अटलांटिक समुद्र तक, एशिया, अफ्रीका और यूरोप, तीनों में फैल गया। तमाम पच्छिमी एशिया, उत्तरी अफ्रीका और आधे यूरोप पर अरबों की हुकूमत कायम हो गई, और तरह तरह के इल्मों और हुनरों में उन दिनों के अरब पच्छिमी दुनिया की सब से बड़ी चढ़ी कौम माने जाने लगे।

आज दुनिया में तीस करोड़ से ज्यादा आदमी कुरान के मजहब के मानने वाले हैं और दुनिया का कोई मुल्क ऐसा नहीं है जहाँ कुछ न कुछ लोग इस किताब में अपनी ज़िन्दगी के लिए सबक और धर्म का रास्ता न सीखने हों।

कुरान के इस असर और तरह सौ धरम के उसके नतीजों को मोटे तौर पर बयान करने हुए एक यूरोपियन लेखक लिखता है—

“If a book is to be gauged by its net results—by the effect it has produced on all that is deepest and best in human nature—then the Quran must necessarily take high rank as one of the world's greatest works.*

“अगर किसी किताब की क़ीमत का अन्दाज़ा उसके नक़द नतीजों से लगाया जा सकता है—यानी इस बात से कि आदमी के स्वभाव के गहरे से गहरे और अच्छे से अच्छे पहलुओं पर उसका

* Islam' by Major Arthur Glyn Leonard, pp. 105, 106.

क्या असर पड़ा—तो ज़रूरी है कि कुरान को दुनिया की बड़ी से बड़ी और ऊंची से ऊंची किताबों में गिना जावे ।”

कुछ साल हुए यूरोप के एक मशहूर माहवारी रिमाले ने पब्लिशिंग यूनिवर्सिटियों के सैकड़ों बड़े बड़े प्रोफेसर्स और विद्वानों से प्रार्थना की थी कि वे अपनी अपनी राय में दुनिया की सौ बड़ी से बड़ी किताबों की फहरिस्त नम्बरवार तय्यार करके रिमाले के एडिटर के पास भेज दें । यूरोप के विद्वानों के जो सैकड़ों जवाब आए, उनको देखने से मालूम हुआ कि दुनिया की बड़ी से बड़ी किताबों में उन्होंने पहिली जगह हज़रत ईसा में एक हज़ार साल पहले की लिखी हुई मशहूर यूनानी किताब ‘इलियड’ को और दूसरी जगह उसके डेढ़ हजार साल बाद की लिखी ‘कुरान मर्जाद’ को दी । और यह उस सूदन में जब कि राय देने वाले यूरोपियन आलिमों में से बहुत ही कम होंगे जिन्होंने कुरान को असल अरबी में पढ़ा हो ।

कुरान और उसकी तालीम

अल-फातेहा

कुरान की सबसे पहली सूरात यानी सबसे पहले अध्याय का नाम 'अल-फातेहा' है। कुरान के अन्दर इस सूरात को "कुरानल अज़ीम" (१५-८७) यानी 'बड़ा कुरान' कहा गया है। जिस तरह पूरी किताब को कुरान कहा जाता है उसी तरह कुरान के हर हिस्से को भी अलग अलग कुरान कहा जाता है। खुद मुहम्मद साहब इस सूरात को "उम्मुल कुरान" (कुरान की माँ) कहा करते थे।* इस सूरात को आमतौर पर सारे कुरान का निचोड़ या लुव्वेलुवाब माना जाता है और हर मुसलमान अपनी नमाज़ों और दुआओं में इसे बार बार दोहराता है।

'अल फातेहा' के माइने 'खुलना' या 'शुरू' है। सूरा अल-फातेहा यह है—

"उस अल्लाह के नाम से जो रहमान और रहीम यानी मेहर करने वाला और दया करने वाला है।

* बुखारी

“तारीफ़ उस अल्लाह की जो सारी दुनिया का रब्ब यानी पालने वाला है ।

“जो रहमान और रहीम है ।

“जो उस दिन का मालिक है जिस दिन सबको अपने किये के फल भोगने होंगे ।

“ऐ अल्लाह ! हम तेरी ही इबादत (पूजा) करते हैं और तेरा ही सहारा ढूँढते हैं ।

“तू हमें सीधे रास्ते पर ले चल ।

“जो उन लोगों का रास्ता है जिन्हें तू ने अपनी ग़्यामते यानी बरकतें दे रखी हैं ।

“उन लोगों का नहीं जिनसे तू नाराज़ है और जो राह से भटके हुए हैं ।” (१-१ से ७)

इसलाम के बुनियादी उस्सूल

“कह दो कि अल्लाह एक है, बाक़ी सब उसी के सहारे है । न वह कभी जन्म लेता है और न किसी को जनता है । उसके जैसा कोई दूसरा नहीं है ।” (११२-१ से ४)

“यह किताब (कुरान) जिसमें कोई शक नहीं, उन लोगों के लिए जो बुराई से बचना चाहते हैं, रास्ता दिखाने वाली है,

“जो गु़ैब यानी परलोक में यक़ीन करते हैं, जो अल्लाह से दुआ मांगते रहते हैं और जो कुछ अल्लाह ने उन्हें दिया है उसमें से ज़रूरत मन्दों को दान देते रहते हैं,

❁ अग्ने नब सुपथा—अग्नेवद ।

“और जो उस इल्म और हिदायत पर यक़ीन करते हैं जो तुमको अल्लाह से मिली है और जो कुछ मुहम्मद से पहले अल्लाह ने दूसरों को यानी दूसरे पैग़म्बरों और रसूलों को दिया है उस सब पर भी यक़ीन करते हैं और जो आख़ि़रत यानी मरने के बाद की ज़िन्दगी में यक़ीन रखते हैं।

“ये लांग ही अपने पालनहार की तरफ से ठीक रास्ते पर हैं और ये लांग ही फ़लाह यानी कल्याण पायेंगे।” (२-२ से ५)

अल्लाह और उमका तारीफ़

“क्या तुम नहीं देखते कि आसमानों और ज़मीन के सब रहने वाले, यहाँ तक कि उड़ती हुई चिड़ियाँ भी उसी अल्लाह की तरफ़ करती हैं ? वह सब की दुआ और सब की सुनि (हम्द) को सुनता है और जो कुछ वे करते हैं सब जानता है।

“अल्लाह ही आसमानों और ज़मीन का मालिक है और आख़ि़र में सब को अल्लाह ही की तरफ़ लौट कर जाना है।

“क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह बादलों को उड़ा कर ले जाता है, फिर उन्हें इकट्ठा करता है और जमा करता है, यहाँ तक कि उनसे मेह बरसता हुआ दिखाई देता है ? वह पहाड़ जैमे बादलों को भेजता है जिनसे ओले गिरते हैं। जिन्हें वह चाहता है उन्हें उन ओलों से नुक़सान पहुँचता है और जिन्हें चाहता है नहीं पहुँचता। उसकी बिजली की दमक आँखों का चकाचौंध कर देती है।

“अल्लाह ही रात से दिन और दिन से रात करता है। सचमुच जो लोग देख सकते हैं उन्हें इससे काफ़ी सबक़ मिल सकता है।

“अल्लाह ने पानी से सब जानदारों को बनाया है, इनमें कुछ पेट के बल रंगते हैं, कुछ दो पैरों पर चलते हैं, और कुछ चार पैरों पर। अल्लाह जो चाहता है बनाता है, सचमुच वह सब चीज़ों पर समर्थ यानी क़ादिर है।” (२४-४१ से ४५)

‘वही आसमानों और ज़मीन का बनाने वाला है ... उसीने सब चीज़ों को बनाया है, वह सब चीज़ों को जानता है।

“वह अल्लाह ही तुम्हारा रब्ब (पालने वाला) है, उस एक के सिवाय कोई दूसरा अल्लाह नहीं है, * वही सब चीज़ों का बनाने वाला है, इसलिये उसी की पूजा करो। सब चीज़ें उसी के बस में हैं।

“आख उसे नहीं देख सकती पर वह सब आँखों को देखता है। वह बारीक से बारीक चीज़ को जानता है, वह सब कुछ जानता है।” (६-१०२ से १०४)

“अल्लाह वह है जिसके सिवाय कोई दूसरा अल्लाह नहीं है, वह हमेशा रहने वाला और खुद अपने से क़ायम (यानी अनादि, अनन्त और स्वयंभू) है, और जितनी चीज़ें हैं उसा से क़ायम हैं, न उसे कभी नींद आती है और न सुस्ती, जो कुछ आसमानों और ज़मीन पर है सब उस का है। जब तक उसका हुकुम न हो कोई उसके काम में दखल नहीं दे सकता, वह हमारे आगे और पीछे की सब चीज़ें जानता है और हम उसके ज्ञान के भंडार से सिर्फ़ उतना ही जान सकते हैं जितना वह चाहे, आसमान और ज़मीन सब उसके ज्ञान के क्षेत्र यानी उसकी मारफ़त के मैदान में शामिल हैं, वह इन

* एकमेवाद्वितीयम्—वह एक ही है दूसरा नहीं। उपनिषद्।

सब को संभाले हुए है, वह कभी थकता नहीं, वह सब से ऊपर और सबसे बड़ा है ।” (२-२५५)

“अल्लाह कहता है कि जब कभी मेरे बन्दे तुमसे मेरी बाबत पूछें तो कह दो कि मैं सचमुच उनके बहुत ही पास हूं, जब कभी कोई मुझसे किसी तरह की दुआ प्रार्थना करता है मैं उसका जवाब देता हूं, इसलिये लोगों का अल्लाह पर यक़ीन करना चाहिए और अल्लाह ही का हुकुम मानना चाहिए ताकि वह ठीक ठीक रास्ता जान सके ।” (२-१८६)

“सचमुच अल्लाह ही ने इन्सान को बनाया है, इन्सान के दिल में जो कुछ पैदा होता है अल्लाह सब जानता है, और आदमी की गरदन की रग (रगे जाँ) से भी अल्लाह उसके ज्यादा नज़दीक है ।” (५०-१६)

“आदमी पर जो कुछ मुसीबत आती है वह सब आदमी के अपने ही कामों की वजह से आती है, फिर भी अल्लाह बहुत कुछ माफ़ कर देता है ।” (४२-३०)

“कह दो कि, ऐ अल्लाह के बन्दो ! जिन्होंने अपनी आत्माओं के साथ ज़्यादतिया की हैं, अल्लाह के रहम से निराश (मायूस) न हों, सचमुच अल्लाह सब क्रूर माफ़ कर देता है, अल्लाह माफ़ कर देने वाला और दयावान है ।” (३९-५३)

“अल्लाह सब दया करने वालों से बढ़ कर दया करने वाला है ।” (१२-६२)

‘ जो लोग भूल से बुराई कर जाते हैं, फिर पश्चात्ताप हैं और अपने को सुधारते हैं, सचमुच अल्लाह उन्हें माफ़ कर देता है, और उन पर

रहम करता है।” (१६-११६)

“जो कोई बुराई करता है या अपनी आत्मा के साथ जुल्म करता है, लेकिन फिर अल्लाह से माफी माँगता है, वह अल्लाह को माफ़ कर देने वाला और दयावान पायगा।

“जो कोई पाप करता है, अपनी ही आत्मा के खिलाफ़ करता है, और अल्लाह सब जानता और समझता है।

“और जो कोई क्षुभूर या गुनाह करता है और फिर किसी दूसरे बेगुनाह पर उसका झूठा इलजाम लगाता है, वह खुद अपने ऊपर तोहमत का बोझ लादता है और खुला पार करता है।” (४-११० से ११२)

“जो कोई बुराई करने के बाद उस पर पकृताता है और आगे के लिए अपने को सुधारता है, अल्लाह उस पर सचमुच रहम करेगा। क्योंकि सचमुच अल्लाह माफ़ कर देने वाला और रहम दिल है।” (५-३६)

“और इसमें कोई शक नहीं कि जो कोई अपने पिछले बुरे कामों पर पकृताता है, और आइन्दा के लिए बात मान लेता है, और नेक काम करता है, और फिर ठीक रास्ते पर चलता रहता है अल्लाह उसे री तरह माफ़ कर देता है।” (१०-८२)

“और लोग तुमसे कहते हैं कि लोगों के साथ भलाई करने से पहले उन्हें (उनके पापों के बदले) सज़ाएँ दी जावें, और इसमें शक नहीं कि लोगों को अपने पापों की वह वह सज़ाएँ भुगतनी पड़ी हैं जो दूसरों के लिए एक मिसाल हैं, पर इसमें कोई शक नहीं कि तुम्हारा रब्ब इन्सानों को माफ़ कर देने वाला रब्ब है। जो गुनाह करके

अपने ऊपर जुल्म करते हैं उनके लिए भी, वह अल्लाह माफ़ कर देने वाला है, और इसमें शक नहीं कि अल्लाह बदला लेने में भी तेज़ है।” (१३-६)

“और अल्लाह माफ़ कर देने वाला और प्यार करने वाला है।” (८५-१४)

“अल्लाह हक़ यानी सत्य है।” (२२-६२)

“अल्लाह आसमानों और ज़मीन का नूर यानी रोशनी है। उसके नूर की मिसाल एक ऐसे गम्भे की सी है जिस पर एक दिया बल रहा है, दिया एक शीशे के अन्दर है, वह शीशा एक ज़ारों से चमकते हुए तारों को तरह है, वह एक ऐसे मुबारक ज़ैतून के तेल से बल रहा है, जो न पूरब का है और न पच्छिम का, जिसका तेल बिना आग के रोशनी देता है, अल्लाह नूरों का भी नूर है, अल्लाह जिसे चाहता है अपने नूर की तरफ़ ले जाता है और अल्लाह लोगों को मिसालों से तालीम देता है। और अल्लाह सब चीज़ों को जानता है।” (२४-३५)

“जिधर भी तुम मुँह करो उधर ही अल्लाह का मुँह है।” (२-११५)

‘ धरती के ऊपर जितने दरख़्त हैं उन सब के फ़लम बना लिए जावें और सात समुद्र मिलकर स्याही बन जाए, और उनसे लिखा जावे तो भी अल्लाह की बात ख़त्म नहीं हो सकती, सचमुच

*ज्योतिषामपितज्ज्योतिः— वह रोशनीयों की भी रोशनी है—
गीता

† विश्वतोमुखम्— उसके सब तरफ़ मुँह हैं— गीता

अल्लाह बड़ा और सब कुछ जानने वाला है । (३१-२७)

“नरमा के साथ और डरते हुए, और नीची आवाज़ में सुबह और शाम अपने अन्दर अपने रब को याद करो, और वेखबर मत हो ।” (७-२०५)

“और दिन के दोनों हिस्सों में, (सुबह और शाम) और रात के शुरू के घण्टों में अल्लाह से दुआ माँगो । सचमुच अच्छे कामों में बुरे काम कट जाते हैं । जो लोग खयाल रखते हैं, उन्हें यह याद दिलाने के लिए है ।

“और सब करो यानी धीरज रखा, क्योंकि जो लोग दूसरों के साथ नेकी करते हैं उनकी नेकी के फल को सचमुच अल्लाह कर्मा जाया (नष्ट) होने नहीं देता ।” (११-११४, ११५)

सब इन्सान एक क्रौम हैं

“सब इन्सान एक ही ‘वाहिद उम्मत’ यानी एक ही क्रौम हैं ।” (२-२१३)

“और तमाम इन्सान इसके सिवा और कुछ नहीं हैं कि सब एक ही ‘वाहिद उम्मत’ (एक ही क्रौम) हैं । (१०-१६)

“सचमुच तुम सब इन्सानों की यह एकही क्रौम* है और एक ही अल्लाह तुम सब का रब है । इसलिए सब उसी की पूजा इबादत करो । लोगो ने काट काट कर अपने टुकड़े (अलग अलग गिरोह) बना रखे हैं । पर सब को एक ही अल्लाह के पास जाना है ।” (२१-६२, ६३)

*अरबी लफ्ज़ ‘उम्मत’ के माइने ‘क्रौम’ और ‘मज़हब’ दोनों होते हैं, और यहां दोनों माइने लिये जाते हैं ।

“धरती पर चलने वाले जितने जानवर हैं और हवा में उड़ने वाले जितने पंछी हैं सब आदमी ही की तरह एक एक उम्मत यानी एक एक कौम हैं। हमने इस किताब में किसी को भुलाया नहीं है। आखीर में सब को उसी एक अल्लाह के पास जाना है।” (६-३८)

मग़ मजहब एक हैं

‘इसमें कोई शक नहीं कि चाहे वे लोग हो जो ईमान लाए हैं यानी मुसलमान और चाहे वे हों जो यहूदी हैं, या वे हों जो ईसाई हैं, या वे हों जो सावी* हैं, या चाहे कोई भी क्यों न हों, जो कोई भी अल्लाह को मानता है, और आख़रत में यानी अपने कर्मों के फल में यक़ीन करना है और नेक काम करता है, उन सब का अपने रब्ब से फल मिलेगा, उन्हें न किसी बात का डर है और न किसी तरह का अफ़सोस होगा।’ (२-६२ ; ५-६६)

“यहूदी कहते हैं कि सिवाय यहूदियों के और कोई जन्नत में नहीं जा सकता, ईसाई कहते हैं कि सिवाय ईसाई के कोई जन्नत में नहीं जा सकता, ये सब इन लोगों के झूठे बहम हैं। इनसे कहो कि अगर तुम सच्चे हो तो (अपनी ही मज़हबी किताबों से) सबूत निकाल कर दिखाओ।

“नहीं, जिस किसी ने अपने आपको अल्लाह की मरज़ी पर छोड़ दिया है और जो दूसरों के साथ नेकी करता है, उसे अपने रब्ब

*उस ज़माने का एक मज़हब जिसके मानने वाले एक अल्लाह को मानते थे और उस अल्लाह का ज़हूर समझ कर सूरज और चांद की पूजा करते थे।

से फल मिलेगा, उसे न किसी बात का डर है और न किसी तरह का ग़म होगा।” (२-१११, ११२)

“और इसमें शक नहीं तुमसे (मुहम्मद साहब से) पहले भी हमने (अल्लाह ने) दुनिया में रसूल भेजे हैं.....हर ज़माने के लिए अलग अलग किताबें हैं, अल्लाह जिसे चाहता है मनसूख कर देता है और जिसे चाहता है कायम कर देता है। और इन सब मज़हबी किताबों का असली माँ—‘उम्मुल किताब’—अल्लाह ही के पास है।” (१३-३८, ३९)

“हर नबी जो पैग़ाम (मन्देश) लाकर देता है उस मन्देशे के लिए एक मियाद मुक़रर है, जिसका तुम्हें पता लग जावेगा।” (६-६७)

“ऐ आदम की औलाद (आदमियों) ! अगर तुम में से कोई ‘रसूल’ पैदा हो और तुम्हें अल्लाह का पैग़ाम आकर सुनावें, तो (तुम्हें कोई डर नहीं)। जो कोई भी बुरे कामों से बचेगा और नेक काम करेगा, उसे न किसी बात का डर होगा और न कोई ग़म होगा।” (७-३५)

“और हर उम्मत या हर क़ौम में ‘रसूल’ हुए हैं।” (१०-४७)।

“हर क़ौम में धर्म का रास्ता बताने वाले पैदा हुए हैं।” (१३-७)

ऐ मुहम्मद ‘सचमुच अल्लाह ने तुम्हें हक़ (सच्चाई) के साथ भेजा है ताकि तुम लोगों को अच्छे कामों के बदले में खुश ख़बरी दो और बुरे कामों के नतीजे से आगाह करो, और कोई क़ौम ऐसी नहीं है जिसमें इसी तरह बुरे कामों के नतीजों से आगाह करने

वाला कोई न कोई रसूल नहीं भेजा गया ।” (१५-२४)

“और सचमुच हमने तुमसे पहले सब पुरानी क़ौमों में रसूल भेजे हैं ।” (१५-१०)

“और सचमुच हमने हर क़ौम में रसूल पैदा किये हैं, जिन्होंने लोगों को यही नसीहत की है कि अल्लाह की इबादत करो और शैतान (बुराई) से बचे रहो ।” (१६-३६)

“हसमें कोई भी शक नहीं कि तुमसे पहले अल्लाह ने सब क़ौमों में रसूल भेजे हैं ।” (१६-६३)

“और जो रसूल जिस क़ौम में भेजा गया है, वह उसी क़ौम की ज़बान में पैग़ाम देकर भेजा गया है, ताकि उन्हें साक़ साक़ समझा सके ।” (१४-४)

“कह दो कि हम अल्लाह को मानते हैं, और जो ज्ञान अल्लाह ने हमें दिया है (यानी कुरान) उसे मानते हैं, और उस सब ज्ञान या उन सब किताबों को भी मानते हैं जो अल्लाह ने इब्राहीम की, मुहम्मद की, ईसा की, मूसा की, और दूसरे दूसरे नबियों की मार्फ़त दुनिया को दी हैं । इन सब पैग़ाम्बरों में हम किसी किस्म का फ़रक़ नहीं करते, और हमने अपने को अल्लाह ही की मरज़ी पर छोड़ रखा है ।” (२-१३६)

“रसूल (मुहम्मद साहब) उस ज्ञान को मानता है जो उसके रब्ब ने उस पर उतारा है । जो लोग रसूल को मानते हैं वे सब भी उस ज्ञान को मानते हैं । वे सब एक अल्लाह को मानते हैं, उसके फ़रिश्तों (उसकी अलग अलग ताक़तों) को मानते हैं, सब इलहामी यानी

ईश्वरीय किताबों को मानते हैं और ईश्वर के भेजे हुए सब रसूलों को मानते हैं। इन रसूलों में हम किसी के साथ किसी तरह का प्ररक्त यानी भेद भाव नहीं करते। '...ऐ हमारे रब्ब ! हम तुझसे ही माफ़ी चाहते हैं, आख़ीर में सब को तेरे ही पास जाना है।' (२-२८५)

"ऐ मुहम्मद ! तुम्हें किताब में से (यानी उस पूरे ज्ञान में से जो अल्लाह के पास है) जो कुछ दिया गया है उसे पढ़ा, और दुआ मांगते रहो। सचमुच दुआ आदमी को गन्दी बातों से और बुराई से दूर रखतो है। और सचमुच अल्लाह को याद करना बहुत बड़ी बात है, और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह जानता है।

"और जिन लोगों के पास दूसरी मज़हबी किताबें हैं उनसे बहस न करो, अगर करो तो बहुत ही मिठास के साथ करो, उन्हें छोड़ो जो जुल्म करते हैं। और उनसे कहो कि हम उस किताब में यक़ीन करते हैं जो हमें दी गई है और उन किताबों में भी यक़ीन करते हैं जो तुम्हें दी जा चुकी हैं, और हमारा और तुम्हारा अल्लाह एक ही है और उसी के हम 'मुसलिम'* हैं, यानी उसी की मरज़ी पर हमने अपने को छोड़ दिया है।" (२६-४५, ४६)

* 'मुसलिम' और 'इसलाम' दोनों लफ़्ज़ कुरान में तरह तरह से और बार बार आते हैं। इसलाम शब्द 'सलम' से है, जिसके माइने 'गर्दन झुकाना' या 'अपने को किसी की मरज़ी पर छोड़ देना' है। 'इसलाम' के माइने हैं 'अपने को पूरी तरह ईश्वर की मरज़ी पर छोड़ देना'। 'मुसलमान' या 'मुसलिम' के माइने हैं, 'वह जिसने अपने को पूरी तरह ईश्वर की मरज़ी पर छोड़ दिया

अंगले पिछले दुनिया भर के सब मुल्कों और सब ज़मानों के रब्बूलों को सामने रख कर कुरान में अल्लाह ने कहा है—

“ये रब्बूलो ! पाक चीज़ें खाओ, और नेक काम करो, सचमुच जो कुछ तुम करते हो अल्लाह सब जानता है ।

“सचमुच तुम्हारे ये सब अलग अलग मज़हब या क़ौमों में एक ही मज़हब और एक ही क़ौम (उम्मतु वाहिदा) हैं और तुम्हारा सब का एक ही रब्ब है । इसलिए उसी एक ईश्वर का खयाल रखो ।

“लेकिन लोगों ने आपस में अपने दीन के अलग अलग टुकड़े कर डाले और हर ग़िरोह जो कुछ उसके अपने पास है उसी में मूला है ।

“यह बड़ी भारी नासमझी है” (२३-५१ से ५४)

हो’ । इन्हीं माइनों में ‘इसलाम’ और ‘मुसलिम’ शब्द बार बार कुरान में आए हैं (३-१६ वग़ैरह) । इन्हीं माइनों में कुरान ने जगह जगह हज़रत मुहम्मद से पहले के सब दूसरे पैगम्बरों के धर्मों को ‘इसलाम’ और उनके मानने वालों को ‘मुसलिम’ या ‘मुसलमान’ कह कर पुकारा है (२२-७८ वग़ैरह) ।

कुछ लोग ‘इसलाम’ लफ़्ज़ को ‘सलाम’ से भी जोड़ते हैं, जिसके माइने ‘शान्ति’ या ‘अमन’ हैं । कुरान में ‘सलाम’ शब्द इन माइनों में एक जगह आया है (१०-२५) । लेकिन इसलाम मज़हब के माइने कुरान के मुताबिक़ अल्लाह के हुक्म के सामने सर झुकाना, अपने को ईश्वर के अर्पण कर देना यानी उसकी मरज़ी पर छोड़ देना ही हैं ।

“सचमुच जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों को नहीं मानते, और जो अल्लाह और उसके रसूलों में फ़रक करना चाहते हैं,^१ और कहते हैं कि हम कुछ रसूलों को मानते हैं और कुछ को नहीं मानते, और इनके बीच से अपना एक अलग ही रास्ता बना लेना चाहते हैं, सचमुच ये लोग ही मच्चे ‘काफ़िर’ (नाशुकरे, काफ़ेरुने हक्का) हैं और अल्लाह ने इन काफ़िरों के लिए ज़िल्लत की सज़ा तय कर रखी है।” (४-१५०, १५१)

“ऐ मुहम्मद ! सचमुच अल्लाह ने उसी तरह तुम्हें वही (ईश्वर प्रेरणा) के ज़रिये ज्ञान दिया है जिस तरह नूह को और उनके बाद के दूसरे नबियों को दिया था। उसी तरह अल्लाह ने इब्राहीम, इस्माईल, इसाक, याकूब और ‘क्रौमों’ और ईसा और अयूब और यूनिस और हारून और सुलेमान को ज्ञान दिया था, और उसी तरह दाऊद को ज़बूर* दी थी।

“और अल्लाह ने दुनिया में जो बहुत से रसूल भेजे हैं उनमें से कुछ का ऊपर कुरान में तुम्हें हाल सुनाया है और कुछ का नहीं सुनाया।” (४-१६३, १६४)

“और इसमें कोई शक नहीं कि अल्लाह ने तुमसे (मुहम्मद साहब से) पहले भी सब क्रौमों में रसूल भेजे हैं।” (६-४२)

“और अल्लाह ने जो भी रसूल भेजे वह इसीलिए भेजे कि लोगों को अच्छे कामों के बदले में अच्छे फल की खुशख़बरी दें और बुरे कामों के बुरे नतीजों से आगाह करें। फिर जो कोई बात मान ले और नेक काम करे उसे न कोई डर है और न कोई ग़म।” (६-४८)

*एक सज़ा का नाम ।

“और सचमुच तुमसे पहले भी अल्लाह ने रसूल भेजे हैं। उनमें से कुछ का तुमसे (कुरान में) जिक्र किया गया है और कुछ का तुमसे जिक्र नहीं आया।” (४०-७८)

“सचमुच जिन लोगों ने दीन के टुकड़े टुकड़े कर डाले और जो अपने अपने अलग अलग मज़हब या गिरोह बनाकर बैठ गए हैं उनसे तुम्हारा कोई सरोकार नहीं, अल्लाह ही उनका फ़ैसला करेगा, वही उन्हें बताएगा कि उन्होंने क्या किया।” (६-१६०)

“यह (कुरान) वह हक़ (सच्चाई) है जो अपने से पहले की मज़हबी किताबों की तसदीक़ करता है, यानी उन सब को सच बताता है।” (२-९१)

“कुरान अपने से पहले की मज़हबी किताबों की तसदीक़ करता है।” (२-९७)

“अल्लाह ने किताब (अपने पास के असल ज्ञान) में से जो कुछ ज्ञान तुम्हें (मुहम्मद साहब को) वही (ईश्वर प्रेरणा) के जरिये दिया है वह वह हक़ है जो अपने से पहले की धर्म पुस्तकों की तसदीक़* करता है।” (३५-३१)

*ठीक जिस तरह कुरान में अपने से पहले के सब धर्मों को ‘इस्लाम’ और उनके मानने वालों को ‘मुसलमान’ कहा गया है, उसी तरह कुरान में कुरान से पहले की मज़हबी यानी ईश्वरी किताबों को भी ‘कुरान’ नाम दिया गया है और उन लोगों को, जिन्होंने इन सब ईश्वरी किताबों को अलग अलग करके ईश्वरी ज्ञान के ‘टुकड़े टुकड़े कर डाले’, ‘मुक्तमनीन’ यानी ‘फूट डालने वाले’ कहा गया है। (१५-६०, ६१)

“मुहम्मद सचाई को लेकर आया है और उसने अपने से पहले के सब रसूलों की तसदीक की है (उन्हें सच्चा ठहराया है) ।”
(३७-३७)

“और तुम्हें (मुहम्मद साहब को) कोई ऐसी बात नहीं कही गई जो सचमुच तुमसे पहले के रसूलों को न कही गई हो ।”
(४१-४३)

“और यह किताब (कुरान) जो अपने से पहले की किताबों का सच बताती है, अरबी ज़बान में है, इसलिए ताकि ये (अरब) लोग जो जुल्म करते हैं उन्हें (इसके बुरे नतीजे से) आगाह कर दे और जो नेकी करते हैं उन्हें खुश ख़बरी दे । सचमुच जो लोग भी कहते हैं कि अल्लाह हमारा रब है और नेकी पर क़ायम रहते हैं, उन्हें न कोई डर है और न कोई ग़म ।” (४६-१२, १३)

“और अगर हमने यह कुरान किसी दूसरी ज़बान में कर दी होती तो ये लोग ज़ल्लर कहते कि इसकी आयतें हमारे लिए साफ़ क्यों नहीं की गईं, यह क्या बात है, हम अरब आदमी और दूसरे मुल्क की ज़बान ? कहदो, कि जो लोग मान लें उनके लिए यह किताब रास्ता दिखाने वाली और उनके रोगों का इलाज है ।” (५१-४४)

“अल्लाह ने तुम्हें (रसूलुल्लाह को) कुरान अरबी ज़बान में इसलिए दिया है ता कि तुम ख़ास शहर मक्का और उसके आस पास के लोगों को आगाह कर सकों ।” (४२-७)

“सचमुच हमने (अल्लाह ने) इस कुरान को अरबी में इसलिए उतारा है ताकि तुम लोग (अरब) इसे अच्छी तरह समझ सकों ।”
(४३-३)

“अल्लाह ने तुम्हारी ज़बान में इसे आसान कर दिया है ताकि ये अस्व लोग खयाल रखें।” (४४-५८)

“सचमुच यह (कुरान) ‘रसूल-ए-करीम’ (एक बुजुर्ग रसूल) का कहा हुआ है ।

“यह किसी शायर (कवि) के शब्द नहीं हैं, तुम नहीं मानते !

“और न यह किसी जादूगर के शब्द हैं, तुम परवाह नहीं करते !

“यह ज्ञान उस अल्लाह की तरफ से आया है जो सब दुनियाओं का मालिक है।” (६६-४० से ४३)

“इसमें कोई शक नहीं यह कुरान उस रसूल-ए-करीम का क़ौल है ।

“जो ताक़त वाला है, जिसके लिए आसमान के मालिक अल्लाह के यहां इज़्ज़त की जगह है ।

“जिसका कहना मानना चाहिए, जो ‘अमीन’ (भरोसे वाला) है ।

“अरे ऐ लोगो ! तुम्हारा साथी (रसूलुल्लाह) पागल नहीं है ।” (८१-१६ से २२)

“इसलिए ऐ मुहम्मद ! सत्र करो, इसमें शक नहीं अल्लाह का वादा सच्चा साबित होगा । अपनी ग़लती के लिए अल्लाह से माफ़ी मांगो और सुबह और शाम अपने रब की ‘हम्द’ (तारीफ़ यानी स्तुति) करो ।” (४०-५५)

“इसलिए ऐ मुहम्मद ! जानो कि सिवाय उम एक के और कोई अल्लाह नहीं है, और उससे अपनी ग़लती के लिए और जो मर्द और औरत तुम्हारी बात पर चलते हैं उन सब की ग़लतियाँ के लिए

माफ़ी मांगो और अल्लाह जानता है कि तुम कहाँ रहते हो और कहाँ जाते हो ।” (४७-१६)

“सचमुच अल्लाह ने तुम्हें (मुहम्मद साहब को) साफ़ फ़तह दी है, ताकि अल्लाह तुम्हारी अगली और पिछली सब ग़लतियों को माफ़ कर दे और तुम पर अपनी निश्रामतो और बरकतों को पूरा करे और तुम्हें सीधे रास्ते पर ले चले और तुम्हें बहुत बड़ी मदद दे ।” (४८-१ से ३)

“ऐ ईमान वालो ! रोज़े रखना तुम्हारा फज़्र बताया गया है, जिस तरह तुमसे पहले के लोगों को भी बताया गया था । यह इसलिए है ताकि तुम बुराई से बचे रहो ।

“कुछ दिन तक (जो मुक़र्रर है रोज़े रखो), लेकिन तुममें से जो कोई बीमार हो या सफ़र में हो, वह उन दिनों की जगह उतने ही दिन कभी और रोज़े रख ले, और जो कोई कर सके, वह रोज़ा रखने की जगह किसी ग़रीब आदमी को खाना खिला कर रोज़े से छुटकारा पा सकता है । इसलिए अगर कोई अपने आप दूसरों की भलाई का काम करे तो उसके लिए ज़्यादा अच्छा है और अगर तुम समझो तो तुम्हारे लिये रोज़े रखना ज़्यादा अच्छा है ।” (२-१८३, १८४)

“अल्लाह ने तुम पर (मुहम्मद साहब पर) यह किताब (कुरान) उतारी है जो सच्ची है । यह उन किताबों को सच्चा ठहराती है जो इस से पहले आ चुकी हैं और जो सब उस असली किताब (ज्ञान) में से ली गई हैं (जो अल्लाह ही के पास है) । यह किताब (कुरान) उन सब अपने से पहले की किताबों की हिफ़ाज़त करती है । इसलिए अल्लाह ने जो कुछ ज्ञान तुम्हें दिया है उसी से उनके बीच फैसला

करा और लोगों के वहमों में पड़कर उस सच्चाई से न फिरो जो तुम पर उतरी है। अल्लाह ने हरेक के लिए अलग अलग शरअ और मिनहाज (रीत रिवाज और पूजा के तरीक़े) बना दिये हैं। अल्लाह चाहता तो तुम सब को एक ही फ़िरका (एक ही रस्म रिवाज के मानने वाले) बना देता। लेकिन अल्लाह चाहता था कि जिसको जो तरीक़ा बता दिया है उसी में उसका परखे। इसलिए (इन फ़रकों में न पड़कर) दूसरों की भलाई के कामों में एक दूसरे से बढ़ने की कांशिश करो। सब को अल्लाह ही के पास लौट कर जाना है। तब जिन बातों में तुममें फ़रक़ है वह अल्लाह तुम्हें समझा देगा ।” (५-४८)

“और अल्लाह यह नहीं करता कि जा तक कोई लोग नेक काम करते रहे तब तक सिर्फ़ उनके ग़लत अक़ीदों यानी ग़लत विश्वासों या माननाओं की वजह से उन्हें बरबाद करे, अगर अल्लाह चाहता तो सब लोगों को एक ही से मज़हबी अक़ीदे के मानने वाले बना देता, लेकिन इन बातों में लोगों में फ़रक़ रहेगा ।” (११-११७, ११८)

धर्म में जबरदस्ती की मनाही

“मज़हब के मामले में कोई ज़बरदस्ती नहीं होनी चाहिये (२-२५६)

“तुम्हारा रब्ब अगर चाहता तो सचमुच दुनिया भर के सब आदमी तुम्हारी बात मान लेते। तो क्या तुम लोगों के साथ ज़बरदस्ती करोगे कि वह तुम्हारी बात मान लें !” (१०-९९)

“ऐ मुहम्मद ! तुम्हारे रब्ब ने तुमपर जो ज्ञान उतारा है तुम उसी पर चलो, यह कि सिवाय उस एक अल्लाह के दूसरा कोई अल्लाह नहीं है और जो लोग किसी दूसरे (देवी देवताओं या मूर्तियों) की पूजा करते हैं उन्हें छोड़ो ।

“अगर अल्लाह चाहता तो वे भी सिवा एक अल्लाह के किसी दूसरे की पूजा न करते । हम (अल्लाह) ने, तुम्हें उनके ऊपर ‘हज़ीज़’ या ‘वकील’ ‘चौकीदार या ठेकेदार’, बना कर नहीं भेजा है ।

“और अल्लाह के सिवा जिन (देवी देवताओं मूर्तियों वगैरह) को, वे पूजा करते हैं उन्हें बुरा मत कहाँ, ताकि हृद से बढ़कर कहीं वे भी नादानी की वजह से अल्लाह को बुरा न कहने लगें । अल्लाह ने ऐसा कर दिया है कि सब लोगों को अपने ही काम अच्छे लगते हैं । आखीर में सब अपने उसी रब्ब के पास लौटकर जायेंगे और अल्लाह उन सब को समझा देगा कि उन्होंने क्या क्या किया ।” (६-१०७ से १०९)

“उस अल्लाह के नाम पर जो रहमान और रहीम है ।

“ऐ मुहम्मद ! काफ़िरो* से (उन लोगों से जो तुम्हारी बात नहीं मानते) कह दो कि—

*‘काफ़िर’ शब्द अरबी कुफ़्र से बना है, जिसके माइने हैं—

(१) ढकना, (२) झूठ समझना या न मानना, और (३) नाशुकरी करना यानी बेकदरी करना । काफ़िर के माइने हैं—(१) वह आदमी जो किसी की बात मानने से इनकार करे, (२) वह जो ईश्वर की दया और उसकी देन के लिए शुक्रगुज़ार न हो, और

“मैं उसकी पूजा नहीं करता जिसकी तुम करते हो ।

“न तुम उसकी पूजा करते हो जिसकी मैं करता हूँ ।

“न मैं उसकी पूजा करूँगा जिसकी तुम करते हो ।

“न तुम उसकी पूजा करोगे जिसकी मैं करता हूँ ।

(१) काफिर अरबों में किसान यानी खेती करने वाले को भी कहते हैं क्यों कि किसान बीज को मट्टी से ‘ढकता’ है ।

(‘गरीबुल कुरान’—मिरजा अबुल फजल; ‘लुगातुल कुरान’ मौलवी मुहम्मद खलील) ।

कुरान में यह शब्द कहीं न कहीं इन सब माइनों में इस्तेमाल किया गया है । आम तौर पर यह अरब के उन लोगों के लिए आया है, जो मुहम्मद साहब की “बान न मानते थे ।”

एक जगह कुरान में तमाम इन्सानी क़ौम की तरफ इशारा करते हुए कहा गया है—

“अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को बनाया और बादलों से पानी बरसाया, फिर उसी से तुम्हारे खाने के लिए ज़मीन पर फल पैदा किये, और तुम्हें जहाज़ दिये ताकि वे समन्दर में अल्लाह के हुकुम से चलें, और नदियां का आदमियों के लिए काम का बनाया, और सूरज और चाँद को जो अपने अपने रास्ते पर चलते रहते हैं और रात और दिन को, सब को, तुम्हारे लिए फ़ायदे का बनाया । तुम जो माँगते हो वह सब अल्लाह देता है । तुम अगर अल्लाह की दी हुई नियामतों को गिनना चाहो तो गिन नहीं सकते, पर हममें शक नहीं कि इनसान बड़ा जुल्म (बेइन्साफ़ी) करने वाला और बड़ा ‘काफिर’ (नाशुकरा) है ।” (१४-३२ ३३, ३४)

“इसलिए तुम्हारा दीन तुम्हारे लिए और मेरा दीन मेरे लिए ।”
(१०६-१ से ६)

इन आयतों में और इसी तरह कुछ और आयतों में भी (१७-६७) तमाम इन्सानों को आमतौर पर ‘काफिर’ कहा गया है। काफिर के माइने यहाँ पर ‘नाशुकरा’ यानी ‘अल्लाह की दी हुई नियामतों की कद्र न करने वाला’ हैं।

कहीं कहीं उन यहूदियों के लिए भी जो एक अल्लाह को और अपनी धर्म की किताब ‘तौरेत’ को मानते थे, पर जो अपने मजहब की असली तालीम से भटक गए थे, इन्हीं माइनों में ‘काफिर’ शब्द इस्तेमाल किया गया है। (१७-८)

एक जगह पर अल्लाह अपने बारं में कहता है कि—

“जो कोई भी नेक काम करेगा और ईमान लायगा उसकी कोशिशों के साथ हम ‘कुफ़’ नहीं करेंगे यानी उसकी नेकी की कोशिशों को ढकें या भुलावेंगे नहीं। और सचमुच जितनी भी कोशिश वह करेगा वह उसके नेक कामों में लिख ली जावेगी।”
(२१-६४)

ठीक इन्हीं माइनों में गीता में कहा गया है कि—“नेकी के इस रास्ते पर आदमी की थोड़ी से थोड़ी कोशिश भी फ़ज़ूल नहीं जा सकती” (२-४०) ।

कुरान में एक दूसरी जगह अल्लाह कहता है कि—

“जो लोग ईमान (यक़ीन) लायेंगे और नेक काम करेंगे हम सचमुच उनके पिछले बुरे कामों के साथ ‘कुफ़’ करेंगे (यानी उनकी

नीचे की दो आयतें उस ज़माने की हैं जब कि अरब में मुसलमानों और गैर-मुसलमानों के बीच दुरमनी हद को पहुँची हुई थी और बराबर लड़ाइयां जारी थीं—

पिठली गलतियों को ढक देंगे, यानी माफ़ कर देंगे)·

(२६-७)

यहां पर भी 'कफ़र' के माइने ढक देने (अगरेज़ो-Cover) भुना देने या माफ़ कर देने के हैं । और यह शब्द ईश्वर के लिए इस्तेमाल किया गया है ।

कहीं कहीं खुद उन लोगों के मुंह से जो मुहम्मद साहब या दूसरे रसूलों की बात न मानते थे यह कहलाया गया है कि “जो कुछ तुम (रसूल) कहते हो उसकी तरफ़ में हम 'काफ़िर' हैं (याना हम उसे नहीं मानते) ।” (३४—३४)

एक जगह पर उन लोगों को “जो अल्लाह के पैगम्बरों में से किसी को मानते हैं और किसी को नहीं मानते यानी उनमें फ़रक़ करते हैं “काफ़ेरून हक्का” यानी ‘सचमुच काफ़िर’ कहा गया है । (४—१५०, १५१)

एक जगह कुरान में ‘काफ़िर’ लफ़्ज़ किसान के माइनों में भी आया है । (५७—२०)

आमतौर पर ‘काफ़िर’ शब्द से कुरान में उन अरबों से मतलब है जो मुहम्मद साहब की बातें मानने से इनकार करते थे, या उन लोगों से ‘जो अल्लाह की देन यानी बरकतों से इनकार करते थे ।’

“अल्लाह तुम से यह नहीं कहता कि जो गैर-मुसलमान तुम्हारे मज़हब की वजह से तुम से लड़ते नहीं हैं और जिन्होंने तुम्हें तुम्हारे घरों से नहीं निकाला, उनके साथ तुम मुहब्बत का बर्ताव न करो या इनसाफ़ न करो। सचमुच अल्लाह उन्हें ही प्यार करता है जो सबके साथ इनसाफ़ करते हैं।

“अल्लाह का मिर्ज़ा यह हुकुम है कि जिन लोगों ने तुम्हारे मज़हब की वजह से तुमसे लड़ाई शुरू कर दी है, और जिन्होंने तुम्हें ज़बरदस्ती तुम्हारे घरों से निकाल दिया है, या दूसरों को तुम्हें निकाल देने में मदद दी है, उनसे जाकर न मिल जाओ, जो उनसे जाकर मिल जाता है, वह जुल्म करता है।” (६०-८, ९)

“जिन लोगों ने तुम्हारी (मुहम्मद साहब की) बात मान ली है, उनसे कहो कि वे उन लोगों को मार कर दे, जिन्हें उस दिन का डर नहीं है जिस दिन वे अल्लाह के सामने जावेंगे। अल्लाह सब को उनके कामों का फल देगा।

“जो नेकी करेगा सो अपने लिए और जो बुराई करेगा सो भी अपने लिए, आख़ीर तुम सब को अपने रब्ब ही के पास जाना है।” (४५-१४, १५)

सब तरफ़ अल्लाह है

“पूरब और पच्छिम दोनों अल्लाह के हैं, इसलिए जिधर भी तुम मुझे उधर ही अल्लाह का मुँह है, सचमुच अल्लाह ख़ूब देने वाला और सब कुछ जानने वाला है।” (२-११५)

पैग़म्बर होने के बाद मुहम्मद साहब १३ बरस मक्के में

रहे और उपदेश देते रहे। जब तक वे मक्के में थे तब तक नमाज़ में मुँह करने की कोई खास सिम्त मुकर्रर नहीं थी। मदीने में पहुँचने के बाद बहुत दिनों तक वह उत्तर की तरफ, जिधर यहूदियों और ईसाइयों का पाक शहर यरुसलम था, मुँह करके नमाज़ पढ़ाते रहे। करीब १६ महीने बाद उन्होंने उत्तर की जगह दक्खिन की तरफ़ यानी जिधर मक्का और काबा था मुँह करके नमाज़ पढ़ाना शुरू कर दिया। कुछ लोगों ने इस तबदीली पर एतराज़ किया। इसपर कुरान की यह आयत उतरी—

“नासमझ लोग पूछेंगे कि ये लोग जिस तरफ़ मुँह करके नमाज़ पढ़ा करते थे, उसे इन्होंने क्यों बदल दिया। उनसे कह दो कि पूरब और पच्छिम सब अल्लाह ही के हैं। वह जिसको चाहता है उसे सीधे रास्ते पर ले चलता है।” (२-१४२)

“धर्म या नेकी इसमें नहीं है कि तुमने अपने मुँह (नमाज़ के वक्त) पूरब की तरफ़ कर लिये या पच्छिम की तरफ़। धर्म यह है कि आदमी अल्लाह को माने, आख़रत यानी कर्मों के फल को माने, फ़रिश्तों को माने, सब मज़हबी किताबों और सब नबियों या रसूलों

❦ ‘मलक’ यानी फ़रिश्तों और ‘शैतान’ दोनों का कुरान में कई जगह ज़िक्र आता है। अक्सर लोग यह भी मानते हैं कि फ़रिश्ते और शैतान अलग योनियां या हस्तियां हैं। कई जगह कुरान में ‘शैतान’ लफ़्ज़ मामूली बुरे आदमियों के माइनों में आया है (२१-८२; २२-३)। कुरान का तफ़सीर (टीका) लिखने वाले कई आलिम मुसलमानों की राय है कि फ़रिश्तों से

को माने, अल्लाह के प्रेम के नाते यानी उसके नाम पर अपने माल और दौलत में से अपने नातेदारों को, यतीमों को, ज़रूरतमन्दों को, रास्ते चलतो को और मांगने वालों को दान दे, और गुलामों को आज़ाद कराने में अपनी दौलत खर्च करे, अल्लाह से दुआ मांगता रहे, ज़कात (अपने कुल माल का कम से कम ४० वा हिस्सा हर साल अल्लाह के नाम पर ग़रीबों को ख़ैरात) देता रहे, जब कभी किसी से बादा करे तो उसे पूरा करे, और मुसीबतों में, तकलीफ़ में, और सग़्ती के दिनों में सब्र करे—जो लोग ऐसा करते हैं वे ही सच्चे हैं और वे ही मुत्तक़ी यानी परहेज़गार हैं ।” (२-१७७)

मतलब आदमी के दिल के अन्दर के नेक रुझानों (अच्छी प्रवृत्तियों) से और शैतानों से मतलब आदमी के अन्दर के बुरे रुझानों से है। मिसाल के तौर पर मशहूर तुर्क विद्वान महमूद मुहतार पाशा लिखता है—

“कुरान में फ़रिश्तों से मतलब आदमी के दिल के अन्दर के ऊँचे भावों (जज़्बों) और इज़लाक़ी रुझानों से है। ये रुझान अस्लीयत में अल्लाह ही से हैं, क्यों कि कुरान के मुताबिक़ हर तरह की ताक़त ईश्वर ही में है और उसी से पैदा होती है। लिखा है कि आदमी के अन्दर जब रुहानी ताक़त जाग जाती है और काम करने लगता है तो फ़रिश्ते भी आदमी को सिजदा करने लगते हैं। इसका मतलब यह है कि आदमी की रुहानी यानी ऊँचे दरजे की ताक़त के सामने उसके ये सारे नेक रुझान झुक जाते हैं और आदमी जिस तरह चाहता है वे चलने लगते हैं। शैतान की वाबत कुरान में कहा

मदीने के पास एक पहाड़ी जगह कुबा है। मक्के से मदीने जाते हुए मुहम्मद साहब और उनके साथी कुछ दिन वहाँ ठहरे थे। कुबा में थोड़े ही दिनों के अंदर वहाँ के मुसलमानों के नमाज़ पढ़ने के लिए एक छ्वांटी सी मसजिद बन गई। चन्द्र साल के बाद कुछ मुसलमानों ने उसी शहर में एक दूसरी मसजिद तामीर कर ली। इस दूसरी मसजिद के बनाने वालों गया है कि वह बिना धुएं की आग से पैदा हुआ।' इंजिल में उसकी मिसाल साँप से दी गई है। यानी शैतान उस मोटी दुनियावी ख्वाहिश का नाम है जो ज़मीन के ऊपर बेलगाम काम करता है। यह आदमी के अन्दर जिस्मानी ख्वाहिशों (इन्द्रिय सुखों) की वह आग है जिससे आदमी अगर एतकाद यानी श्रद्धा और विश्वास की मदद से अपने क आज़ाद न कर सके तो वह आग सचमुच उसे जलाकर ख़त्म कर देगी। जिस फल को खाने से आदमी को रोक़ा गया था वह 'खुदी' बल्कि 'दुई' यानी दूसरा से अपनी अलहदगी का खयाल है। आदमी के गुनाहों की जड़ उस दुई में है जो उसे सारी दुनिया की आत्मा के साथ मिलाकर एक कर देने की जगह उसे उससे दूर ले जाती है। इस तरह फ़रिश्ते और शैतान इन्सान के अन्दर की वे दो ताक़तें हैं जिनमें से एक आदमी की दास्त और दूसरी उसकी दुश्मन है। इनमें से इन्सान को एक में यक़ीन करना चाहिये और दूसरी से बचने के लिए अल्लाह की मदद और उसकी पनाह लेनी चाहिए।' कुरान (सूरा ११४)—The Wisdom of the Quran, by Mahmud Muhtar Pasha, Introduction, pp. 39 to 41

ने मुहम्मद साहब से जाकर प्रार्थना की कि आप कुवा पहुँच कर एक मर्तबा नई मसजिद में नमाज़ पढ़ें और इज्जत बरूँ। इन दो अलग अलग मसजिदों से शहर के मुसलमानों में फूट पैदा हो जाने का डर था। इस पर कुरान में आयत उतरी कि “जिस मसजिद से ईमान वालों में तफ़रीक़ यानी फूट पैदा होती है उसमें जाकर खड़ा नहीं होना चाहिए” (६-१०७, १०८) मुहम्मद साहब ने वहाँ जाने से इनकार कर दिया और उनके हुक्म से कुवा की वह दूसरी मसजिद गिरवा दी गई।*

“हर एक की अपनी अपनी तरफ़ (दिशा) है जिस तरफ़ इबादत के वक्त वह अपना मुँह कर लेता है। इसलिए (इस बहस में न पड़ कर) भलाई के कामों में एक दूसरे से बटने की कोशिश करो। तुम जहाँ कहीं भी होगे अल्लाह तुम सब को मिला देगा। सचमुच अल्लाह सब चीज़ों पर क़ादिर है यानी सब कुछ कर सकता है।” (२-१४८)

मुहम्मद साहब और करामात

“कह दो कि मैं (मुहम्मद) कोई अनांखा रसूल नहीं हूँ, [यानी मैं कोई ऐसी बात नहीं रिखाता जो मुझे पहले के रसूलों और पैग़म्बरों ने न सिखाई हो, न मैं कोई ऐसा काम कर सकता हूँ जो वे न कर सकते थे, न कोई मोज़ज़ा या करामात दिखा सकता हूँ—अलबत़ावी], मुझे यह नहीं मालूम कि मेरे साथ क्या होने वाला है या तुम्हारे साथ क्या होने वाला है। मैं सिर्फ़ उसी पर अमल करता

अबहरुलमुहीत इमाम असीरुद्दीन अबु इब्न

हूँ जाँ अल्लाह मुझे हुकुम देता है । मेरा काम इसके सिवाय और कुछ नहीं कि लोगों को बुरे कामों के नतीजों से आगाह करूँ ।” (४३-६)

“और मुहम्मद सिवाय एक रसूल के और कुछ नहीं है, उससे पहले के रसूल भी मरते आए हैं, इसलिए अगर मुहम्मद मर जाय या मार डाला जाय तो क्या तुम लोग (अपने धर्म से) फिर जाओगे ?” (३-१४३)

हजरत मुहम्मद के मरने के बाद हजरत अबुबक्र ने लोगों को यही ऊपर की आयत पढ़कर मुनाई थी ।

“कह दो कि मैं (मुहम्मद) तुम (लोगों) से यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के खज़ाने हैं, न मुझे ग़ैब का हल्म (बिन देखी चीज़ों की जानकारी) है और न मैं तुमसे कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ, मैं सिर्फ़ उसी पर चलता हूँ जाँ ईश्वर ने मेरे घट में बैठा दिया है ।” (६-५०)

“ये लोग ज़ोरों के साथ अल्लाह की क़स्में खाकर कहते हैं कि अगर हमें कोई करामात दिखा दी जाय तो हम ज़रूर मान लेंगे । कह दो कि करामात सिर्फ़ अल्लाह कर सकता है ।” (६-११०)

“लोग कहते हैं कि हम उस वक्त तक तुम्हारी बात हरगिज़ नहीं मानेंगे जब तक तुम हमारे लिए ज़मीन से पानी का एक चश्मा फोड़कर न निकाल दो, या खजूरों और अंगूरों का एक ऐसा बाग़ न खड़ा कर दो जिसके बीच से अपने आप फूट कर दरिया बह रहे हों, या अपने ज़ोर से आसमान के टुकड़े टुकड़े करके हमारे ऊपर न गिरा दो, या अल्लाह और फ़रिश्तों को हमारे सामने लाकर खड़ा न करदो, या अपने लिए एक सोने का मकान खड़ा न कर लो, या

आम्मान में न चढ़ जाओ और वहाँ से एक ऐसी किताब न ले आओ जिसे हम पढ़ सकें। इस सत्र के जवाब में इनसे कह दो कि मेरे रब्ब को याद करो, मैं सिवाय एक इन्सान और एक रसूल के और कुछ नहीं हूँ।” (१७-६० से ६३)

‘लोग कहते हैं कि मुहम्मद को उसके रब्ब की तरफ से करामात दिखाने को क्यों नहीं मिलती? उनसे कह दो कि करामात सिर्फ अल्लाह के पास हैं, मैं तो सिर्फ बुरे कामों के नतीजों से खुले तौर पर आगाह करने वाला हूँ।” (२६-१०)

‘इसमें क्या अजीब बात है कि तुम्हारे रब्ब ने तुम्हीं में से एक आदमी के जरिये तुम्हें दोन की याद दिलादी, ताकि वह आदमी तुम्हें आगाह कर दे, और तुम बुराई से बचे रहो, जिससे कि अल्लाह तुम पर रहम करे।” (७-६३)

“लोगों से कह दो कि—मैं (मुहम्मद) अल्लाह की मरज़ी के खिलाफ़ अपने आपको भी न कुछ फायदा पहुंचा सकता हूँ और न नुकसान। अगर मुझे ग़ैब का इल्म (अदृष्ट की जानकारी) होता तो मेरे पास बहुत सी अच्छी चीज़ें होती और कोई बुराई मुझे छू भी न सकती, लेकिन मेरा काम सिवाय इसके और कुछ नहीं है कि लोगों को बुरे कामों के नतीजे से आगाह कर दूँ और जो मेरी बात मान लें उन्हें अच्छे नतीजे की खुश ख़बरी दूँ।” (७-१८८)

“कह दो कि ग़ैब का इल्म सिर्फ़ अल्लाह को है, इसलिए इन्तज़ार करो, मैं भी तुम्हारी ही तरह इन्तज़ार करने वालों में से हूँ।” (१०-२०)

“मैं सिर्फ़ तुम्हारी ही तरह एक आदमी हूँ, हाँ ! अल्लाह ने मुझे

यह ज्ञान दिया है कि तुम सब का एक ही अब्लाह है । इसलिए जो कोई अपने रब्ब से मिलने की आस लगाए है उसे चाहिये कि नेक काम करे और सिवाय एक रब्ब के दूसरे किसी की पूजा न करे ।” (१८-११०)

“मैं सिर्फ तुम्हारी ही तरह एक इनसान हूँ । अब्लाह ने मुझे यह ज्ञान दिया है कि तुम्हारा सब का एक ही अब्नाह है । इसलिए नेकी के रास्ते पर चलो वही अब्लाह तक पहुँचने का रास्ता है । उसी अब्लाह से (अपनी गलतियों के लिए) माफ़ी चाहो ।” (४१-६)

“मुझे इसके सिवाय और कुछ वही (ईश्वर प्रेरणा) नहीं हुई कि मैं लोगों को बुराई के नतीजे से खुले तौर पर आगाह कर दूँ ।” (३८-७०)

जंग की इजाजत

इसनाम धर्म का उपदेश देना शुरू करने के बाद मुहम्मद साहब के पहल तेरह साल मक्के के अन्दर बड़ी मुसीबतों में कटे, जिसमें मक्के वालों ने उन्हें और उनके साथियों को बेहद तकलीफें पहुँचाईं । उन तेरह बरस के अन्दर इस वागं में जितनी आयतें कुरान में उतरिं उन सब में बुराई का बदला भलाई से देने और सब्र और सच्चाई के साथ दमरों के सब जुल्मों को सह लेने की हिदायत दी गई है । इसके बाद मुहम्मद साहब अपने कुछ साथियों को लेकर मदीने पहुँचे । मक्के वालों ने वहाँ भी चढ़ाई करके उन पर हमले शुरू किये । इसपर कुरान में पहली बार नीचे लिखी आयतों के जरिये मुहम्मद साहब और उनके साथियों को, अपने बचाव के लिये, हमला करने

बालों से लड़ने की इजाजत दी गई—

“जिन लोगों पर लड़ाई की गरज से चढ़ाई की जा रही है, उन्हें भी (अपने वनाय के लिए) लड़ने की इजाजत दी जाती है, क्योंकि उन पर यह जुल्म हो रहा है. और इसमें कोई शक नहीं कि अल्लाह उनकी मदद के लिए काफ़ी है।

‘यह इजाजत उन लोगों को है जिन्हें नाहक (इन्साफ़ के खिलाफ़) और सिर्फ़ इसलिए उनके घरों से निवाल दिया गया है, क्योंकि वे कहते हैं कि ‘अल्लाह हमारा रब्व है।’ और अगर अल्लाह इस तरह कुछ लोगों को कुछ लोगों से न हटवाता तो इसमें कोई शक नहीं कि वे सब मकान जैसे साधुओं के मठ, ईसाइयों के गिरजे, यहूदियों के इनादतख़ाने और मसजिदों जहाँ लोग अल्लाह का नाम कसरत से लेते हैं. गिरा दिये गए होते। इसमें शक नहीं जो कोई अल्लाह के काम में मदद करेगा अल्लाह उसकी मदद करेगा। सचमुच अल्लाह लवान और बढ़ा है।

“यह (इजाजत) उनके लिए है, जिन्हें अगर अल्लाह धरती पर क़ायम करदे, तो वे अल्लाह से दुआ मांगते रहेगे, ग़रीबों को दान देतें रहेगे, और सब का भले कामों के करने और बुरे कामों से बचने की सलाह देते रहेगे। आख़ीर में सब कामों का नतीजा अल्लाह के हाथ में है।” (२२-३६ से ४१)

इस इजाजत के मिल जाने पर भी मालूम होता है मुसलमानों का दिल लड़ने के लिए पूरी तरह तय्यार न होता था, क्योंकि चढ़ाई करने वाली फ़ौज में उनके अपने भाई, चाचा, चाचा, मामा और दूसरे पास से पास के रिश्तेदार मौजूद थे।

इस पर नीचे की आयतें उतरीं—

“तुम्हें जंग की इजाज़त दे दी गई है, और तुम्हें यह अच्छा नहीं लगता। मुमकिन है कि जो चीज़ तुम्हें अच्छी नहीं लगती वह तुम्हारे भले की हो, और हो सकता है कि जो चीज़ तुम्हें प्यारी लगती है वह तुम्हारे लिए बुरी हो। और अल्लाह सब जानता है, तुम नहीं जानते।” (२-२१६)

“अल्लाह की राह में वे लोग लड़ें जो इस दुनिया को ज़िन्दगी को आख़िरत यानी परलोक के लिए दे डालने को तय्यार हैं। और जो कोई अल्लाह की राह में लड़ता है वह चाहे मारा जाय और चाहे जीते अल्लाह से उसे बहुत बड़ा फल मिलेगा।

“और क्या बात है कि तुम अल्लाह की राह में, उन कमज़ोरों, औरतों और बच्चों के बचाव के लिए नहीं लड़ते जो यह कह रहे हैं कि ‘ऐ हमारे रब्ब ! हमें इस शहर (मक्के) से निकाल जिसके लोग हम पर जुल्म करते हैं, और हमें कोई बचाने वाला और हमारी मदद करने वाला भेज’

“जो लोग ईमान वाले हैं वह अल्लाह की राह में लड़ते हैं, और जो ईमान वाले नहीं हैं वे सरकारों यानी जुल्म करने वालों की तरफ़ से लड़ते हैं। जुल्म करने वाले शैतान के दास्त हैं इसलिए शैतान के दोस्तों के खिलाफ़ लड़ो। सचमुच शैतान का परला कमज़ोर है।” (४-७४ से ७६)

“इसलिए अल्लाह की राह में लड़ो, इस मामले में तुम (हज़रत मोहम्मद) सिर्फ़ अपने लिए जिम्मेवार हो, दूसरों के लिए नहीं, और दूसरे ईमान वालों का होसला बढ़ाओ मुमकिन है कि अल्लाह

(दूसरी तरफ़ के) उन लोगों का, जो ईश्वर की निश्रामतों का शुक्र नहीं करते हाथ रोक दे। अल्लाह ही सब से ज़्यादा ताक़तवर और सज़ा देने में भी सब से बलवान है।

“जो कोई किसी अच्छे काम में किसी का साथ देता है उसे उसका हिस्सा मिलेगा, और जो कोई किसी बुरे काम में किसी का साथ देता है उस पर उसकी ज़िम्मेवारी आ जाती है, और अल्लाह सब चीज़ों को देखता है।

“और जब कभी (तुम्हारे दुश्मनों में से) कोई तुम्हें दुश्मा दे (या सलाम करे) तो तुम उसे उससे भी बढ़कर दुश्मा दो, और सलाम का जवाब सलाम से दो। सचमुच अल्लाह सब चीज़ों का हिसाब रखता है।

“अल्लाह है, सिवाय उस एक के कोई दूसरा अल्लाह नहीं है। इसमें कोई शक नहीं कि आख़ीर में अल्लाह तुम सबको एक दिन मिला देगा। अल्लाह से बढ़कर अपनी बात पूरी करने वाला और कौन है ? (४-८४ से ८७)

“और अगर मुनाफ़िक्को (निफ़ाक़ यानी फूट डालने वालो) में से भी कोई किसी ऐसे ग़िरोह के पास पहुँच जावे जिससे तुम्हारी सुलह है, या खुद तुम्हारे पास आवे और उनके दिल तुम्हारे साथ याना अपनी ही क़ौम वालो के साथ लड़ने से बचना चाहें.. अगर वे हट जावें, खुद तुम से न लड़ें, और सुलह करना चाहें, तो फिर अल्लाह तुम्हें उनसे लड़ने की इजाज़त नहीं देता।” (४-६०)

“ऐ ईमान वालो ! जब तुम अल्लाह की राह में लड़ने जाओ, तो अच्छी तरह देख भाल लो, अगर कोई तुमसे सुलह करना चाहे

तो उससे यह न कहो कि 'तुम मुसलमान नहीं हो' (इसलिए तुमसे हमारी सुलह नहीं हो सकती) ।' क्या तुम इस दुनिया के माल अस-बाब के पीछे पड़े हुए हो ? लेकिन अल्लाह के पास इस दुनिया की चीजों से कहीं ज्यादा भलाई का चीजें हैं । पहले तुम भी इन्हीं लोगों की तरह थे फिर अल्लाह ने तुम पर रहम किया । इसलिए देख भाल लो । सचमुच जो कुछ तुम करते हो अल्लाह सब जानता है ।" (४-६४)

“जो लोग अल्लाह की निश्चामतो का शुक्र नहीं करते, उनसे कह दो कि अगर वे तुमसे लड़ना बन्द कर दें तो अब तक जो कुछ उन्होंने किया है सब माफ़ कर दिया जावेगा । और अगर वे फिर लड़ना शुरू कर देंगे तो जो पिड़लों के साथ हो चुका है वही उनके साथ हांगा ।

“और उनके साथ उस वक्त तक ही लड़ो जब तक कि 'फ़ितना' यानी भगड़ा बन्द न हो जावे, और दीन का मामला अल्लाह ही के हाथ में रहे (यानी इस मामले में कोई किसी के साथ ज़रदस्ती न करे), लेकिन अगर वे अपनी तरफ़ से लड़ना बन्द कर दें तो (तुम भी लड़ना बन्द कर दो), सचमुच जो कुछ वह करते हैं अल्लाह सब देखता है ।

* कुरान में इस बात पर बारबार जोर दिया गया है कि अगर मुसलमानों और गैर मुसलमानों में कोई ऐसा समझौता हो जावे जो किसी दूसरे मुसलमान के खिलाफ़ जाता हो तब भी सुलह करने वाले मुसलमानों का फ़र्ज़ है कि सचाई से उस समझौते पर अमल करें । (८-७२; ९-१, ४, ७ दगैरह)

“और अगर वे फिर लड़ने लगें, तो यक़ीन रखो कि अल्लाह तुम्हारा मालिक है और वह बहुत अच्छा मालिक और बहुत अच्छा मददगार है।” (८-३८ से ४०)

“और अगर वे सुलह की तरफ़ झुकें तो तुम भी सुलह की तरफ़ झुको और अल्लाह पर भरोसा करो। सचमुच वह सब सुनता और जानता है।

“और फिर अगर वे तुम्हें (मोहम्मद साहब को) धोखा देना चाहेंगे तो सचमुच तुम्हारे लिए अल्लाह काफ़ी है। उसी ने अपनी मदद से तुम्हें (मुहम्मद साहब को) बल पहुँचाया था। उसी ने इतने आदमी तुम्हारी बात मानने वाले कर दिये।

“उसी अल्लाह ने इन सब लोगों के दिलों को मिलाया,* अगर तुम दुनिया का सारा माल भी ख़र्च कर डालते तो तुम इन सब के दिलों को एक न कर सकते। लेकिन अल्लाह ने इन्हें मिला कर एक कर दिया। सचमुच अल्लाह बड़ा और सब कुछ जानने वाला है।

“ऐ नबी ! अल्लाह तुम्हारे लिए और उन सब ईमान वालों के लिए, जो तुम्हारे कहने पर चले हैं, काफ़ी है।” (८-६१ से ६४)

“ऐ ईमान वाले ! जो लोग अल्लाह की निश्रामती से ‘कुफ़्र’ करते हैं वे जब सामने से तुम से लड़ने के लिए आवें, तो तुम पीठ मत मोड़ो।”

*इशारा इसलाम से पहले का अरब की उस आपसी फूट की तरफ़ है, जिसमें हजारों क़बीले क़रीब क़रीब सब एक दूसरे के ख़ून के प्यासे थे।

“और जब तुमने उन्हें मारा तो तुमने नहीं मारा, अल्लाह ने मारा और जब तुमने हथियार चलाया तो तुमने नहीं चलाया अल्लाह ने चलाया ।* (८-१५, १७)

“और जो लोग तुम से लड़ें उनसे तुम भी अल्लाह की राह में लड़ो। लेकिन (इन्साफ़ की) हद से न बढ़ो, सच्चे अल्लाह उन्हें प्यार नहीं करता जो हद से बढ़ते हैं ।

‘जहां वहीं उनसे सामना हो लड़ो, और तुम्हारे जिन घरों से उन्होंने तुम्हें निकाल दिया है उनसे तुम उन्हें निकाल दो । फ़ितना प्रसार करना (किसी के मज़हब की वजह से उसे स्ताना) (जो वे करते हैं) लड़ने से ब्यादह दुरा है और बावें के अन्दर जब तक वे तुम से न लड़ें तुम उनसे न लड़ो । लेकिन अगर वे लड़ें तो लड़ो । जो अल्लाह की निशामती की तरफ़ से नाशुकरे है उनका यही बदला है ।

“लेकिन अगर वे अपनी तरफ़ से लड़ने से एक जावे तो सच्चे अल्लाह माफ़ कर देने वाला और दयावान है ।

“उनसे उस वक्त तक लड़ो जब तक कि उनका उड़ाया हुआ फ़ितना दन्द न हो जावे, और धर्म का मामला अल्लाह ही के हाथ में न रह जावे (यानी धर्म के मामले में कोई किसी के साथ

*मयैवेते निहताः पूर्वमेव

नि.मत्तमात्रम भव सव्य साचिन (गीता)

या नी मैंने (ईश्वर ने) पहले ही से इन्हें मार रखा है । तू सिर्फ़ एक बायें हाथ का बहाना बन जा—गीता

ज़बरदस्ती न करे) लेकिन अगर वे लड़ना बन्द कर दें तो तुम्हें सिवाय उन लोगों के साथ जो दूसरों पर जुल्म करते रहें फिर किसी से दुश्मनी नहीं रखनी चाहिये।

“पाक महीना पाक महीने के लिए है, और सब पाक चीज़ों में बदले की इजाज़त है। इसलिए जो कोई पहले तुम पर हमला करे वह जितना नुक़सान तुम्हें पहुँचावे उतना ही तुम उसे पहुँचा सकते हो। और अल्लाह से डरो। समझ लो कि अल्लाह उन्हीं के साथ है जो बुराई से बचते हैं।

“और अल्लाह की राह में ख़र्च करो। और अपने ही हाथों से अपने को हिलाक (बरबाद) मत करो। और दूसरों का भला करो। सचमुच अल्लाह उन्हीं को प्यार करता है जो दूसरों का भला करते हैं (और दूसरों पर अहसान करते हैं)।” (२-१६० से १६५)

“और अगर मुसलमानों में से भी दो गिरोह आपस में लड़ने लगे, तो उनमें सुलह करा दो, लेकिन अगर उनमें से एक गिरोह दूसरे गिरोह के साथ ज़्यादती करता रहे तो जो गिरोह ज़्यादती करता है उससे लड़ो, जब तक कि वह अल्लाह के हुकुम को फिर से न मानने लगे। फिर अगर वह मान जाय तो दोनों में इनसाफ़ के साथ सुलह करा दो। और इनसाफ़ से काम लो। सचमुच अल्लाह उन्हीं को प्यार करता है जो इनसाफ़ से काम करते हैं।” (४९-९)

ग़ैर मुसलमानों और मुसलमानों दोनों के साथ जंग की इजाज़त की कुरान में ये ही आयते हैं।

इसलाम से पहले अरब और आस पास के मुल्कों में यह रिवाज था कि दुश्मन के जो आदमी जंग में कैद कर लिए

जाने थे उन्हें आमतौर पर या तो मार डाला जाता था और या गुलाम बना लिया जाता था । कुरान ने इस रिवाज को बदल कर आगे के लिए यह हुकुम दिया कि—

“जंग में जो लोग पकड़े जावे उन्हें या तो (दुश्मन पर) एक अहसान के तौर पर आज़ाद कर दिया जावे, और या हर आदमी के बदले में उस वक्त तक के लिए जब तक कि लड़ाई जारी रहे कुछ फ़मानत या हरजाना लेकर छोड़ दिया जावे ।” (४७-४)

जंग खतम होने के बाद किसी कैदी को अपने पास रोकने की इजाजत नहीं थी ।

“यह हुकुम इसलिए है कि अगर अल्लाह चाहता तो उनसे सचमुच बदला ले सकता था, लेकिन अल्लाह यही चाहता है कि कुछ आदमियों से दूसरे आदमियों पर अहसान करावे । और जो अल्लाह की राह में मारे जावेंगे अल्लाह उनके कामों को ज्ञाया नहीं होने देगा । वह उन्हें सच्चा रास्ता दिखायगा और उनकी हालत को सुधारेगा ।” (४७-४, ५)

इसी उसूल पर चलकर मुहम्मद साहब लड़ाइयों में पकड़े हुए कैदियों को बिना कुछ भी मुआवज़ा या हरजाना लिए अहसान के तौर पर आज़ाद कर देते थे, और कहीं कहीं कुछ हरजाना लेकर छोड़ देते थे । बद्र की मशहूर लड़ाई में उन्होंने सत्तर कैदियों को कुछ लेकर छोड़ दिया था । कुछ कैदियों से जो पढ़े लिखे और ग़रीब थे यह कहा कि इनमें से हर एक कैदी मर्दाने के दस दस आदमियों को लिखना पढ़ना सिखाकर आज़ाद हो जाय और अपने घर चला जावे । एक बार उन्होंने

वनी मुस्तनिक कबीले के सौ खानदानों को बिना कुछ लिए और दूसरी बार हवाज़िन कबीले के छै हजार कैदियों को बिना कुछ लिये छोड़ दिया था ।

गुलामी के पुराने रिवाज में यानी आदिमियों के बंधे जाने के रिवाज में इससे बहुत बड़ी कमी हुई ।

धरम फैलाने का तरीका

“और ऐ मुहम्मद ! जब तुम लोगों को ठीक रास्ते पर चलने के लिए बुलाते हो और वे नहीं सुनते, तुम देखते हो कि वे तुम्हारी तरफ़ देख रहे हैं, लेकिन वे नहीं देखते,

‘तो उन्हें माफ़ कर दो, और उनसे नेक काम करने को कहो, और जो नहीं समझते उनसे दूर जाओ,

‘और अगर शैतान तुम्हें गुस्सा दिलाने लगे तो अल्लाह की पनाह लो, सचमुच अल्लाह सब सुनता और जानता है,

“जो लोग, जब जब शैतान उनके अन्दर गुस्सा करने या बदला लेने की गुदगुदी पैदा करता है, तब तब उस बुराई से बचते हैं, और खयाल रखते हैं, वही सचमुच देख सकते हैं ।” (७-१६८ से २०१)

“और अगर, जंग के दिनों में भी, उन लोगों में से जो एक अल्लाह के साथ दूसरों को जोड़ते हैं, कोई तुम्हारी पनाह में आना चाहे, तो उसे अपनी हिफ़ाज़त में ले लो, और उसे अल्लाह की बातें सुनाओ, फिर भी अगर वह न माने, तो उसे उसकी हिफ़ाज़त की जगह तक पहुँचा दो, यह इसलिये क्योंकि वे लोग नासमझ हैं ।” (६-६)

“और (ऐ मोहम्मद !) अगर वे तुम्हें झूठा कहें तो उनसे कह दो—‘तुम्हें तुम्हारे कामों का फल मिलेगा और मुझे मेरे कामों का, न तुम मेरे कामों के लिए ज़िम्मेदार हों और न मैं तुम्हारे कामों के लिए’।

“उनमें से कुछ तुम्हारी बात सुनते हैं; पर क्या तुम उन्हें सुना सकते हो जो बहरे हैं, या जो सुनना नहीं चाहते ?

“कुछ तुम्हारी तरफ़ देखते हैं, पर क्या तुम उन्हें रास्ता दिखा सकते हो जो अन्धे हैं, या जो देखना नहीं चाहते ?

“सचमुच अल्लाह इन्सानों पर किसी तरह का जुल्म नहीं करता, आदमी अपने ऊपर खुद जुल्म करता है।” (१०-४१ से ४४)

“लोगों को अक़लमन्दी के साथ और मीठे शब्दों में समझा कर अपने रब्ब के रास्ते पर बुलाओ। और उनसे बहस करो तो मिठास के साथ करो। सचमुच जो लोग अल्लाह की राह से भटके हुए हैं, उन्हें और जो ठीक रास्ते पर हैं उन्हें दोनों को तुम्हारा रब्ब अच्छी तरह जानता है।

“और अगर तुम उनक़ी किसी कड़ी बात का जवाब दो तो ज़्यादा से ज़्यादा उसी तरह के शब्दों में दो जिस तरह के उन्होंने कहे हों, लेकिन अगर तुम (उनके कड़े शब्दों को भी) सब्र के साथ बरदाश्त कर जाओ तो सचमुच सब्र करने वाला के लिए सब से अच्छा फल है।

“इसलिए सब्र ही करो और तुम अल्लाह की मदद से ही सब्र कर सकते हो, और न उनके लिए रंज करो, और न वे जो तरकीबें (तुम्हारे खिलाफ़) सोचते हैं उन पर अपने को दुखी करो।

“सचमुच अल्लाह उन्हीं के साथ है जो बुराई से बचते हैं और जो दूसरों के साथ नेकी करते हैं ।” (१६-१२५ से १२८)

नेकी यानी सदाचार

“और तुम्हारे रब्ब का हुकुम है कि तुम सिवाय उसके किसी दूसर की पूजा न करो, और अपने माँ-बाप के साथ नेकी का बर्ताव करो । अगर उनमें से कोई एक या दोनों बूढ़े हो जावें तो उन्हें “उफ़” तक मत कहो, और न कोई कड़ी बात कहो, उनसे जब बात करो तो मुहज्वत और नरमी से करो, उनसे दब कर रहो, उन पर रहम करो और अल्लाह से यह दुआ मांगो—‘ऐ अल्लाह ! इन पर अपनी दया कर, इन्होंने मुझे छोटे से बड़ा किया है’ ।

“तुम्हारा रब्ब अच्छी तरह जानता है कि तुम्हारे मन में क्या है, अगर तुम नेकी करोगे तो सचमुच अल्लाह उन लोगों के (पिछले) बुराई माफ़ कर देता है जो उसकी तरफ़ मुड़ते हैं ।

‘अपने नातेदारों का हक़ अदा करो, ज़रूरतमन्दों ग़रीबों, और परदेसियों को दान दो और अपने माल को बरबाद मत करो ।’ (१७-२३ से २६)

‘और ग़रीबी के दर से अपनी औलाद को मत मारो । अल्लाह उन्हें और तुम्हें दोनों को खाना देता है । सचमुच अपनी औलाद को मार डालना बहुत बड़ा पाप है ।

‘ज़ना यानी बदचलनी के नज़दीक मत जाओ, सचमुच यह बड़ी ग़न्दी बात है और बड़ा बुरा रास्ता है ।’

“किसी यतीम के माल के नज़दीक भी मत जाओ, सिवाय इसके

कि वह नाबालिग हो और तुम उसकी भलाई के लिए उसके माल की हिकाज़त करना चाहते हो, अपने वादों को हमेशा पूरा करो, सचमुच हर वादे की बाबत तुम से सवाल किया जायगा (कि तुमने उसे पूरा किया या नहीं) ।

“जब किसी का कोई चीज़ नार कर दो तो ठीक ठीक और पूरा नाप कर दो, और जब कोई चीज़ तोलो तो सच्ची तराज़ू और ठीक बाँटों से तोलो, यही नेकी है और इसी में आख़िर में तुम्हारा भला है ।

“जिस बात का तुम नहीं जानते उसके पीछे मत पड़ो (यानी किसी पर ऐसा इलज़ाम मत लगाओ जो तुम नहीं जानते), सचमुच तुम्हारे कानों, तुम्हारी आँखों और तुम्हारे दिल, इन सब से सवाल किये जावेंगे कि इनमें से किस किस ने क्या क्या नेकी की और क्या क्या बदी की ।

“इस दुनिया में अकड़ कर मत चलो, क्योंकि न तुम ज़मीन को फाड़ सकते हो और न पहाड़ जितने ऊँचे हो सकते हो । यह सब बुरी बात है और अस्लाह को नज़रों में गुनाह है । यही वह हिकमत (ज्ञान) है जो तुम्हारे अस्लाह ने (तुम्हारे भले के लिए) तुम पर उतारी है ।” (१७-३१, ३२, ३४ से ३६)

“सिवाय आदमी के क़त्ल के लिए या धरती पर फ़साद खड़ा करने की सज़ा में और किसी भी ब्रह्म से जो कोई भी किसी एक आदमी को जान लेगा वह सब इन्ज़ाना के क़त्ल का गुनहगार होगा, और जो कोई किसी एक को जान बचावेगा उसने मानो सब अदमियों की जान बचाई × × × ” (५-३२)

“लोगों से कहो कि आओ, मैं तुम्हें बताऊँ कि अल्लाह ने तुम्हें किन किन चीज़ों से मना किया है— अल्लाह के साथ किसी दूसरे को शरीक मत करो (किसी और चीज़ की पूजा न करो), अपने माँ बाप की सेवा करो। ग़रीबी के डर से अपनी औलाद को मत मारो, अल्लाह तुम्हें और उन्हें दोनों को रोज़ी देता है, ज़िना या बदचलनी के नज़दीक मत जाओ चाहे ज़ाहिरा खुली बदचलनी हो और चाहे ख़याल या मन के अन्दर की बदचलनी हो, और सिवाय इन्साफ़ की ज़रूरतों के किसी की जान मत लो, यह सब अल्लाह के हुकुम हैं ताकि तुम समझो ।

“और किसी अनाथ यतीम के माल को हाथ मत लगाओ, सिवाय इसके कि तुम उसकी भलाई के लिये, जब तक कि वह बालिग़ न हो, उसके माल की देख भाल करना चाहते हो । जो चीज़ नापो पूरी पूरी नापो और जो तोलो ठीक ठीक तोलो । ईश्वर ने किसी के कोई ऐसा काम सुपुर्द नहीं किया जिसे वह पूरा न कर सके । और जब बोलो सच बोलो चाहे वह बात तुम्हारे किसी रिश्तेदार ही के खिलाफ़ क्यों न हो, और अल्लाह का हुकुम मानो, यही उसका हुकुम है, इसका ख़याल रखो ।

“यही अल्लाह का बताया हुआ रास्ता है, यही सिराते मुस्तक़ीम’ यानी सीधा रास्ता है, इसी पर चलो, इसके खिलाफ़ दूसरे दूसरे रास्तों पर मत चलो, क्योंकि वे तुम्हें अल्लाह के रास्ते से दूर ले जायेंगे, यही अल्लाह का हुकुम है, ताकि तुम बुराई से बच सको ।”
(६-१५२ से १५४)

“सच्चाई को भूठ से मत ढको, और न जो बात तुम्हें सच सच मालूम है उसे छिपाओ ।

“अल्लाह से दुआ मांगते रहो, गरीबों को दान देते रहो, अल्लाह के सामने झुकने वालों के साथ झुको ।

“क्या तुम दूसरों को नेक बनने की तालीम दोगे, कुरान पढ़ोगे और फिर भी खुद अपने को नहीं देखोगे, क्या तुम्हें समझ नहीं है ?

“सब्र और दुआ के ज़रिये अल्लाह से मदद माँगो । सचमुच सिवाय उन लोगों के जो दीनता और नरमी से चलते हैं और यह जानते हैं कि उन्हें अल्लाह के पास लौट कर जाना है, औरों के लिए बड़ी मुशकिल होगी ।” (१-४२ से ४६)

“वेइन्साफ़ी से एक दूसरे का माल मत हड़प जाओ और (कचहरियों में) अपनी दौलत के ज़रिये हाकिम के पास पहुँचने की कोशिश मत करो इस मतलब से कि तुम जानते हुए भी बेईमानी के दूसरों के माल का कोई हिस्सा ले लो ।” (२-१८८)

“अल्लाह के रास्ते में अपनी दौलत खर्च करो, अपने हाथों से अमने को बरबाद न करो, और दूसरों की भलाई करो, सचमुच अल्लाह उन्हीं को प्यार करता है जो दूसरों पर अहसान करते हैं ।” (२-१६५)

“लोग तुमसे नशे की चीज़ों की बाबत और तरह तरह के जुए की बाबत पूछेंगे । उनसे कह दो कि इन दोनों चीज़ों में बड़ा गुनाह है, कुछ लोगों का इनसे नफ़ा भी होता है, लेकिन गुनाह नफ़े से कहीं ज़्यादा है । × × ” (२-२१९)

“शैतान नशे की चीज़ों और जुए के ज़रिये तुम्हें एक दूसरे से लड़ाना और तुममें नफ़रत फैलाना चाहता है, और तुम्हें अल्लाह

की याद से और दुआ माँगने से दूर रखना चाहता है, इसलिये इनसे बचा ।” (५-६१)

“लोगों से प्रेम के साथ बोलना और उनकी गलतियों को माफ़ कर देना ज्यादा अच्छा है इसकी निस्वत कि तुम किसी को दान दो और फिर उसे तकलीफ़ पहुंचाओ । अल्लाह सब के लिए बस है और रहमदिल है । ऐ ईमान वालो, जिसको दान दो उसकी बुराई करके या उसे तकलीफ़ पहुंचा कर अपने दान को निकम्मा न कर लो, उस आदमी की तरह जो दूसरों को दिखाने के लिये दान देता है और अल्लाह पर और उस दिन पर जिसदिन सब को अपने कामों का नतीजा भुगतना पड़ेगा यकीन नही रखता ।” (२-२६३, २६४)

“ऐ ईमान वालो ! अपनी कमाई की अच्छी चीज़ों में से दान दो और उन चीज़ों में से जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए ज़मीन में से पैदा की हैं, बुरी चीज़ो (नाजायज़ कमाई) की तरफ़ इस खयाल से निगाह मत लेजाओ, कि फिर तुम उनमें से दान दे सकोगे × × × ” (२-२६७)

“अगर तुम खुले तौर पर दान दो तो अच्छा है, लेकिन अगर तुम छिपा कर गरीबों को दान दो तो यह तुम्हारे लिये ज्यादा अच्छा है, इससे तुम्हारे कुछ न कुछ बुरे काम कटेगें, जो कुछ तुम करते हो अल्लाह सब जानता है ।” (२-२७१)

“अल्लाह सूद खाने वाले को बरकत नहीं देता × × × ” (२-२७६)

“ऐ ईमान वालो, सूद मत खाओ, दौलत पर दौलत मत बढ़ाते जाओ, अल्लाह के हुकुम का खयाल रक्खो, ताकि तुम्हारा भला हो ।” (३-१२६)

“(किसी से) डाह (हसद) करना बुरी चीज़ है, अल्लाह तुम्हें इस बुराई से बचावे ।” (११३-५)

“तुम किसी तरह भी नेक नहीं हो सकते जब तक कि तुम उन चीज़ों में से खुले दिल से दान न दो जो तुम्हें प्यारी हैं । जो कुछ तुम दान देते हो सचमुच अल्लाह सब जानता है ।” (३-६१)

“जन्नत उन लोगों के लिए है जो अमीरी में और गरीबी में, दोनों में, खुले दिल से दान देते हैं, जो अपने गुस्से को काबू में रखते हैं, और जो दूसरों के क्रूरों को माफ़ कर देते हैं । अल्लाह उन्हीं को प्यार करता है जो दूसरों के साथ नेकी करते हैं ।” (३-१३३)

“जो लोग बेइन्साफ़ी से अनाथों का माल खा जाते हैं, वे सचमुच अपने पेट में आग डालते हैं और जलती हुई आग में ही उन्हें पड़ना पड़ेगा ।” (४-१०)

“अल्लाह चाहता है कि तुम पर दया करो, लेकिन जो लांग अपनी शहवतों (वासनाओं) के पीछे चलते हैं वे चाहते हैं कि तुम अल्लाह से बिल्कुल फिरे रहो ।” (४-२७)

“अल्लाह ने तुम में से किसी को दूसरों से ज्यादा माल दिया है तो तुम उसके माल का लालच मत करो, हर आदमी और हर औरत को उसकी (ईमानदारी की) कमाई ज़रूर मिलेगी, अल्लाह से दुआ करो कि वह तुम्हें बरकत दे, सचमुच अल्लाह सब चीज़ों को जानता है ।” (४-३२)

“अल्लाह की इबादत करो, उसके साथ किसी दूसरे को मत जोड़ो । अपने माँ बाप के साथ, अपने रिश्तेदारों के साथ, यतीमों के

साथ, ज़रूरतमन्दों के साथ, अपने नातेदार पड़ोसी के साथ, अपने ग़ैर नातेदार पड़ोसी के साथ, सफ़र में जिसका भी साथ हो जाय : सके साथ, राह चलतों के साथ, और जो तुम्हारे मातहत हैं उनके साथ, सब के साथ, नेकी करो, और नरमी से बरतो । सचमुच अल्लाह धमएड करने वालों और अपनी बड़ाई हाँकने वालों को प्यार नहीं करता ।” (४-३६)

“ऐ ईमान वालो ! हमेशा इन्साफ़ पर रहो, और अल्लाह के लिए हमेशा सच्ची गवाही दो, चाहे तुम्हारे अपने खिलाफ़ हो, चाहे तुम्हारे मा बाप या तुम्हारे करीबी रिश्तेदारों के खिलाफ़ हो, और न इसमें अमीर या ग़रीब का कोई ख़याल करो $\times \times \times$ ” (४-१३५)

“ऐ ईमान वालो ! ईश्वर के लिए हमेशा सचाई पर रहो, हमेशा इन्साफ़ से गवाही दो, तुम्हें अगर किसी से नफ़रत भी है तो उसकी वजह से किसी के साथ बेइन्साफ़ी न करो, हमेशा सब के साथ इन्साफ़ करो, यह ‘तक्वा’ (परहेज़गारी यानी पाक ज़िन्दगी) के ज़्यादा नज़दीक है, अल्लाह का ख़याल रखो, सचमुच अल्लाह सब जानता है कि तुम क्या करते हो ।” (५-८)

“ऐ ईमान वालो ! जब तक तुम काबे की ज़ियारत (यात्रा) में हो तब तक किसी जानवर का शिकार मत करो $\times \times \times$ ” (५-६५)

“और जब कभी इन लोगो (अरबो) में से किसी के लड़की पैदा हो जाती है तो उसका मुँह काला पड़ जाता है, उसे गुस्ता आता है, वह इसे इतना बुरा समझता है कि लोगों से अपना मुँह छिपाने लगता है, वह सोचने लगता है कि इस लड़की को रखने की बेइज़्ज़ती सहूँ या इसे ज़िन्दा मिट्टी में गाड़ दूँ । सचमुच इस तरह

के खयाल बहुत ही बुरे हैं ।” (१६-५८, ५९)

“सचमुच अल्लाह की रहमत (दया) उन लोगों के बहुत पास है जो दूसरों के साथ नेकी करते हैं ।” (७-५६)

“ऐ ईमान वाले ! इसमें कोई शक नहीं कि बहुत से मज़हबों गुरु और महन्त लोग झूठ मूठ लोगों का माल खा जाते हैं और लोगों को ईश्वर के सच्चे रास्ते से भटकाते हैं । जो लोग भी साना चाँदी जमा करेंगे और उसे अल्लाह का राह में खर्च नहीं कर डालेंगे उन्हें बहुत बड़ी सज़ा मिलेगी ।” (९-३४)

“जो लोग सब करेंगे और नेक काम करेंगे उन्हें अल्लाह से माफ़ी मिलेगी और बहुत बड़ा बदला मिलेगा ।” (११-११)

“सचमुच अल्लाह का हुकुम है कि दूसरों के साथ इत्साक़ करा, और उनके साथ भलाई करा, और अपने पड़ोसियों का दान दान और गन्ने काम न करा, बुरा काम न करा, और एक दूसरे से हिंसा न करा । इन बातों का खयाल रखो × × × उस औरत की तरह काम मत करो जो मज़बूत सूत कातती है और फिर उसे उतका देती है और उसके टुकड़े टुकड़े कर डालती है । लोग अनाथों क्रमों को एक दूसरे का धोका देने का ज़रिया बना लेते हैं चूँकि एक गिराह दूसरे गिराह से तादाद में ज्यादा है । अल्लाह तुम्हें इस से आजमाता है × × × अपनी क्रमों का एक दूसरे का धोका देने का ज़रिया मत बनाओ × × × इसकी सज़ा तुम्हें ज़बरदस्त मिलेगी ।” (१६-६० से ६४)

“धन, दौलत और बाल बच्चे सिर्फ़ इस दुनिया की ज़िन्दगी की सजावट हैं, लेकिन नेक काम हमेशा रहने वाले हैं और तुम्हें अपने

रब्ब से नेक कामों ही का फल ज्यादा अच्छा मिलेगा, नेक कामों ही से तुम्हें (अपने भले की) ज्यादा उम्मीद रखनी चाहिये।”
(१८-४६)

“जो जानवर कुरबान किये जाते हैं उनका गोश्त या उनका खून अल्लाह को नहीं पहुंचता, अल्लाह तुम से सिर्फ तुम्हारा ‘तक़वा’ (बुराई से बचे रहना) क़बूल करता है × × ×” (२२-३७)

“ज़िना (व्यभिचार) करने वाले मर्द या औरत हर एक का सौ कोड़ों की सज़ा देनी चाहिए, इस बात में उन पर रहम खाकर अल्लाह के हुक्म को नहीं तोड़ना चाहिए × × ×” * (२४-२)

“उस रहमान (दयालु ईश्वर) के सच्चे बन्दे वे हैं जो आजज़ी (दीनता) के साथ झुक कर धरती पर चलते हैं, और जब जाहिल लोग उनसे कुछ उलटी सीधी बात कहते हैं तो वे जवाब देते हैं— ‘सलाम’।” (२५-६३)

“लुक्मान ने अपने बेटे से कहा—ऐ बेटा ! अल्लाह से दुआ

* ज़िना के माइने हैं अपनी व्याहता (मनकूदा) वीवी के सिवा किसी दूसरी औरत को बुरी निगाह से देखना । हदीसों में लिखा है कि मुहम्मद साहब के बाद दूसरे खलीफ़ा हज़रत उमर के ज़माने में हज़रत उमर के एक बेटे पर ज़िना का जुर्म साबित हुआ । हज़रत उमर ने ऊपर की आयत के मुताबिक़ उसे सौ कोड़े लगाने का हुक्म दिया । सौ कोड़े पूरे होने के पहले लड़का मर गया । उसे दफ़न कर दिया गया और बाक़ी कांडे उसके बाप हज़रत उमर के हुक्म से उसकी क़ब्र पर लगाये गये, ताकि आयत का कहना पूरा हो जावे ।

मांगते रहो, नेक कामों की तरफ लोगों को लगाते रहो, और बुरे कामों से मना करते रहो, और जो कुछ तुम पर मुसीबत पड़े सब के साथ केलते रहो, सचमुच यह अल्लाह का बड़ा पक्का हुकुम है।

“किसी को छोटा समझकर उसकी तरफ से अपना मुँह मत फेर लो, और न ज़मीन पर बहुत अकड़ कर चलो, सचमुच अल्लाह किसी धमण्ड करने वाले और डींग हाँकने वाले को प्यार नहीं करता।

“दुनिया में चलो फिरो तो नेकी और सच्चाई से रहो और जब दोलो तो धीमी आवाज़ से बोलो, सचमुच गधे की तरह रेंकना अल्लाह को सब से ज़्यादाह नापसन्द है।” (३१-१७ से १६)

“क्या लोग समझते हैं कि वे यह कहने से छोड़ दिए जावेंगे कि ‘हम ईमान लाए हैं’ और उनके कामों की जांच पड़ताल नहीं की जायगी? “क्या जो लोग बुरे काम करते हैं वह समझते हैं कि वह खुदा से बच जायंगे? वह ग़लत सोचते हैं! “जो लोग बात मानेंगे और नेक काम करेंगे सचमुच हम उन्हीं को नेक लोगों में शामिल करेंगे।” (२६-२, ४, ६)

“आदमी को हमारा (अल्लाह का) हुकुम है कि वह अपने माँ बाप के साथ नेकी करे। कितनी तकलीफ़ के साथ उसकी माँ उसे पेट में रखती है, फिर कितनी तकलीफ़ उठाकर उसे पैदा करती है, उसे दूध पिलाती और पालती है। ढाई बरस इस तरह लग जाते हैं। होते होते जब आदमी बड़ा होता है और चालीस बरस का होता है तो खुदा से दुआ माँगता है—‘ऐ खुदा! मुझे इस क़ाबिल बना कि मैं तेरी नेमतों (देन) के लिये, जो तू ने मुझे और मेरे माँ बाप को दी

हैं, तेरा शुक्र अदा कर सकूँ, और मैं नेक काम कर सकूँ जिनसे तू खुश हो, और मेरी औलाद का भला कर, सचमुच मैं तेरा सहारा चाहता हूँ और मैं तेरे हुक्मों के सामने सर झुकाता हूँ।”
(४६-१५)

“ऐ ईमान वालो ! कोई आदमी किसी दूसरे पर न हँसे, मुमकिन है जिस पर वह हँसता है वह उससे अच्छा हो, और न कोई औरत दूसरी औरत पर हँसे, मुमकिन है जिस पर वह हँसती है वह उससे अच्छी हो । एक दूसरे के दोष यानी नुक्स मत निकालो और न एक दूसरे को नाम धरो । ईमान वालों के लिये किसी को भी नाम रखना बुरा है, जो कोई नहीं मानेगा वह अपने ऊपर जुल्म करेगा ।

“ऐ ईमान वालो ! दूसरों पर बहुत शक मत करो, सचमुच कभी कभी शक करना गुनाह होता है । दूसरों के नुक्स ढूँढ़ते मत फिरो, और न पीठ पीछे किसी की बुराई करो । पीठ पीछे बुराई करना ऐसा ही है जैसा अपने मुरदा भाई का माँस खाना । क्या तुममें से कोई इसे पसन्द करेगा ? नहीं, तुम इसे बुरा समझते हो, इसलिए अल्लाह का स्याल रखा सचमुच अल्लाह बार बार तुम्हारी तरफ मुड़नेवाला और दया करनेवाला है ।

“ऐ लोगो ! सचमुच अल्लाह ने तुम्हें औरत और मर्द से पैदा किया है, और तुम्हें खानदानो और कबीलों में इसलिये बाँट दिया है ताकि तुम एक दूसरे को पहचान सको । सचमुच अल्लाह की नज़रो में तुममें सब से ज्यादा इज़्ज़त वाला वही है जो सब से ज्यादा बुराई से बचता है, सचमुच अल्लाह सब कुछ जानता समझता है ।”
(४६-११ से १३)

“ताकि जो तुम्हें नहीं मिला उस पर तुम रंज न करो, और जो कुछ तुम्हें मिला है उस पर फूलो नहीं”, अल्लाह किसी घमण्ड करने वाले और डींग हाँकने वाले को प्यार नहीं करता
(५७-२३)

“जो बुरा काम करता है उसकी अपनी आत्मा (नफ़िसल्लव्वा मह) उसे बुरा कहती है × × ×” (७५-२)

“जब्त उन लोगों के लिए है जो अपने रब्ब से डरते हैं और अपने आपको ग़वाहिशों से रोक कर रखते हैं ।”^२ (७६-४०, ४१)

एक बार अब्दुल्लाह नामी एक गरीब अन्धा मुहम्मद साहब के पास आया और कुछ पूँछने लगा । मुहम्मद साहब उस वक्त कुछ कुरैश के सरदारों से बातचीत कर रहे थे । उन्हें बुरा लगा । उन्होंने उम अन्धे की तरफ से मुँह फेर लिया । इस पर कुरान की नीचे लिखी आयतें उतरतीं—

“तुमने (मुहम्मद साहब ने) नाराज़ होकर पीठ मोड़ ली क्योंकि तुम्हारे पास एक अन्धा आया था । तुम्हें कैसे मालूम हो कि वह अन्धा अपने आप को पाक करेगा, तुम्हारी बात सुनेगा और उससे फ़ायदा उठायेगा ? और जो लोग अपने लिए तुम्हारी ज़रूरत नहीं समझते, उनसे तुम बात करत हो । अगर वे अपने को पाक न करें तो तुम्हारा कोई कुसूर नहीं । लेकिन जो आदमी मेहनत करके

१— न अच्छी चीज़ पाकर बहुत खुश हो और न बुरी चीज़ पाकर बहुत दुखी हो (गीता, ५-२०)

२— इच्छा को रोकना ही तप है — जैन तत्त्वार्थ सूत्र

तुम्हारे पास आता है और अल्लाह से डरता है, क्या तुम उससे मुह मोड़ लोगे ? नहीं ! असली बड़प्पन उसी को मिलना चाहिये ।”
(८०-१ से ११)

“ज्यादाह धन दौलत तुम्हारे दिल को अल्लाह की राह से हटाती है,* यहाँ तक कि मौत तुम्हें आ धरती है, नहीं, तुम्हें जल्दी ही पता चल जावेगा, नहीं, नहीं, तुम्हें जल्दी ही पता चल जावेगा । नहीं, तुम्हें पक्की समझ होती तो तुम्हें अपने कामों का नतीजा नरक दिखाई देता, और तुम्हें उसका यक़ीन हो जाता, आख़ीर में दिन आयागा जब तुमसे ज़रूर पूछा जायगा कि तुमने अल्लाह की दी हुई नेमतों का क्या किया ।” (१०२-१ से ८)

“वे लोग बरबाद हो जायेंगे जो बेईमानी करते हैं । जो जब दूसरों से चीज़ लेते हैं तो पूरा नाप कर लेते हैं, लेकिन जब दूसरों का देते हैं या उनके लिये तोलते हैं तो कम देते हैं ।” (८३—१ से ३)

“अल्लाह ने तराज़ू और नाप तोल इसलिये बनाये हैं कि तुम किसी के साथ बेइन्साफ़ी न करो, सब के साथ इन्साफ़ करो और किसी का हक़ न मारो ।” (५५-७ से ६)

“अल्लाह ने आदमी के लिए दो साफ़ साफ़ रास्ते बता दिये हैं । एक रास्ता दाहने हाथ का है, जो पहाड़ की चढ़ाई की तरह मुश्किल है और दूसरा रास्ता बाएं हाथ का है, जो पहाड़ के उतार की तरह आसान है । लेकिन आदमी चढ़ाई के रास्ते से बचता है । तुम कैसे समझोगे कि यह पहाड़ की चढ़ाई का रास्ता क्या है ! वह रास्ता यह

*सचाई यानी हक़ का मुँह सोने के ढक्कन से ढका हुआ है—
उपनिषद्

है—गुलामों को आज़ाद करना* और भूख के दिनों में अपने रिश्ते-दारों को, यतीमों को और मिट्टी में लोटते हुए गरीब आदमी को खाना देना। जो आदमी ऐसा करता है वही सच्चा मोमिन यानी ईमान वाला है। ऐसे लोग ही एक दूसरे को सन्न करने और दूसरों पर दया करने की सलाह देते हैं। यह लोग ही दाहने हाथ के रास्ते पर चलने वाले हैं। इसके खिलाफ़ जो लोग हमारी बात नहीं मानते वह बाएं हाथ वाले रास्ते पर चलने वाले हैं उनके ऊपर आग पड़ी है।”
(६०—१० से २०)

* गुलामी का रिवाज करीब करीब सब पुराने मुल्कों में था। रोम में यह रिवाज सब से ज्यादा बड़ा और इसने सब से भयानक शकल ली। जितना जुल्म गुलामों पर रोम में होता था, उतना दुनिया में कहीं नहीं हुआ। यूरोप और अमरीका में यह जङ्गलीपन का रिवाज १८ वीं सदी तक जारी था। कुरान ने इस पुराने रिवाज को बहुत कम कर दिया। जंग के कैदियों का जंग क बाद रखा जाना कुरान ने बिल्कुल बन्द कर दिया (४७-४)। और “गुलामों को आज़ाद करना” बहुत सी आयतों में सब से बड़े सवाब यानी पुण्य का काम बताया गया है।
(८०—१३ वगैरह)

मुहम्मद साहब को अपनी जिन्दगी में जितने गुलाम मिले, कुरान के इसी हुकुम के मुताबिक़, उन्होंने सबको उसी वक्त आज़ाद कर दिया—The Holy Quran by Mohammad Ali, p. 1192

“किसी अनाथ पर जुल्म न करो, किसी मांगने वाले पर नाराज़ मत हो और सब को अल्लाह की नेमत (देन) की खुशखबरी दो ।”
(९३-६ से ११)

“ज़माने का हाल देखो ! सचमुच सिवा उन लोगों के जो बात मान लें, और नेक काम करें और एक दूसरे को सच्चाई पर रहने और सन्न करने की सलाह दें बाक़ी सब आदमी घाटे में रहेंगे ।”
(१०३-१ से ३)

“लोगों को सिवा इसके और कुछ हुकुम नहीं दिया गया कि वे पाक दिल से अल्लाह की इबादत करें सच्चे और ईमानदार रहें, अल्लाह से दुआ मांगते रहें, और ग़रीबों को दान दें, यही ‘दीनुलक़य्यमह’ यानी असली और पक्का दीन है
(९८-५)

“क्या तुमने सोचा है कि दान को भूटा ठहराने वाला आदमी कौन है ? दीन को भूटा ठहराने वाला आदमी वह है जो किसी यतीम को सताता है और जो ग़रीबों को खाना देने पर जोर नहीं देता । ऐसे आदमी जब नमाज़ पढ़ते हैं तो उन पर अक्रोश है, क्योंकि वह नमाज़ के असली मतनब की तरफ़ ध्यान नहीं देते । वह सिर्फ़ दिखावा करते हैं और ख़ैरात में इरादा रखते हैं ।”
(१०७-१ से ७)

बुराई का बदला भलाई से दो

“लोगों को आदम के दोनों बेटों का किस्सा सच सच सुना दो ।

इन दोनों लड़कों ने अल्लाह के लिए कुरबानी (उपासना) का पर अल्लाह ने एक को कुरबानी मंजूर की और दूसरे को नहीं की । (बात यह थी) — उनमें से एक ने दूसरे से कहा था 'मैं सचमुच तुम्हें मार डालूंगा ।' दूसरे ने जवाब दिया, — अल्लाह सिर्फ़ उनको कुरबानी मंजूर करता है जो बुराई से बचते हैं । और तुम मुझे कत्ल करने के लिये हाथ बढ़ाओगे तब भी मैं तुम्हें कत्ल करने के लिये तुम्हारी तरफ़ हाथ नहीं बढ़ाऊंगा । सचमुच मैं उस अल्लाह से डरता हूँ जो सब दुनियाओं का रब्र यानी पालने वाला है ।' (अल्लाह ने आदम के इन्हीं दूसरे बेटे की कुरबानी मंजूर की पहले की नहीं ।)" (५-२७, २८)

"(यहूदियों की किताब) तौरत में हम (अल्लाह) ने हुक्म दिया है कि तुम जान के बदले में जान ले सकते हो, आँख के बदले में आँख, नाक के बदले में नाक, कान के बदले में कान, और दाँत के बदले में दाँत; ऐसे ही अगर कोई तुम्हें घायल कर दे तो तुम उसका भी उतना ही बदला ले सकते हो । लेकिन अगर कोई माफ़ कर दे और बदला न ले तो और भी अच्छा है, इससे माफ़ कर देने वालों के पापों का कफ़ारा (प्रायश्चित्त) हो जायगा ।" (५-४५)

कुरबानी शब्द 'कुर्ब' से बना है जिसके माइने 'करीब होना' या 'पास आना' है । संस्कृत 'यज्ञ' शब्द के भी लफ़्ज़ी माइने 'मिलना' है । कुरबानी या यज्ञ उन कामों को कहते थे, जिनसे समझा जाता था कि आदमी ईश्वर के ज्यादा नजदीक पहुँचता है या उससे जा मिलता है । इस तरह कुरबानी, उपासना और यज्ञ तीनों के लफ़्ज़ी माइने एक हैं ।

† ठीक यही बात हज़रत ईसा ने इन्हीं शब्दों में इंज़ील में कही है ।

“× × × अगर तुम कुछ लोगों से इसलिये दुशमनी रखते हो क्योंकि उन्होंने तुम्हें अल्लाह की पाक मसजिद में जाने से रोका,* तो भी उस दुशमनी की वजह से तुम हद से न बढ़ो। एक दूसरे को नेकी करने और बुराई से बचने में ही मदद दो, बुराई करने में और दूसरे को तकलीफ पहुंचाने में किसी को मदद न दो, और अल्लाह से डरो × × ×” (५-२)

“ऐ मुहम्मद ! इन लोगों में से कुछ से तुम्हें हमेशा दगा मिलेगी (यानी एक मर्तबा तुम्हारी बात मानकर भी वे फिर जावेंगे) उन्हें माफ़ कर देना और जाने देना। सचमुच अल्लाह उन्हीं को प्यार करता है जो दूसरों के साथ नेकी और अहसान करते हैं।” (५-१३)

“जो लोग सन्न करते हैं, अपने अल्लाह को झुठ्ठा रखना चाहते हैं, दुआएं मांगते हैं, और जो कुछ ईश्वर ने उन्हें दिया है उसमें से छिपा कर और खुले दान देते हैं, और जो कोई उनके साथ बुराई करता है उसके साथ भलाई करते हैं, उन्हें उस दुनिया में अच्छा घर रहने का मिलेगा।” (१३-२२)

“अगर तुम्हें कोई दुख पहुंचावे तो तुम उससे उतना ही बदला ले सकते हो, जितना उसने तुम्हारे साथ किया। लेकिन अगर तुम सन्न कर जाओ तो सचमुच सन्न करने वालों को सब से अच्छा फल मिलेगा। इसलिए सन्न ही करो। बिना अल्लाह की मदद के तुम

* मक्के के उन लोगों की तरफ़ इशारा है, जिन्होंने मुसलमानों को जबरदस्ती उनके घरों से निकाल दिया था और जिनसे मुसलमानों की जंग बारी थी।

सब्र नहीं कर सकोगे, दूसरों की फ़िक्र मत करो तुम इस फ़िक्र में मत पड़ो कि दूसरे क्या सोच रहे हैं। सचमुच अल्लाह उन्हीं के साथ है जो बुराई से बचते हैं, और दूसरों के साथ भलाई करते हैं।” (१६-१२६ से १२८)।

“बुराई और भलाई बराबर नहीं हो सकतीं। बुराई का बदला भलाई से दो और तुम देखोगे कि जिसे तुमसे दुश्मनी थी वह भी तुम्हारा गहरा दोस्त हो जायगा।

“और अगर किसी शैतान या बुरे आदमी की तरफ़ से तुम्हें कोई नुक़सान पहुँचे तो अल्लाह की पनाह लो, सचमुच अल्लाह सब कुछ सुनता और जानता है।” (४१-३४, ३६)

“कोई तुम्हारे साथ बुराई करे तो उसे उतनी ही सज़ा दे सकते हो जितनी उसने बुराई की, लेकिन जो कोई माफ़ कर देता है और इस तरह माफ़ करके बुराई करने वाले का सुधार करता है उसे अल्लाह से इनाम मिलता है। सचमुच अल्लाह जुल्म करने वालों को प्यार नहीं करता। जिस किसी पर जुल्म किया जावे वह अगर अपना बचाव करे तो उसका कोई कुसूर नहीं। कुसूर उनका है जो लोगों पर जुल्म करते हैं और धरती पर हक़ (इन्साफ़) के खिलाफ़ भगड़े खड़े करते हैं। इस तरह के लोगो को अल्लाह से बड़ी सज़ा भुगतनी पड़ेगी। लेकिन जिस पर जुल्म किया गया वह अगर सब्र कर ले और माफ़ करदे तो सचमुच यह काम वह है जो करने के काबिल है यही इरादा करना चाहिए।” (४२-४० से ४३)

“बुराई का बदला भलाई से दो। अल्लाह ख़ूब जानता है लोग क्या चाहते हैं।” (२३-६६)

कुछ और आयतें

“तुम अल्लाह से कैसे इनकार कर सकते हो ? तुम मर चुके थे और उसने तुम्हें ज़िन्दा किया, वह फिर तुम्हें मुर्दा कर देगा और फिर ज़िन्दा कर देगा, और फिर तुम (आख़िरी में) उसी के पास जाओगे।” (२-२८)

“सचमुच अल्लाह दाने में से और गुठली में से अकुआ फोड़ निकालता है। वह मुर्दा से ज़िन्दा और ज़िन्दा से मुर्दा करता है। ये अल्लाह ही के काम हैं। फिर तुम उससे क्यों फिरे हुए हो ?”
(६-९६)

“अल्लाह ही ने तुम्हें ज़िन्दगी दी है। वही तुम्हें मार देगा। फिर वही तुम्हें फिर ज़िन्दा करेगा। सचमुच आदमी नाशुकरा है।”
(२२-६६)

“ऐ ईमान वालो ! सब करो और अल्लाह से दुआ मांगो, इस तरह अल्लाह से मदद चाहो। सचमुच अल्लाह उन्हीं के साथ है जो सब करते हैं।

“जो लोग अल्लाह की राह में मारे गए उन्हें मरा हुआ मत कहो। नहीं, वह ज़िन्दा हैं, पर तुम उन्हें देख नहीं पाते।

“और इसमें कोई शक नहीं, अल्लाह तुम्हें डर, भूख, प्यास, और जान, माल और फलों के नुक़सान, सबके ज़रिये थोड़ा थोड़ा आज्ञामायगा। लेकिन जो लोग सब से काम लेंगे उन्हें खुशख़बरी दो।

“उन्हें खुशख़बरी दो जिन पर जब भी कोई मुसीबत पड़ती है तो वे कहते हैं...सचमुच हम अल्लाह ही के हैं और इसमें कोई शक

नहीं हमें अल्लाह ही के पास जाना है ।

“ये ही लोग हैं जिनके लिए अल्लाह की बरकतें और उसकी रह-मत है । ये ही ठीक रास्ते पर चलने वाले हैं ।” (२-१५३ से १५७)

“जो लोग ईमान रखते हैं, उनका रखने वाला अल्लाह है, वही उन्हें अंधेरे से निकाल कर उजाले में ले जाता है ।*” (२-२५७)

“इस खुली किताब (कुरान) के ज़रिये अल्लाह उन लोगों को शान्ति का रास्ता दिखाता है जो अल्लाह की मरज़ी पर चलते हैं, अल्लाह अपनी मरज़ी से उन्हें अंधेरे से निकाल कर उजाले में ले जाता है, और उन्हें सीधे रास्ते पर ले चलता है ।” (५-१६)

“अल्लाह ही ने यह किताब (कुरान) तुम्हारे (मुहम्मद साहब के) घट में उतारी है । इसको कुछ आयतें “मुहकमात” यानी पक्के और साफ़ साफ़ हुकुम हैं, वे ही इस किताब की जड़ बुनियाद हैं, बाक़ी आयतें “मुतशाबेहात” यानी तशबीह या मिसाल के तौर पर हैं । जिन लोगों के दिलों में टेढ़ापन है वे कुरान के उसी हिस्से पर चलते हैं जो तशबीह यानी मिसाल के तौर पर कहा गया है । वह उसके ज़रिये फ़ितना (भगड़ा या फूट) खड़ा करना चाहते हैं, और उसका अपना ही मतलब लगाते हैं, लेकिन उसका मतलब सिवा अल्लाह के और कोई नहीं जानता और जो पक्के शानी हैं वे कहते हैं कि हम इसे मानते हैं, यह सब हमारे रब्ब की देन है, दूर की सोचने वाले ही इसकी परवाह करते हैं ।” (३-६)

“सचमुच अल्लाह किसी मच्छर तक की या उससे भी छोटी चीज़ की मिसाल देने में नहीं शरमाता, फिर जो लोग मानते हैं वह

*हमें अंधेरे से उजाले में ले चल—उपनिषद्

समझाते हैं कि यह उनके रब्ब की तरफ़ से सच्चाई है, और जो नहीं मानते वह कहते हैं—‘अल्लाह का इस मिसाल से क्या मतलब है ? इससे बहुत से ग़लत रास्ते पर पड़ जायेंगे और बहुत से ठीक रास्ते पर ।’ लेकिन सिवाय बदी करनेवालों के कोई इससे ग़लत रास्ते पर नहीं पड़ सकता ।” (२-२६)

“और ‘अहले किताब’ में से यानी उन लोगों में से जिनके पास मज़हबी किताबें हैं कुछ तो ऐसे हैं कि अगर तुम दौलत का एक ढेर भी उनमें से किसी के सुपुर्द कर दो तो वह तुम्हें वापिस कर देंगे । और उन्हींमें से कुछ ऐसे भी हैं कि अगर तुम उनमें से किसी के एक दीनार (एक सिक्का) सुपुर्द कर दो तो जब तक तुम वापिस लेने पर डट ही न जाओ वह कभी वापिस न करेंगे, इस तरह के लोग कहते हैं कि उन लोगों के साथ जिनके पास इलहामी किताबें नहीं हैं हम अगर वादा करके पूरा न करें तो हम पर (अल्लाह की तरफ़ से) कोई इलज़ाम नहीं ।’ ऐसा कहने वाले जान बूझ कर अल्लाह के ख़िलाफ़ झूठ बोलते हैं ।

“नहीं, जो कोई अपने वादे को पूरा करता है और बुराई से बचता है, अल्लाह सचमुच उसीको प्यार करता है ।” (३-७४, ७५)

“जो लोग अल्लाह की राह में मारे जाते हैं, उन्हें मरा मत समझो । नहीं, वह ज़िन्दा हैं, और उनका रब्ब उन्हें रोज़ी देता है ।” (३-१६८)

“.....और इस दुनिया की ज़िन्दगी सिवाय झूठे धन (मताउल ग़रूर) यानी माया के और कुछ नहीं है ।” (३-१८४)

‘अफ़सोस है हर ऐसे आदमी पर जो किसी दूसरे की बुराई करता

है, किसी को बदनाम करता है,

“जो दौलत जमा करता है और समझता है कि वह उसके काम आयगी,

“वह समझता है कि उसकी दौलत उसे क़ायम रखेगी,

“नहीं, वह सचमुच बहुत बड़ी आफ़त में पड़ेगा,

“और तुम कैसे समझोगे कि वह बड़ी आफ़त क्या है ?

“वह अल्लाह की सुलगाई हुई आग है,

“जो (पड़तावे की शकल में) आदमियों के दिलों के ऊपर जलती है,

“सचमुच यह आग बड़े बड़े खम्भों की शकल में (यानी ऐसी ऐसी बेचैन कर देने वाली ख़्वाहिशों की शकल में जो कभी पूरी नहीं हो सकती उन्हें घेर लेगी ।” (१०४-१ से १)

“कह दो कि मेरे रब्ब ने सिर्फ़ गन्दी बातों (बदचलनी) को मना किया है, खुली हुई गन्दी बातों को भी और छिपी हुई गन्दी बातों को भी, और पाप करने को मना किया है, और हक़ या इनसाफ़ के ख़िलाफ़ बग़ावत करने को मना किया है, और इस बात को मना किया है कि तुम अल्लाह के साथ किसी दूसरे को जोड़ो जिसका तुम्हें कोई हक़ नहीं दिया गया, और अल्लाह की बाबत ऐसी बात कहा जिसे तुम नहीं जानते ।” (७-३३)

“सचमुच, अल्लाह की रहमत (उसकी दया) उन लोगों के नज़दीक है जो दूसरों के साथ नेकी करते हैं ।” (७-५६)

“अल्लाह ने अपनी नियामतें यानी दुनिया की अच्छी चीज़ें कभी किसी क़ौम से नहीं छीनीं, जब तक कि उस क़ौम ने आप अपनी

हालत को नहीं बदल दिया, क्योंकि अल्लाह सब सुनता जानता है ।” (८-३५)

“अल्लाह किसी क़ौम का हालत की नहीं बदलता. जब तक कि वह क़ौम खुद अपनी हालत को नहीं बदलती ।” (१३-११)

“और जब कभी ईश्वर ने किसी बसती के लोगों को उनके पापों से आगाह करने के लिए उनमें कोई रसूल भेजा है तो वहाँ के ऐश में डूबे हुए लोग यही कहते हैं कि हम तुम्हारी बात हरगिज़ नहीं मानते ।

“वह कहते हैं, हमारे पास बहुत दौलत और बाल बच्चे हैं हमें कोई सज़ा नहीं देगा ।

“कह दो, मेरा रब्ब जिसे चाहता है बहुत देता है और जिसे चाहता है कम कर देता है, लेकिन बहुत से लोग नहीं समझते ।

“न तुम्हारी दौलत तुम्हें अल्लाह के नज़दीक ला सकती है और न तुम्हारे बाल बच्चे । अल्लाह के नज़दीक वही जा सकता है जो बात मान ले और नेक काम करे ।” (३४-३४ से ३७)

“जो कोई दूसरी दुनिया (परलोक, में भलाई चाहता है, अल्लाह उसे वही ज़्यादा देता है, और जो कोई इस दुनिया का सुख चाहता है उसे वही मिलता है, उसे फिर दूसरी दुनिया का सुख नसीब नहीं होता ।” (४२-२०)

“लेकिन ऐ मुहम्मद ! अगर लोग तुमसे मुंह फेर ले तो हमने (अल्लाह ने) तुम्हें उनके ऊपर चौकीदार (हफ़ीज़) बनाकर नहीं भेजा है । तुम्हारा काम सिर्फ़ अपना पैग़ाम (संदेश) सुना देना है ।” (४२-४८)

“समझो कि इस दुनिया की ज़िन्दगी क्या है— खेल, कूद, तमाशा,

दूसरों के सामने बड़ हांकना और धन दौलत और बाल बच्चों के बढ़ाने में एक दूसरे से बाज़ी ले जाने की कोशिश करना, यही बस इस दुनिया की ज़िन्दगी है। यह उस बारिश की तरह (थोड़ी देर की) है जिससे हरियाली उगी, किसान खुश हुआ, फिर वह हरियाली मुरझाई पीली पड़ी, सूखी और टूट गई। और दूसरी दुनिया (परलोक) में (बुरे कामों की) सज़ा भी है, और अल्लाह से माफ़ी भी है और अल्लाह की खुशी भी और इस दुनिया की ज़िन्दगी, सिवा धोखे (माया) के और कुछ नहीं।” (५७-२०)

“ऐ ईमान वाले ! सचमुच तुम में से कुछ के लिए बीबी और बच्चे तुम्हारे दुश्मन हैं, इसलिए खबरदार रहो, और अगर तुम दूसरों को माफ़ कर दो, और बरदाश्त कर लो, और जाने दो तो सचमुच अल्लाह भी माफ़ कर देने वाला और दयावान है।

“तुम्हारा माल असबाब और बाल बच्चे सिर्फ़ तुम्हें परखने की चीज़ें हैं, और अल्लाह के पास बहुत बड़ा इनाम है।” (६४-१४, १५)

“सचमुच हर मुश्किल के साथ आसान है।” (६४-५)

“ऐ ईमान वाले ! अल्लाह का खयाल रखो, और उसके रसूल का कहना मानो। अल्लाह तुम पर दो तरह की दया करेगा। एक तुम्हारे अन्दर रोशनी (नूर) देगा जिसके उजाले में तुम चल सको,* और दूसरे तुम्हें माफ़ कर देगा। अल्लाह माफ़ कर देने वाला और दयावान है।” (५७-२८)

छ रँग महल में दोप बरता है, आसन से मत डोल, री, तोड़े राम मिलेंगे—कबीर।

‘सचमुच उसी आदमी का भला होगा जो अपनी आत्मा को पाक करेगा ।

‘जो अपने रब्ब को याद करेगा और उससे दुआ मागेगा,

‘नहीं तुम इस दुनिया की ज़िन्दगी को पसन्द करते हो !

‘पर उस दुनिया की ज़िन्दगी ज़्यादाह अच्छी और ज़्यादाह टिकाऊ है ।

सचमुच यही बात इससे पहले की किताबों में कही गई है ।”
(८७-१४ से ८)

“ऐ नफ़सेमुतमइन्ना ! यानी ऐ शान्त और सन्तुष्ट आत्मा वाली !

“अपने रब्ब से खुश और रब्ब तुम से खुश, उस अपने रब्ब ही के पास लौट जाओ ।” (८६-२७, २८)

“उस अल्लाह के नाम से जो रहमान और रहीम है,

“सूरज और उसकी रोशनी का ख्याल करो,

“और चाँद का जो सूरज से रोशनी लेता है,

“और दिन का जब वह दुनिया को नज़र के सामने खोल देता है

“और रात का जब वह दुनिया पर परदा डाल देती है,

“और आसमान और उसकी बनावट का,

“और ज़मीन और उसके फैलाव का,

“और नफ़स (आत्मा) और उसके कमाल (पूर्णता) का,

“उसी अल्लाह ने हर आत्मा के अन्दर यह बात पैदा की कि वह समझे बुराई क्या है और बुराई से बचना क्या है,

“सचमुच उसी आदमी का भला होगा जो अपनी आत्मा को पाक करेगा,

और वह सचमुच घाटे में रहेगा जो अपनी आत्मा को गंदा करेगा ।” (६१-१ से १०)

निचोड़

आखिर में हम थोड़े से में कुरान के बुनियादी उसूल और उसकी तालीम का निचोड़ दे देना चाहते हैं । कुरान के बुनियादी उसूल ये हैं—

(१) “अल्लाह एक है ।” उसकी कोई शकल सूरत नहीं है । “वह सब दुनियाओं का मालिक” और “सब को उनके कामों का फल देनेवाला” है । उस एक अल्लाह के सिवाय किसी दूसरे को पूजा नहीं करनी चाहिए ।

(२) सब आदमी उसी एक ईश्वर के बन्दे और आपस में भाई भाई हैं । “आदमियों में सबसे बढ़कर इज्जत के क़ाविल वह है जो बुराई से बचे और नेकी के कामों में लगा रहे ।”

(३) दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों का निकास उसी एक अल्लाह से है । इन सब मज़हबों के क़ायम करने वालों को एक तरह ही उसी अल्लाह से रोशनी मिली है । इसलिये ये सब धर्म सच्चे हैं और जड़ में “सब धर्म एक हैं ।”

(४) अलग अलग मज़हबों में सिर्फ अपने अपने ज़माने मुल्क और हालत के फ़रक से रात रिवाज और पूजा इबादत के तरीक़ों में फ़रक है, बुनियादी उसूलों में फ़रक नहीं । भगड़े की वजह यह हो जाती है कि लोग अपने अपने मज़हबों के इन बुनियादी उसूलों से हट जाते हैं और नेकी और भलाई के कामों

की जगह “शरअ और मिनहाज को यानी रीत रिवाज और पूजा के तरीकों को ज्यादा जरूरी समझने लगते हैं।

(५) “असली चीज यह नहीं है कि आदमी पूजा इबादत के वक्त पूरब को मुँह करे या पच्छिम को । असली चीज यह है कि आदमी एक अल्लाह को माने और नेक काम करे ।” कुरान में नमाज़ और रोज़े दोनों का हुकुम है । लेकिन न नमाज़ का कोई एक खास ढंग मुकर्रर किया गया और न रोज़े का कोई खास कड़ा क़ानून । नमाज़ और रोज़े, दोनों की गरज़ यही बताई गई है कि “आदमी बुराई से बचा रहे और नेक काम करे ।” “जो आदमी भी एक अल्लाह को माने और नेक काम करे, वह चाहे किसी भी खास धर्म का मानने वाला हो, उसे न कोई डर है न कोई शर्म ।”

(६) किसी भी क़ौम या मुल्क में जब लोग मज़हब के बुनियादी उसूलों से हट जाते हैं तो अल्लाह उनमें कोई न कोई, रसूल या पैग़म्बर भेजकर उसके ज़ोरसे उनमें “सच्चे दीन को फिर से क़ायम” करता है और लोगों को ठीक राह पर लाता है । इस तरह के पैग़म्बर” सब क़ौमों, सब ज़मानों और सब मुल्कों में होते रहे हैं ।

(७) अलग अलग मज़हबों के क़ायम करने वालों या “अलग अलग मुल्कों और क़ौमों के पैग़म्बरों में फ़रक़ करना यानी उनमें से किसी को मानना और किसी को न मानना गुनाह है ।”

(८) “कुरान अपने से पहिले की सब इलहामी यानी

ईश्वरी किताबों की तसदीक करता है” यानी उन्हें सच्चा ठहराता है, और मुहम्मद साहब अपने से पहिले के “सब पैगम्बरों की मुहर” यानी उन सब की तसदीक करने वाले हैं।

(६) गीता की तरह कुरान भी खास खास हालतों में अगर दूसरे हमला करें तो अपने धर्म के बचाव के लिए हथियार उठाने की इजाजत देता है, लेकिन अगर दुश्मन “हट जावे और तुम से न लड़े या सुलह करना चाहे तो फिर अल्लाह तुम्हे उनसे लड़ने की इजाजत नहीं देता।” कुरान का उसूल है कि “मजहब के मामले में किसी के साथ किसी तरह की भी जबरदस्ती नहीं होनी चाहिए।” हर मामले में कुरान का यह भी साफ हुकुम है कि “अगर आदमा दूसरों के सब कुसूरों को माफ कर दे, सब के साथ बर्दाश्त करले और बुराई का बदला भलाई से दे, तो उसके लिए ज्यादा अच्छा है,” “क्योंकि अल्लाह भी सब को माफ कर देने वाला और सब पर दया करने वाला है,” “सचमुच अल्लाह उन्हें ही प्यार करता है जो दूसरों के साथ नेकी करते हैं।”

दूसरे शब्दों में कुरान के अन्दर बार बार दो बातें बताई गई हैं। एक “ईमान” यानी विश्वास और दूसरे “नेक अमल” यानी नेक काम। ईमान का मतलब यह है कि हर आदमी “एक अल्लाह पर और उसके भेजे हुए सब मुल्कों और कौमों के सब पैगम्बरों या रसूलों पर, सब ईश्वरी किताबों पर, अपने अन्दर के नेक रूखानों (अच्छी प्रवृत्तियों) और मरने के बाद की ज़िन्दगी”—इन सब पर यक़ीन करे। नेक अमल का मतलब

यह बताया गया है कि आदमी अपने 'नफ्स' को काबू में रखे और अपने "जिस्म से, माल से और दिल से सब के साथ नेकी करे।"

सच यह है कि जहाँ तक कुरान के बुनियादी उसूलों की बात है, दुनिया की और सब बड़ी बड़ी मजहबी किताबों की तरह भी कुरान सब मुल्मों, सब कौमों, और सब आदमियों की एक बराबर बपौती है, और किसी भी सच्चे खोजी को धर्म और रूहानी तरक्की का ठीक ठीक रास्ता दिखाने के लिए काफी है। प्रेम और ध्यान से देखने से मालूम होता है कि कुरान उसी मजहबे इन्सानियत, उसी मानव धर्म, की तालीम देता है जो सारी दुनिया के लिये बराबर है और जो सब मजहबों का जौहर है। उस ही हिन्दू सन्तों ने "प्रेम धर्म," और मुसलमान सूफियों ने "मजहबे इश्क" कहा है।

कुछ और

औरतों के बारे में

औरतों और मरदों के एक दूसरे के साथ बर्ताव के बारे में कुरान में जगह जगह तरह तरह की हिदायतें हैं। इन हिदायतों से उस ज़माने के अरबों के रिवाजों और आदतों में बहुत बड़ा सुधार हुआ और वह अपने को बुराईयों से बचाकर पाक ज़िन्दगी बसर करने की तरफ चलने लगे। जिस तरह हिन्दुओं की 'नारद स्मृति' में लिखा है—“स्त्रियाः क्षेत्रं बीजिनो नराः”, यानी औरतें खेत हैं और मर्द उनमें बीज डालने वाले हैं, उसी तरह कुरान में औरतों की मिसाल खेती की ज़मीन के साथ दी गई है (२-२२३)। मुराद यह है कि औरत का काम आदमी की खाहिश (वासना) को पूरा करना नहीं है बल्कि उसकी नसल को चल्ताना और बच्चों को पालना है।

मुहम्मद साहब से पहले अरब में औरतों के किसी तरह के कोई हक नहीं थे, न उन्हें बाप दादा की जायदाद का कोई हिस्सा मिलता था। उनका दरजा कुछ कुछ जानवरों या माल असबाब की सा माना जाता था।* कुरान ने हुक्म दिया कि “जिस तरह मर्द के औरत पर हक हैं उसी तरह

* कुरान अज़रेज़ी तरज़मा—मौलवी मुहम्मद अली सफ़ा, १०५।

औरत के मर्द पर हक हैं।” (२-२२८) “औरतें मर्दों के लिये और मर्द औरतों के लिये, दोनों एक दूसरे के लिए लिदास यानी एक दूसरे की शोभा हैं।” (२-१८७)

कुरान में बार बार औरतों के साथ अच्छा बरताव करने का, इनभाऊ करने का और उनके माल-धन की हिफाजत करने का हुकुम है। मर्द को कोई हक नहीं कि औरत का जो अनग धन हो उसे उससे ले या “जो मर्द उसे दे चुका हो उसे फिर उससे वापस ले” (२-२२६)।

कुरान से पहले औरत को अपने बाप, भाई, खाविन्द या किसी के भी मरने पर उसकी जायदाद से किसी तरह का हिस्सा न मिलता था। कुरान ने हुकुम दिया—

“माँ बाप या पास के रिश्तेदार जो कुछ छोड़ जावे उसमें से एक हिस्सा मरदो को मिलेगा और एक हिस्सा औरतों को, चाहे कुल जायदाद कम हो या ज्यादाह। सब का हिस्सा तय है।” (४-७)

छोटे बच्चों को भी माँ बाप या किसी रिश्तेदार के मरने पर पहले कुछ न मिलता था। अरबों का पुराना कानून था— “किसी भी ऐस आदमी को जो दूसरे पर हमला करने में भाले को अच्छी तरह काम में लाना न जानता हो किसी जायदाद से कोई हिस्सा न मिलेगा।”* जिन लोगों को रात दिन एक दूसरे से लड़ना पड़ता था उनमें इस तरह का कानून कुदरती था। कुरान ने आगे के लिए मर्दों, औरतों और बच्चों, सब के अलग अलग हिस्से तय कर दिये। (४-११; ४-१७)

शादी के लिए अरबों में इससे पहले कोई खास रिश्ता मना न था। यहाँ तक कि बाप के मरने पर उसकी बीवियाँ उसके बेटे की मिल्कीयत समझी जाती थीं। कुरान ने इस पुराने गन्द रिवाज को हमेशा के लिए बन्द करके तय कर दिया कि किन किन रिश्तेदारियों में शादी करना मना है। (४-१६, २३)

सिवा अपनी व्याहता औरत के किसी दूसरी औरत के साथ चाहे वह गुलाम हो या कोई भी हो औरत-मर्द का बर्ताव कुरान ने हमेशा के लिए नाजायज़ और पाप ठहरा दिया (४-२५ वगैरह)।

“ईश्वर चाहता है कि तुम पर दया करो, पर जो लोग अपनी स्वाहिशों और वासनाओं के पीछे चलते हैं वे चाहते हैं कि तुम ईश्वर से बिल्कुल फिरे रहो।” (४-२७)

हर औरत को जायज़ तरीकों से धन कमाने का और अपने धन की खुद मालिक होने का पूरा हक दिया गया।

“अल्लाह ने अगर तुम में से किसी को दूसरे से ज्यादा दिया है तो उसका लालच मत करो। जो कोई आदमी जो कुछ कमायगा वह उसी का माल होगा और जो कोई औरत जो कुछ कमायगी वह उसी का होगा। अल्लाह से दुआ मांगो कि वह तुम्हें अपनी नियामतें दे। सचमुच अल्लाह सब जानता है।” (४-३२)

फिर भी औरतों और बच्चों के रहने खाने पीने का बन्दोबस्त करना मर्द का फर्ज बताया गया है। और मां का फर्ज बताया गया है कि पूरे दो साल तक बच्चे को दूध पिलावे। (२-२३३; ४-२४)

अगर मर्द औरत में कोई झगड़ा हो तो कुरान का हुकुम है कि 'एक पंच मर्द की तरफ से और एक पञ्च बीबी की तरफ से बैठकर दोनों में सुलह करा दे, क्योंकि अल्लाह मेल में मदद देता है।' (४-३५)। और 'फिर से मेल कर लेना बहुत अच्छी बात है।' (४-२८)। इस पर भी अगर किसी तरह दोनों में न बने तो कुरान खास हालातों में और कड़ी शर्तों के साथ तलाक की यानी छोड़-छुट्टी की भी इजाजत देता है। लेकिन किसी ऐसी औरत को तलाक नहीं दिया जा सकता जिसके पेट में बच्चा हो (६५-५)। तलाक दी हुई औरत के लिए उसके गुजर बसर का ठीक ठाक कर देना तलाक देने वाले आदमी का फर्ज है (२-२४१)। 'मर्द का फर्ज है कि औरत को इनसाफ और नेकी के साथ रखे और जब किसी तरह न बन सके तो प्रेम के साथ और खुले दिल में अलग करे।' (२-२२१ वैगारह)। साथ ही औरत को तलाक माँगने का उतना ही हक है जितना मर्द को। लेकिन तलाक की इजाजत होते हुए भी मुहम्मद साहब की एक बड़ी मशहूर हदीस है—

'जितनी बातों की आदमी को इजाजत दी गई है, उन सबमें अल्लाह को सबसे ज्यादा नफरत तलाक से है।' (अबु दाउद)

दोनों में से किसी एक के मर जाने पर मर्द या औरत दोनों को दूसरी शादी करने की एक बराबर इजाजत कुरान में है। (५-२३४)।

कुरान में मर्द को एक से ज्यादा, और बहुत से बहुत चार तक शादी करने की भी इजाजत है। लेकिन जिस आयत में यह

इजाज़त दी गई है वह ओहद की मशहूर लड़ाई के ठीक बाद की है। उस वक्त बहुत से मुसलमान मर्द लड़ाई में मर चुके थे। बेवाओं और यतीमों की तादाद बढ़ी हुई थी। बेवाओं के लिए अपने यतीम बच्चों को पाल सकना बहुत मुश्किल हो रहा था। उन सब के गुज़र बसर का कोई न कोई ठीक बन्दोबस्त करना ज़रूरी था। देश में औरतें ज्यादा थीं और मर्द कम। आगे भी इसी तरह की लड़ाइयां होने वाली थीं। इन हालातों में जो आयत उतरा वह यह है—

“और अगर तुम्हें यह डर है कि तुम इनके बिना यतीमों के साथ इनसाफ़ (यानी उनकी परवरिश) नहीं कर सकते, तो जो औरतें तुम्हें ठीक जंचें उनमें से दो के साथ या तीन के साथ या चार के साथ शादी कर सकते हो। लेकिन अगर तुम्हें यह डर है कि तुम अपनी इन सब बीवियों के साथ एक सा इनसाफ़ का बरताव नहीं कर सकोगे तो सिर्फ़ एक के साथ शादी करो, या जिनसे अब तक कर चुके सिर्फ़ एक से शादी करना तुम्हारे लिये ज्यादा ठीक है, ताकि तुम दीन यानी धर्म के सीधे रास्ते से न ढिगो।” (४-३)

एक और जगह लिखा है—

“और अगर तुम चाहो भी तो यह तुम्हारी ताक़त से बाहर है कि कई बीवियों के साथ एक सा इनसाफ़ का बरताव कर सको।” (४-१२६)

इस तरह अरब की एक खास हालत में ज्यादा से ज्यादा चार शादियों की इजाज़त देते हुए भी कुरान एक मर्द के लिये एक औरत के रिवाज को ही ठीक कहता है।

कुरान में बदचलनी को मर्द और औरत दोनों के लिए सख्त गुनाह बताया गया है। बदचलनी की सजा यह है कि कुसूरवार को सबके सामने १०० कोड़े लगाये जावें। पाक मुसलमानों के लिये बदचलनी करने वाले मर्द या औरत से शादी करना मना किया गया है। साथ ही किसी औरत पर बदचलनी का झूठा इल्जाम लगाने की सजा ८० कोड़े त्विखी है (२४-१ से ४) ईश्वर से यह दुआ मांगने का हुकुम दिया गया है कि वह आदमी को शैतान के फन्दे, गन्दी बातों और बदचलनी से बचावे और उसकी जिन्दगी को पाक रखे (२४-२१ वगैरह)। पाक जीवन यानी नेक चलनी को कुआरे और शादी हुये लोगों, मालिकों और गुलामों सबके लिये जरूरी बताया गया है (२६-३५, ३३)

कुरान की जिन आयतों से परदे की बाबत हां या नहीं का कोई हुकुम निकल सकता है, वे ये हैं—

“ऐ नबी ! अपनी बीवियों और अपनी लड़कियों और मुसलमान औरतों से कह दो कि चादरें ओढ़ लिया करें। यह ज्यादाह मुनासिब होगा। ताकि वे पहचानी जा सकें और कोई उन्हें तकलीफ न दे, और अल्लाह माफ़ कर देने वाला और दयावान है।” (३३-५९)

“ऐ मुहम्मद ! जो मर्द तुम्हारी बात पर ईमान ले आए हैं उनसे (यानी मुसलमान मर्दों से) कह दो कि (आते जाते) अपना आँखों को नीची रखें और शर्म से काम लें, इससे उनका जीवन ज्यादाह पाक रह सकेगा। सचमुच जो कुछ वे करते हैं ईश्वर सब जानता है।

“और जो औरतें तुम्हारी बात पर ईमान ले आई हैं उनसे कह दो (कि आते जाते) अपनी आँखों को नीची रखें, और शर्म से

काम लें, और अपनी सजावट (गहने वगैरह) का दिखावा न करें, सिवा इन सजावटों के जो ऊपर दिखाई देती हैं, और अपनी छातियों पर ओढ़नी डाल लिया करें, और सिवा अपने स्वाविन्द, बाप, स्वाविन्द के १५, बेटों, स्वाविन्द के बेटों, भाइयों, भाई के बेटों, बहन के बेटों, या औरतों, या नौकरों या खोजा मर्द नौकरों, या छोटे मासूम बच्चों के और किसी के सामने अपनी सजावटों का दिखावा न करें। और पैर को इस तरह धरती पर पटक कर न चलें कि जो गहने वगैरह उन्होंने छिपाए हैं वह ज़ाहिर हो जावें, और ऐ ईमान वालो तुम सब अल्लाह की पनाह लो, ताकि तुम्हाग भला हो।” (२४-३०, ३१)

इस तरह कुरान में निगाह नीची रखने और शर्म से काम लेने का मर्द और औरत दोनों का एक सा हुकुम है। औरतों को यह भी हुकुम है कि अपनी सजावट की चीज़ों का दिखावा न करें। लेकिन कुरान के मुताबिक न औरतों का घरों की चार-दीवारी में बन्द रहना जरूरी है और न मुँह और हाथ यानी उन हिस्सों को ढकना जरूरी है जो मामूली काम काज, चलने फिरने में “ऊपर दिखाई देते हैं।”

अच्छे कामों के बदले में जन्नत और निजात (मोक्ष) का वादा कुरान में औरतों और मर्दों दोनों के लिए बारबार किया गया है। (२-१८४; ४-१२४:६-७; १६-६७)

“सचमुच जिन मर्दों ने अपने को अल्लाह की मरज़ी पर छोड़ दिया है और जिन औरतों ने अपने को अल्लाह की मरज़ी पर छोड़ दिया है, जो मर्द ईमान लाए हैं और जो औरतें ईमान लाई हैं, जो

मर्द अल्लाह का हुकुम मानते हैं और जो औरतें अल्लाह का हुकुम मानती हैं, जो मर्द सच्चे हैं और जो औरतें सच्ची हैं, जो मर्द सब करते हैं और जो औरतें सब करती हैं, जो मर्द आज्ञा (दीनता) से काम करते हैं और जो औरतें दीनता से काम करती हैं, जो मर्द दान देते हैं और जो औरतें देती हैं, जो मर्द रोज़े रखते हैं और जो औरतें रोज़े रखती हैं, जो मर्द अपनी ख्वाहिश (काम वासना) को क़ाबू में रखते हैं और जो औरतें अपनी ख्वाहिश को क़ाबू में रखती हैं, जो मर्द अल्लाह को बहुत बहुत याद करते हैं और जो औरतें अल्लाह को बहुत बहुत याद करती हैं,—अल्लाह ने उन सब के लिए माफ़ और बहुत बड़ा इनाम तय्यार कर रखा है।” (३३-३५)

जिहाद

‘जिहाद’ शब्द कुरान में अलग अलग शक्तियों में जगह जगह आया है। ‘जिहाद’ के आमतौर पर माइने यह हैं—
“किसी ऐसी चीज़ के साथ जो ठीक न हो अपनी हृद दर्जे की ताकत लगाकर उसे ठीक करने की कोशिश करना,”^१ यानी किसी भी काम में “जहां जेहद करना यानी सख्त कोशिश करना।”^२

कुरान में जगह जगह ‘जिहाद का सबीलल्लाह’ आया है, जिसके माइने हैं ‘अल्लाह की राह में कोशिश करना।’ इसलाम के शुरू व दिनों में कुरैश के जुल्मों से अपनी जानें और अपने

१—सु. फ़दात इमाम राशिद, ताज-उल-अरूस।

२—ग़रीब ल कुरान—मिर्ज़ा अब ल फ़ख़्ख।

धर्म को बचाने के लिए जो मुसलमान अपने बतन मक्के से भाग कर हबशा यानी इथियोपिया चले गये थे, उनके इस काम को कुरान में 'अल्लाह की राह में अपनी जान और अपने माल से जेहाद करना' कहा गया है (८-७२, ७४, ७५) ।

इस जिहाद का किसी क्रिस्म के भी हथियारों या लड़ाई से कोई वास्ता नहीं । उस वक्त तक मुसलमानों को जंग की इजाजत भी नहीं दी गई थी । बल्कि मुसलमानों को हुकुम था कि वह अपने दुश्मनों के जुल्मों को बिना किसी क्रिस्म का बदला लिये शान्ति और सब के साथ बर्दाश्त करें और जहां तक बन पड़े "बुराई का बदला भलाई से दें ।"

कुरान में खुद मुहम्मद साहब को अल्लाह ने कई जगह हुकुम दिया है कि जिन लोगों ने अभी तक तुम्हारी बात नहीं मानी या जो मुसलमान हो चुके थे और फिर भी सच्चे और साफ दिल से तुम्हारा साथ नहीं दे रहे हैं, उन सबके साथ 'जिहाद' जारी रखो यानी प्रेम के साथ उन्हें समझाने बुझाने की कोशिश में ढील न आने दो (६-७३; ६६-६) । यहाँ भी जिहाद शब्द से किसी क्रिस्म का कोई वास्ता हथियार बन्द लड़ाई से नहीं है । खास कर उन मुसलमानों के खिलाफ जिनका इन आयतों में जिक्र है, न कभी किसी को हथियार उठाने की इजाजत दी गई और न कभी किसी ने हथियार उठाए ।

इन आयतों के बारे में मौलवी मुहम्मदअली ने कुरान के अंगरेजी तरजुमें The Holy Quran में लिखा है—

"यहाँ 'जिहाद' के माइने 'तलवार की लड़ाई' करना अरबी

जबान से बिल्कुल नावाक़फ़ियत जाहिर करना है।”

ऐसे ही २५ वीं सूरात की ५२ वीं आयत में मुहम्मद साहब से कहा गया है कि—“लोगों के साथ कुरान के जरिये ‘जिहाद कबीर’ यानी जबर्दस्त जिहाद करो,” जिसका मतलब यह है कि ‘अपनी पूरी ताक़त के साथ उनमें कुरान की तालीम फैलाओ और उन्हें समझाओ। इस पर मौलवी मुहम्मद अली ने लिखा है कि—

“इस आयत से साफ़ साबित हो जाता है कि जिहाद शब्द कुरान पाक में किन मानों में इस्तेमाल किया गया है। यह मानी हुई बात है कि यह सूरात मक्के के ज़माने की है और इसका जंग से कोई वास्ता नहीं है। इस आयत के मुताबिक़ सच्चाई का प्रचार करने की जो भी कोशिश की जाय वह सिर्फ़ जिहाद ही नहीं बल्कि ‘कबीर’ यानी ‘बड़ा जिहाद’ है।” कुरान के सब टीका करने वाले जैसे बंज़ावी, इमाम असीरुद्दीन, अबु हय्यान वग़ैरह इस आयत में जिहाद शब्द के यही माने करते हैं।”

जो लोग अपने दुशमनों के जुल्म से बचने के लिए भाग कर किसी दूसरी जगह चले जावें पर सच्चाई को न छोड़ें और सब के साथ अपने धर्म पर जमे रहें, उनके इस काम को भी कुरान में बार बार जिहाद कहा गया है (१६-११०)। इसी तरह दान देना, ग़रीबों और यतीमों को पालना, दूसरों की मदद करना, मुसीबतें सहना इन सब को ‘अल्लाह की राह में जिहाद’ बताया गया है। मुहम्मद साहब की एक मशहूर हदीस

है कि, “सबसे बड़ा जिहाद अपने नफ्स पर क़ाबू पाना यानी अपने गुस्से और अपनी ख्वाहिशों (वासनाओं) को जीतना है ।” इसीको यानी अपने नफ्स पर क़ाबू रखने को ही, अरबी ज़बान में और आमतौर पर मुसलिम किताबों में ‘जिहाद अक़बर’ यानी सब से बड़ा जिहाद माना गया है ।

मुसलमानों में आज तक धर्म के इस तरह के कामों, जैसे नमाज़ पढ़ना, रोज़े रखना, दान देना वग़ैरह, में बहुत ज़्यादा वक्त और मेहनत खर्च करने को ‘मुजाहदा’ कहा जाता है ।

जहां तक जिहाद शब्द का क़ुरान के साथ ताल्लुक है नीचे लिखी तीन बातें पूरे यक्कीन के साथ कही जा सकती हैं—

(१) क़ुरान में जिहाद शब्द जगह जगह ऐसे मौकों पर आया है जहां हथियार उठाने या लड़ने से किसी तरह का कोई वास्ता नहीं है, और धर्म के मामले में हर जायज़ कोशिश को जिहाद कहा गया है ।

(२) सारं क़ुरान में किसी एक ऐसी जगह भी जहां साफ़ साफ़ मतलब सिर्फ़ लड़ने या हथियार उठाने से हो ‘जिहाद’ शब्द को इस्तेमाल नहीं किया गया ।

(३) ख़ास हालतों में क़ुरान के अन्दर अपने धर्म की हिफ़्ज़त के लिये हथियार उठाने या लड़ने की इजाज़त भी दी गई है । लेकिन जहाँ कहीं इसका ज़िक्र आया है वहां ‘जिहाद’ शब्द इस्तेमाल नहीं किया गया, बल्कि सिर्फ़ ‘क़ेताल’ शब्द

इस्तेमाल किया गया है (२-१६० से १६५, २१६; ४-७४, ७५, ८४, ८०, ८४; ६१-४)* ।

आक़ेबत, आख़ेरत, जन्नत और जहन्नम

आक़ेबत और आख़ेरत—यह दोनों शब्द कुरान में जगह जगह मरने के बाद की ज़िन्दगी यानी परलोक के मानों में भी आए हैं और आदमी के अच्छे बुरे कामों के नतीजों के माने में भी आए हैं। कई जगह ‘आक़ेबत’ शब्द इसी ज़िन्दगी के अन्दर आदमी के अच्छे और बुरे कामों के अच्छे और बुरे नतीजों के माने में भी आया है (१०-७३) ।

जन्नत (स्वर्ग) और जहन्नम (दोज़ख़ या नरक) इन दोनों का भी कुरान में बहुत जगह ज़िक्र आता है। मुसलमान आलिमों की राय इस बारे में अलग अलग है कि जन्नत में या जहन्नम में रूह हमेशा के लिए रहती है या सिर्फ़ कुछ खास वक्त के लिए। लेकिन बहुत से बड़े बड़े आलिम यही कहते हैं कि—

“किसी रूह के हमेशा तक दोज़ख़ में रहने का ख़याल कुरान के खिलाफ़ है^१ ।”

मुहम्मद साहब की इस तरह की हदीसें भी हैं जैसे—

इस मज़मून पर मौलवी चिराग़ अब्दी की किताब “जिहाद” और मौलाना अबुल कलाम आज़ाद की किताब “अबल जिहाद फ़िज इसलाम” ख़ासतौर पर देखने के क़ाबिल हैं ।

1—The Holy Quran by Mohammad Ali, p. 472-73.

“सचमुच एक दिन आवेगा जब कोई आदमी दोस्त के अन्दर न रह जावेगा ।”^२

कुरान की कुछ आयतों से यह भी मालूम होता है कि कुरान के अन्दर जन्नत और जहन्नम के खयाल आदमियों के अच्छे और बुरे कामों के नतीजों को साफ साफ दिखाने के लिए सिर्फ एक ‘तशबीह’, मिसाल या अलंकार के तौर पर हैं । (१४-२४, २५, २६)

ऊपर की इन आयतों का जिक्र करते हुए मौलवी मुहम्मद अली ने लिखा है कि—

“इससे हमें इसलामी जन्नत की असलीयत का पता चलता है । हर नेक बात या हर नेक काम एक अच्छे दरख्त की तरह है जो हर मौसम में फल देता रहता है । यानी जन्नत में आदमी को जो फल मिलेंगे और जो हर वक्त उसकी पहुँच में रहेंगे, वह आदमी के अपने नेक कामों के नतीजों के सिवा और कोई चीज नहीं है । जन्नत के दरख्त असल में आदमी के अपने नेक काम हैं जो दरख्तों की तरह इस ज़िन्दगी के नेक कामों के रूहानी नतीजों की शकल में फल देते रहते हैं । यह भी खयाल रखना चाहिये कि कुरान पाक में जब कि नेक कामों की मिसाल फलदार दरख्तों से दी गई है, ईमान यानी धार्मिक विश्वास की मिसाल बार बार पानी या नहरों से दी गई है । हमारी जिम्हानी ज़िन्दगी पानी ही से निकली है और उसी से कायम है । इसलिए कुरान में जब कि नेक आदमियों के लिए हमेशा यह

कहा गया है कि वे ईमान लाते हैं और नेकी करते हैं, जन्नत को हमेशा इस तरह बयान किया गया है कि वह 'एक बाग़ है जिसमें नहरें बहती हैं।' यहाँ नहरों से मतलब ईमान यानी विश्वास से है और बाग़ के दरख्तों से मतलब आदमी के नेक कामों से।^{*}

कुरान की ४७वीं सूरत यानी सूरत 'मुहम्मद' में जहाँ जन्नत के अन्दर तरह तरह की नहरों और हर तरह के फलों का और जहन्नम के अन्दर खोलते हुए पानी का जिक्र किया गया है, वहाँ भी इस सब को सिर्फ "मसल" यानी मिमाल बताया गया है। (४७-१५)

कहीं कहीं उन दुखों को जिन्हें लोग इस दुनिया के अन्दर बुरे कामों के फल की शकलों में भोग चुके हैं जहन्नम की आग बताया गया है (४०-६)।

कई जगह नेक कामों के बदले में इसी दुनिया के बागों वगैरह को 'जन्नत' नाम दिया गया है (५५-४६)। मुहम्मद साहब की एक मशहूर हदीस है जिसमें उन्होंने मिस्र, इराक़ और ईरान के दरियाओं को 'जन्नत की नहरें' कहा है।†

जन्नत के साथ 'हूर' का लफ़्ज़ भी कुरान में कम से कम चार जगह आया है। हूर शब्द 'अहवर' पुल्लिङ्ग यानी मुजकर और 'हौरा' स्त्रीलिङ्ग यानी मुअन्नस दोनों की जमा (बहुवचन) है, और मर्द और औरत दोनों के लिए आता है। जन्नत का

* The Holy Quran, p. 517, Note.

† मुसखिम, जिल्द २, सफ़ा ३२१

वादा-भी कुरान में नेक मर्दों और नेक औरतों दोनों के लिए एक ही तरह किया गया है। जिन शब्दों में कई जगह हूरों का बयान है उनसे मालूम होता है कि दुनियावी रुवाहिशों या वासनाओं के साथ हूर लफ़्ज़ का कोई वास्ता नहीं है। (४४-५४; ३७-४८; ५६-३६)

“ज़ाहिरा देखने में हूर शब्द से जो एक औरत का बयान मालूम होता है, वह असल में इस ज़िन्दगी के कामों के नतीजों का बयान है। जो लफ़्ज़ काम में लाए गये हैं वे दोनों तरफ़ लग सकते हैं। ये रुहानी बरकतें हैं जिन्हें मोटे जिस्मानी ढंग से दिखाया गया है। कुरान में कहीं भी यह नहीं लिखा कि मौत के बाद की ज़िन्दगी यानी परलोक में मर्द औरत का इसी तरह ताल्लुक रहता है। जिन बरकतों (अच्छी चीज़ों का वादा किया गया है, वह और चाहे कुछ भी हो या न हों मर्दों और औरतों दोनों के लिए एक बराबर हैं। उनकी बाबत पक्की बात सिर्फ़ यही कही जा सकती है कि इस ज़िन्दगी के जिस्मानी सुखों से उनका कोई वास्ता नहीं, दोनों चीज़ें दो बिल्कुल अलग अलग तरह की चीज़ें हैं।”*

मुहम्मद साहब को एक हदीस है—

“अल्लाह कहता है कि अपने नेक बन्दों के लिए अल्लाह ने जो नेक फल तय्यार कर रखे हैं उनका न इन आखों के देखने से कोई ताल्लुक है, न इन कानों के सुनने से, और न इनसानी दिल या दिमाग़ के किसी अहसास, अनुभव या कल्पना से।” (बुख़ारी)

कुरान को गौरसे पढ़ने पर कम से कम एक राय यह खरूर हो सकती है और इसके लिए काफ़ा गुंजाइश है कि कुरान के अन्दर जन्नत और जहन्नम के खयाल मिर्क़ मिसाल के तौर पर हैं और जिस्मानी सुख दुःख के साथ उनका कोई वास्ता नहीं है ।

जन्नत के माइने अरबी में 'बाग़' यानी 'आराम का जगह' है और 'जहन्नम' यरुसलम के पास का वह मोहल्ला था जहां किसान ज़माने में आग की पूजा करने वाले रहा करते थे । 'जहन्नम' का मतलब 'आग' या 'तकलीफ़ की जगह' है । 'दोज़ख़' फ़ारसी शब्द है जिसका वही निकास है जो संस्कृत 'दुःख का' फ़ारसी शब्द 'फ़िरदौस' अंगरेज़ी 'पैरेडाइज़' और संस्कृत 'प्रादेश्य' एक ही शब्द हैं । पुराने ईरानी अपने शहर से बाहर के बाग़ों को 'प्रादेश्य' या 'परदौस' कहा करते थे । उसी से 'फ़िरदौस' और 'पैरेडाइज़' बने ।

